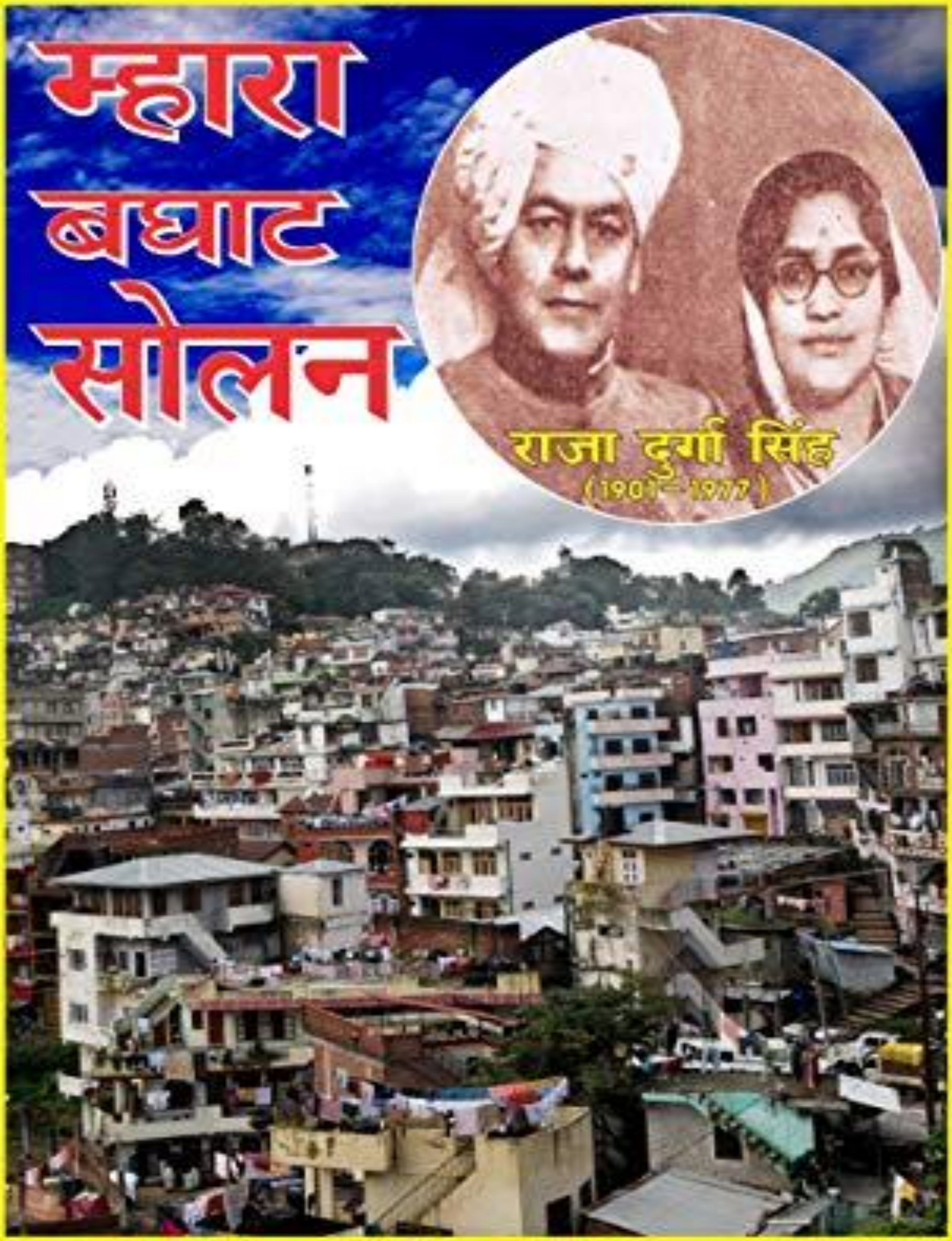
म्हारा बघाट सोलन



बघाटी (बारह घाटी) सामाजिक संस्था – सोलन
जिला सोलन, हिमाचल प्रदेश

` ` जय माँ शूलिनी ' '

म्हारा बघाट सोलन

द्वितीय संस्करण
15 सितम्बर, 2019 को 119-वीं जयन्ती पर विशेष,

राजा दुर्गा सिंह
1901-1977
बघाटी (बारह घाटी) सामाजिक संस्था-सोलन,
जिला सोलन, 'गौरवमय हिमाचल प्रदेश'

संरक्षक : श्री मोहन लाल ठाकुर

न्यून्तम सहयोग राशि : 300/- रूपये

नन्दी प्रकाशन,
(यादविन्द्र सिंह चैहान, कमल जीत सिंह चैहान)
नन्दी ग्राम, सबाथू रोड, धर्मपुर, 173209 (के.एस.आर.)
जिला सोलन (हि.प्र.)
डिजाईनिंग:
हरिः इलैक्ट्रो कम्प्यूटर्स
विपरीत डॉ. गंगाराम, दी माल सोलन (हि.प्र.) 173212
फोन: 01792-222228, 98050-22028 (मो.)

।। अनमोल जीवन को सार्थकता देने में सहायक एक सांझा प्रयास ।।
म्हारा बघाट सोलन

सम्पादक
डाॅ. लेखराम शर्मा (दर्शनाचार्य)

संकलनकर्ता
श्री शिव सिंह चैहान
नन्दी प्रकाशन,
नन्दी ग्राम, सबाथू रोड, धर्मपुर, 173209
(के.एस.आर.) जिला सोलन, (हि.प्र.)
।। लेखन कला का गोमुख लेखक की निर्मल आत्मा है ।।

` ` अनुक्रमणिका {पृष्ठ संख्या केवल मुद्रित पुस्तक पर लागू} ’ ’

।। पुस्तक का प्रकाश वस्तुओं पर पड़ता है ।।

{सी. आई. ई. सोलन}

श्री 108 बघाट-नरेश
राजा साहिब श्री दुर्गासिंह जी को सादर

''श्रद्धांजलि''

बघाटी (बारह घाटी) सामाजिक संस्था सोलन अध्यक्ष डॉ. लेख राम शर्मा एवं कार्यकारिणी व सदस्यों द्वारा
15 सितम्बर, 2019 राजा दुर्गा सिंह जी
की जयन्ती पर उन्हें सादर नमनः

प्रस्तावना (बघाटी पहाड़ी बोली में लेख)

''बघाटि सामाजिक संस्था रा उद्देश्य अरो उपलब्धी''
(संस्था री गतिविधि रि रूपरेखा)
वंदे शूलिनी मातरम्।
वंदे बघाट भूमिमातरम्।।

बघाट भूमि खे हामा सबी बघाटवासी रा सादर प्रणाम। बघाट भूमि हामा सबीरि पूज्या माँ असो। हामे ईन्दे जाय रोए, पलनि लग रोए अरो यही म्हारि अंतिम शरण असो। इयां मा रि सेवा म्हारा परम धर्म असो। इयां री परंपरा रि रक्षा अरो सेवा म्हारा परम कर्त्तव्य असो। प्रसन्न मा ही म्हारा योग-क्षेम वहन कर सको। एस ही उद्देश्य री खातर हामे तूमे सबिए मिल रो बघाटि सामाजिक संस्था रा निर्माण कर राखा। आज इयां पंजीकृत संस्था रा हामे सातवाँ वार्षिक सम्मेलन मनावणि लग रोए। एते रा आरम्भ हामें बघाट राज्येश्वरी शूलिनी माता रा पूजन अरो बघाटा रे आदर्श राजे दुर्गासिंहा खे माल्यार्पण कर रो किया। एस मौके पांएं हामे आपणे पूर्वजा खे सांस्कृतिक श्रद्धांजलि अर्पित करू जीना रे प्रतापे हामे सब खुशहाल असू।

म्हारी संस्था रि सबी दे बड़ि उपलब्धि तो इ असो जे हामे लोकतान्त्रिक विधि साय काम करू। दुजि उपलब्धि इ असो जे हामे केवल तेसरा सहयोग प्राप्त करू जो आपणी खुशी साय आपणी जन्म भूमि रा आदर करो। कसदे कुछ मांगदे नी आथि ना ही कस पांए कोई जोर जब्रि आथि। बगाटि जीवन शैली पाँएं आधारित 'म्हारा बघाट' रा परिवर्धित संस्करण म्हारि छपणि खे तैयार असो। एस बारी सहयोग रूपा माँए माननीय मोहन लाल जी बनाले भण्डारा यज्ञ दे राखा। बघाटि संस्कृति री सेवा री खातर राष्ट्रपतिसम्मानित बघाटि संगीत कलाकार श्री जियालाल ठाकुर जी खे सम्मानित कर रो हामे कृतकृत्य असू। म्हारी संस्था रे तत्त्वावधाना माँएं हर साल

कांडे रे गाटा स्वर्गीय प्रसिद्ध संगीतकलाकार श्री काकुरामा रि जयन्ति मनाइ जाओ। कोठो पंचायति रे एकी नौजवाने म्हारी संस्था रे तत्त्वावधाना माँए एक मेला करनि रा प्रस्ताव राख राखा जो विचाराधीन असो।

म्हारे देशा रि संस्कृति संस्कृत भाषा पाँए आधारित असो अरो बगाटि बोलि संस्कृता दे उपजि शौरसेनी अपभ्रंश भाषा पांए आधारित असो। म्हारे राजे दुर्गासिंहे बगाटि या प्हाड़ि भाषा रो संस्कृति रे संरक्षणा री खातर हिमाचल प्रदेश रे गठना रि नींव राखि थि। एनी री खातर से आपणे दरबारा माँए बगाटि शब्दज्ञाना री खातर बालप्रतियोगिता रा आयोजन करया करो थे। बगाटि बोलि पश्चिमी प्हाड़ि बोली रा एक रूप असो। बगाटा री स्थानीय बोली साय संपर्क होय रो शौरसेनी अपभ्रंश भाषा बगाटि बोलि बण गोई। म्हारी बोली मांए अपेक्षाकृत स्वर जादे असो।

मा रे पेटा दे निकलदे ही बच्चा माँ बोलो। आदमि जिन्दगी रे संकटा माँएं बि माँ अरो प्राण छाडदे बि माँ बोलो। एकी प्राकृतिक आपदा माँएं एक सरकारि अधिकारि घटना स्थला पाँए पौंचा अरो तिणिए जनता दे अकाल पड़नि रि बात शुण रो तीना दे पूछा जे त्हारी आपणी बोली माँए अकाल शब्दा खे का बोली। से नी बताय सके तो अधिकारिए बोला जे त्हारे अकाल पड़ा आंेदा तो त्हारे मुँआं दे तुरन्त ही आपणा शब्द निकलना था। क्योंकि से निकला ही नी तो त्हारे इलाके माँए अकाल बि नी पड़ रोआ। मतलब शब्दा रे प्रभाव एतणे गहरे ओ।

म्हारे पूर्वजा रि म्हारी सांस्कृतिक जीवन शैली माँए बड़ि मेहनत, योगदान, प्रेमभाव अरो आशीर्वाद असो। इयां ही बजा साए हामे तीना रा पारंपरिक श्राद्ध करू। आजकाले आदमि छोटी छोटी बाता पांए कानुनि शक्ति रा प्रदर्शन करनि लग गोए जनी साए से बर्बाद लग रोए ओणि। बघाटी परम्परा माँए छोटे छोटे विवाद गरे बेठ रो विश्वासपात्र ठगड़े दे करवाए जाओ थे। हामा खे से रास्ता कबे नी छाडणा चेंईं।

।। जय बघाट जय सोलन ।।
।। पाठक लेखक के लिए भगवान् का रूप होता है।।

सम्पादकीय

जय बघाटेश्वरी माँ शूलिनी। जगन्माता की अपार कृपा से 'म्हारा बघाट' का यह परिवर्धित संस्करण आपकी सेवा में निवेदित है। लेखन वास्तव में आत्मा की लिपि है। प्रस्तुत रचना हमारे आत्मीय विद्वान् लेखकों के अमूल्य योगदानों का सुमधुर फल है। हमारी संस्था ने मुझ पर अल्पज्ञ पर संपादन की जिम्मेदारी डाली है। हर रचनाकार के प्रकटनीय आत्म भाव का यथारूप समझना मेरे वश की बात नहीं है। भाषीय शब्दों के संशोधन सम्बन्धी जानकारी की भी मेरी अपनी एक सीमा है। यथाशक्ति प्रयास करने के बाद भी कोई दोष शेष रह गया हो तो मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

एक बात और है, बघाटी संस्कृति हमारे वेदों की तरह सारगर्भित है। जिस तरह वेद मानवजगत् में गहराई तक समाए हुए हैं। वैसे ही बघाटी संस्कृति भी हम सबके जीवन में गहराई तक समाई हुई है। सोलन, बघाट, हिमालय, देश की मानवता से जुड़ी हुई रचनाएं इस पुस्तक में समाहित की गई हैं। बघाट या सोलन मात्र एक भूखंड नहीं बल्कि एक विशाल वैश्विक सोच है। हमारी संस्था आप सभी रचनाकारों, पाठकों और बघाट प्रेमियों का हमारा पग पग पर साथ देने के लिए हृदय से अभारी है। इस अपेक्षा के साथ कि आप पूर्व की तरह सदैव हमारा उत्साह बढ़ाते रहेंगे।

डॉ. लेखराम शर्मा
बघाटी सामाजिक संस्था, सोलन

।। सम्पादन का मतलब है लेखक के प्रति आदर भाव ।।

स्वतन्त्रता आन्दोलन और सोलन जनपद

स्वतन्त्रता के ऐतिहासिक पृष्ठों में हिमाचल प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानियों को भी सम्मान जनक स्थान मिला। 1857 कसौली सैनिक विद्रोह से लेकर 1947 तक प्रदेश के दीवानों ने भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में अपने को आहुत किया।

पूर्ण राज्यत्व से पुरस्कृत हो कर 12 जिलों में सोलन जनपद को अपने जिले के अस्तित्व का गौरव प्राप्त हुआ। हिमाचल प्रदेश के सभी जिलों की तुलना में जिला सोलन की भूमिका स्वतन्त्रता संग्राम में किसी से कम नहीं रही। सोलन जनपद के देश प्रेमियों ने स्वतन्त्रता के लिए जो कहानी संचित की उसे क्रमशः चार भागों में सार गर्भित रूप से संजोया जा सकता है:-

क) स्वतन्त्रता आन्दोलन के दीवाने
ख) आजाद हिन्द फौज के दीवाने
ग) प्रजामण्डल के कर्मठ कार्यकर्ता तथा
घ) धामी गोली काण्ड के ऐतिहासिक क्रान्तिकारी

क) स्वतन्त्रता आन्दोलन के दीवाने:

अर्की के भूतपूर्वक विधायक केशव राम, डाण्डी यात्रा में बापू के साथ गांव मांधना के जयन्ती राम, कोटला के चन्दूलाल, पट्टा महलोग के ठाकुर दास, नालागढ़ बिलावली गांव के दौलतु राम, कण्डाघाट वाले बूटा राम सरदार भगत सिंह के साथ आन्दोलन में रहे, मानपुरा के भगवान सिंह, धरेला गांव के शिवराम, भारत छोड़ों आन्दोलन में सलोगड़ा-हरठ गांव के रामदास चैहान व रिछाणा गांव (कण्डाघाट) के विष्णुदत्त शर्मा की सक्रिय भागीदारी, चण्डी गांव के सीता राम, ताम्रपत्र सम्मानित सोलन के हीरा लाल कौसर की सोलन, मुलतान और लाहौर में भागीदारी, अर्की-डोमेहर क्षेत्र के हीरा सिंह पाल की आॅल इण्डिया स्टेट-पीपल्ज कान्फ्रेंस में भूमिका, शिमला-जतोग में सैनिक विद्रोह के समय सुबाथू के राम प्रसाद विसमिल की गुप्त संगठन में जान हथेली पर रख कर भागीदारी के अतिरिक्त स्वतन्त्रता संग्राम के अन्य कर्मठ सेनानियों ने जिस इतिहास को संजोया उसके लिए उन्हें न केवल तद्‌युगीन राजाओं के नृसंश अत्याचार, जेल यातनाएं, कठोर दण्ड ही भोगने नहीं अपितु ब्रिटिश साम्राज्य के आक्रोश को भी झेलना पड़ा और स्वतन्त्रता प्राप्ति के निमित्त अपने जीवन के अमूल्य क्षणों को स्वतन्त्रता आन्दोलन को समर्पित कर के भारत में दूध की लाज रखकर भारत मां के सपूत कहलाए।

ख) आज़ाद हिन्द के परवाने:

स्वतन्त्रता संग्राम में आज़ाद हिन्द फ़ौज की उत्कृष्ट सेवाएं आज भी स्मरणीय हैं। भारत वर्ष ही नहीं अपितु विदेश में सिंगापुर, मलाया, जापान, रंगून, वर्मा आदि आज़ाद-हिन्द फौज के कर्मठ क्षेत्र रहे। आज़ाद हिन्द फौज के जन्मदाता नेता जी सुभाष चन्द्र बोस का कथन था कि ''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा'' नेता जी के इन्हीं प्रेरणादायक शब्दों से आज़ादी के परवानों को स्वतन्त्रता संग्राम में प्राण न्योछावर करने की प्रेरणा मिली।

सोलन जनपद के आज़ादी के परवानों का उल्लेख करते हुए हिमाचल प्रदेश आज भी गर्वोन्नत है। नालागढ़ गांव दमोट के अमर सिंह, बहादुरगढ़, इटली तथा फ्रांस की जेल में यातनाएं झेलने वाले कसौली के अर्जुन सिंह ताम्रपत्र सम्मानित, मुलतान जेल में 17 वर्षीय अल्पायु में यातनाएं भोगने वाला बालक गुणाह रामशहर के स्व. काली राम, किश्नपुरा नालागढ़ के चानन सिंह, सोलन कुमारहट्टी के झणको राम थाईलैण्ड में युद्ध बन्दी कैदी, वीलावाली भवाणा गांव के दौलत राम, डेढ़ वर्षीय कठिन कारावास भोगी नालागढ़ जगपुरा निवासी दौलसिंह, कुनिहार शहबार के निवासी कप्तान निकुराम अधिकांश सेवाएं गोपनीय तौर पर भारत से बाहर और युद्ध बन्दी रहने वाले, ब्रिटिश दमनचक्र के शिकार धर्मपुर धाणा गांव के भगत राम की मलाया में महत्वपूर्ण भूमिका, नालागढ़ के थाण निवासी भगत राम, आसाम बंगाल जेल में बन्दी ही नहीं अपितु कटक और कलकता जेल की यातनाएं सहने वाले, ताम्रपत्र सम्मानित, ब्रिटिश सरकार द्वारा आसाम-चिट गांव में कारावास भोगने वाले गांव शीरा भोटली के मंगल, थापल कुसरी गांव के मनसा राम व घोषित भगौड़े मिलखी राम, बोली गांव के युद्ध बन्दी रोडू राम, ब्रिटिश सरकार द्वारा घोषित देशद्रोही कुण्डलू गांव के शिवराम, दिमनी लाल किले में कारावास भोगी बड़ू गांव के संत राम तथा गोयला जमाणा के संत राम जो सिंगापुर, मलाया, रंगून तथा बर्मा में सक्रिय रहे।

इन के अतिरिक्त अनेकों आज़ादी के परवानों ने आज़ाद हिन्द फौज के स्वर्णिम इतिहास को निःसन्देह अपने लहु से सिंचित किया।

ग) प्रजा मण्डल के कर्मठ कार्यकर्ता:

एक ओर स्वतन्त्रता संग्राम में सोलन जनपद के वीर सपूतों का योगदान तो दूसरी ओर हिमाचल प्रदेश के लिए कथित राजाओं के नृशंस अत्याचारों के चंगुल से छुटकारा प्राप्त करने के लिए स्वाधीनता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका। प्रायः अमुक स्वाधीनता संग्राम के लिए प्रत्यक्ष या परोक्ष में कर्मठ नेताओं द्वारा प्रजामण्डल के माध्यम से राजाओं के प्रशासन के तख्ता पलटने के प्रयत्न अपनी कहानी आप कहते हैं।

प्रजामण्डल के प्रभावी क्रान्ति आन्दोलन में सोलन जनपद के कर्मठ कार्यकर्ताओं के स्वर्णिम प्रयत्न आज भी प्रदेश के लिए गौरव का विषय है। पट्टा, महलोग, सोलन, कुनिहार तथा निकटवर्ती क्षेत्रों में प्रजामण्डल की गतिविधियों के सुचारू संचालन के जिन नेताओं ने हिमाचल प्रदेश के स्वाधीनता संग्राम में अपने को समर्पित किया उन विभूतियों का सारगर्भित, सांकेतिक एवं सूक्ष्म परिचय इस प्रकार है-निचले वथालंग पौहड़ी निवासी के उगरू राम, भगोटा नालागढ़ के गंगा राम, निचली पोर अर्की के गुसाऊं राम की धामी गोली काण्ड में संलिप्तता, कोटल चण्डी निवासी चन्दी लाल, राजा महलनोग के विरूद्ध षड़यन्त्र के सक्रिय भागीदार पट्टा महलोग के ठाकुर दास, प्रजामण्डल सहयोगी दयाराम दयोरा की धामी गोली काण्ड में भागीदारी, राबड़ी के मन्शा राम चैहान द्वारा क्रान्तिकारी दल बनाने की घोषणा, चईंया गांव के नारायण दास और धामी गोली काण्ड ताम्रपत्र सम्मानित पलोग गांव के पद्म सिंह की भज्जी, धामी, सुकेत, अर्की आदि सत्याग्रहों में भागीदारी, अर्की प्रजा मण्डल के प्रधान एवं क्रान्तिकारी दल के मूल नायक मन्शा राम चैहान जिनको धामी गोली काण्ड, भज्जी डकैती में राजाओं के विरूद्ध षड़यन्त्रों की गतिविधियों को सक्रियता प्रदान करने वाले चरौल गांव के शिशरू राम और धामी गोली काण्ड, प्रजामण्डल के प्रधान सचिव सोलन के हीरालाल कौसर जिन्हें विशिष्ट सेवाओं के लिए ताम्रपत्र सम्मान मिला तथा खनोल गांव कुनिहार निवासी भूतपूर्व विकास मन्त्री ठाकुर हरिदास प्रजामण्डल सचिव जो हिन्दु-मुसलमान दंगों को रोकने तथा प्रजामण्डल को सशक्त बनाने में चर्चित रहे।

उपरोक्त विभूतियों ने राजाओं के नृसंश अत्याचारों को झेला, यातनाएं सही, कठोर कारावास भोगे और हिमाचल प्रदेश के स्वाधीनता संग्राम की सफलता का गौरव प्राप्त किया जिससे 15 अप्रैल, 1948 को हिमाचल प्रदेश मानचित्र पर उभर कर सामने आया।

घ) धामी गोली काण्ड के ऐतिहासिक क्रान्तिकारी:

हिमाचल प्रदेश के समूचे स्वाधीनता संग्राम का श्रेय धामी गोली काण्ड को ही स्वीकारा जाता है। चम्बा, मण्डी, सुकेत आन्दोलनों के अतिरिक्त धामी गोली काण्ड क्रान्ति ही राजनैतिक जनजागरण का प्रतीक रही। धामी गोली काण्ड के पीछे, बाजार बन्द करना, लगान में कमी करना तथा प्रजामण्डल को मान्यता देना आदि घटनाओं ने ही धामी गोली काण्ड को जन्म दिया। प्रजामण्डल के नेतृत्व में मांगों को पूरा करने के लिए भागमल सोठा के नेतृत्व में आन्दोलन, संक्रान्ति के पुनीत अवसर पर धामी के राणा द्वारा गोली काण्ड, गोली काण्ड में पण्डित उमादत्त और दुर्गादत्त की शहादत, सीता राम, कान्हा सिंह सोठा, भास्करानन्द, राजकुमारी अमृतकौर के नेतृत्व में महात्मा गांधी से मिले।

नेहरू से सम्पर्क साधा और धामी गोली काण्ड की न्यायिक जांच की मांग की। सोलन जनपद के जिन आन्दोलनकारियों ने धामी गोली काण्ड में भाग लिया उनमें निचली पोर अर्की के गोसाऊं राम, देओरा गांव के दया राम, जाबली निवासी देवी राम, शील गांव के नरोत्तम दास, जाब्बल निवासी भजनू, राबड़ी अर्की के मन्शा राम चैहान, बखालंग गांव के रेवा शंकर, अर्की के शिंगरू राम, बलाणियां गांव के शिव राम तथा चण्डी गांव के सीता राम की प्रमुख भागीदारी रही। अमुक सभी आन्दोलनकारियों को सख्त कारावास, भारी जुर्माने, देश निकाला, भूमि जाती जैसी अनेकों सजाएं राजाओं के अत्याचारों की झेलनी पड़ी। परन्तु हिमाचल प्रदेश के नव-निर्माण में स्वाधीनता के इन परवानों ने स्वर्णिम इतिहास के पृष्ठों को अंकित किया।

यह कहना यहां अतिशयोक्ति नहीं होगी कि वहीं से सोलन जनपद के स्वतन्त्रता एवं स्वाधीनता क्रान्ति के दीवानों ने धन, वचन एवं कर्म की निष्ठा से अपने को मातृभूमि को समर्पित किया। इन्हीं के सार्थक प्रयत्नों का श्रेय है कि आज हिमाचल प्रदेश भारत के मानचित्र पर अखिल विश्व शान्ति का प्रतीक बन कर स्वर्णिम आशा लिए भारत माता के मुकुट में हीरे की तरह चमक रहा है। भारत वर्ष के जनमन को आज अपनी ऐतिहासिक विभूतियों पर अनूठा गर्व है।

।। बिना मूल्य चुकाए स्वतन्त्रता नहीं मिलती ।।

यह है अपना सोलन

सोलन हिमाचल की गोद में बसा वो पर्वतीय नगर है जिसे प्रकृति ने अपार सौन्दर्य से समृद्ध किया है। नगर के नामकरण की धार्मिक पृष्ठभूमि ''सोलिनी देवी'' जोकि यहां के शासकों की आराध्य देवी थी, के सुप्रसिद्ध मन्दिर की स्थापना यहां हुई तथा इसी देवी के नाम पर सोलन का नाम रखा गया।

आज यह नगर भले ही हिमाचल प्रदेश के विकसित व आधुनिक नगरों में अग्रणी है लेकिन यह अपने आप में एक प्राचीन, सांस्कृतिक व ऐतिहासिक धरोहर संजोए हुए है।

सोलन नगर बघाट रियासत की राजधानी हुआ करता था। बिजलीदेव नाम के शासक ने इस रियासत की नींव रखी। 36 मील क्षेत्र में फैली इस रियासत पर राणा मोहिन्दर सिंह के शासन के दौरान सोलन नगर पर अंग्रेजों का कब्जा हुआ। इस दौरान सोलन नगर में ब्रिटिश सैन्य बलों के लिए छावनी की स्थापना भी की गई जिसका स्थानान्तरण बाद में बोहच में कर दिया गया लेकिन कुछ ही समय बाद राणा मोहिन्दर सिंह के भाई राणा विजय सिंह ने रियासत की बागडोर अपने हाथ में ले ली। दुर्गा सिंह इस रियासत के आखिरी शासक थे। वह एक सफल, लोकप्रिय, धार्मिक तथा समाज सुधारक शासक के तौर पर भी जाने जाते हैं।

एक सितम्बर, 1972 में बघाट, बाघल, कुनिहार, महलोग, बैजा, कुठाड़ व हण्डूर रियासतों के समन्वय से सोलन जिला अस्तित्व में आया। अस्तित्व में आने से पूर्व यह महासू जिले का एक हिस्सा हुआ करता था।

जिले का दर्जा प्राप्त करने के बाद न केवल इस नगर का महत्व बढ़ा बल्कि इसके विकास को भी नई गति मिली। हिमाचल प्रदेश के प्रवेश द्वार माने जाने वाले इस जिले के मुख्यालय को स्वास्थ्य, शैक्षणिक, विद्युतिकरण, औद्योगिक तथा सभी नवीनतम सुविधाएं प्रदान की गई।

पांच हजार फुट की ऊंचाई पर स्थित यह नगर कालका-शिमला राजमार्ग पर पड़ता है। यहां का प्राकृतिक सौन्दर्य, सुख-सुविधा, अनुकूल जलवायु, पर्वतीय प्रदेश होते हुए भी कम चढ़ाई-उतराई तथा आवागमन की सभी सुविधाओं के कारण सेना व प्रशासनिक सेवाओं आदि से सेवानिवृत्त परिवारों के बसने से यहां की संस्कृति को एक अलग ही रंग मिला है। यहां स्थापित उद्योगों व इस तरह की अन्य गतिविधियों के कारण यहां काफी समृद्धि भी आई है। इन सभी विशेषताओं के कारण सोलन तथा इसके आसपास के क्षेत्र जैसे चायल, कसौली, बड़ोग, जाबली आदि पर्यटकों के आकर्षण के केन्द्र बिन्दु हैं। कुल मिलाकर सोलन आज हिमाचल के विकसित व आधुनिक नगरों में अग्रणी है।

।। सोलन की माटी में सम्पूर्ण भारत की सुगन्ध है ।।

110 साल पुराना है चायल स्कूल का इतिहास

कण्डाघाट उपमण्डल मुख्यालय से 29 किलोमीटर दूर पर्यटन नगरी चायल स्थित स्कूल 110 साल पुराना है और संभवतः जिला सोलन का सबसे पहला स्कूल। चायल समुद्र तल से 2444 मीटर की ऊंचाई पर महाराजा पटियाला द्वारा बसाया गया था। सन् 1893 में सर्व प्रथम क्रिकेट ग्राऊंड का निर्माण किया गया। चायल पटियाला रियासत की ग्रीष्मकाल की राजधानी हुआ करती थी। युद्ध के समय (जब पटियाला से छः मास के लिए सारे कार्यालय, अधिकारी व फौज चायल आते थे) अधिकारियों को अपने बच्चों को पढ़ाने में दिक्कत आती थी। चायल में कोई स्कूल होता नहीं था। इस कारण से महाराज की स्वीकृति से एक सोसाइटी गठित की गई। सोसायटी ने सन् 1905 में भूपेन्द्रा कोरिनेशन नाम से एक प्राथमिक स्कूल खोला। इस स्कूल में बड़े बड़े अधिकारियों के बच्चे ही पढ़ा करते थे और यह स्कूल वर्तमान चायल बाजार में हुआ करता था। यह बात याद रखने योग्य है कि उस समय चायल पटियाला रियासत के जिला कण्डाघाट के तहत आता था।

सन् 1912 में चायल से एक किलोमीटर दूर मिहाणी गांव के समीप एक अंग्रेज अधिकारी सी.एच. एटकीन ने स्कूल भवन की आधारशिला रखी और भवन तैयार होने पर प्राथमिक स्कूल को चायल बाजार से इस स्कूल भवन में परिवर्तित किया गया। इकतीस साल प्राथमिक स्कूल रहने के बाद सन् 1936 में स्कूल का दर्जा बढ़ाकर इसे लोअर मिडल किया गया और अब छठी व सातवीं कक्षाओं को भी इसी स्कूल में पढ़ाया जाने लगा। छह साल तक लोअर मिडल रहने के बाद सन् 1942 में स्कूल का दर्जा मिडल किया गया। इस दौरान आस पास के गांवों से महत्वपूर्ण लोगों के इक्का दुक्का बच्चे भी स्कूल में पढ़ने आने लग गए थे। चैदह साल तक मिडल स्कूल रहने के बाद आजाद भारत में स्कूल का पहली बारी दर्जा बढ़ाया गया और सन् 1956 में इसे उच्च स्तर का किया गया। अठतीस साल उच्च स्तर का स्कूल रहने के बाद सन् 1994 में इसका दर्जा बढ़ाकर वरिष्ठ माध्यमिक स्तर का किया गया। सन् 1975 तक यह स्कूल सोलन, शिमला और सिरमौर जिलों की 40 ग्राम पंचायतों के लोगों को उच्च स्तर की शिक्षा देने का कार्य करता रहा है। वर्तमान समय में यह स्कूल जिला सोलन तथा शिमला की नौ ग्राम पंचायतों को उच्च तथा 15 ग्राम पंचायतों के लोगों को वरिष्ठ माध्यमिकस्तर की शिक्षा देने का कार्य कर रहा है।

इस स्कूल ने समाज के लिए अच्छे नेता, शिक्षक, डाक्टर, किसान, लेखक तथा समाज सेवक दिए हैं। जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्रों में नाम कमाया है और स्कूल का नाम भी ऊंचा किया है। खेलों के क्षेत्र में इस स्कूल के खिलाड़ियों ने कबड्डी और बालीबाल में राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर खेलों का प्रदर्शन किया है। स्कूल वर्तमान समय में भी शिक्षा, खेल सहित सभी क्षेत्रों में अच्छा कार्य कर रहा है।

।। नया नौ दिन पुराना सौ दिन ।।

भाषाओं का महत्व और पहाड़ी भाषा

हमारे यहां, विभिन्न वर्गो और जातियों की तरह भाषाओं का भी यह दुर्भाग्य रहा है कि उन्हें संविधान की अनुसूची में शामिल किया गया। भाषाओं को भी जातियों की तरह लिया गया। भाषाओं का भी एक शैड्यूल बना। जो चीजें यहां शेड्यूल या अनुसूची में चली, वे फायदे में भी रही, विवादों में भी रही। लेकिन यह भी हुआ कि शेड्यूल शब्द अपना अर्थ बदल कर एक गाली के रूप में प्रयोग में आने लगा। यह एक वर्ग या जाति का सूचक हो गया। भाषा के मामले में आठवें शेड्यूल की भाषाएं तो स्वर्ग हो गई, जो बाहर रह गई, वे अछूत हो गई। किसी भी भाषा को शेड्यूल में डालना राज्य का नहीं, केन्द्र सरकार का विषय है। अतः एक राज्य की भाषा शेड्यूल में शामिल हो गई तो, साथ लगते दूसरे राज्य की बाहर रह गई। इस चुनाव में यह भी हुआ कि जिन्हें संरक्षण चाहिए था, उन्हें नहीं मिल पाया और जो पहले से ही समृद्ध थी, वे शेड्यूल में आकर और इतराने लगी। भाषाओं का मण्डल कमिशन बना। यानि भाषाओं में भेद पैदा हो गया। यह एक बहुत बड़ी विडम्बना है। असल में, ऐसा कोई शैड्यूल होना ही नहीं चाहिए था। सभी भाषाएं फलें, फूलें। सभी को प्रोत्साहन मिले।

देश के संविधान की अनुसूची में बाईस भाषाएं हैं। साहित्य अकादेमी द्वारा कुछ आगे बढ़ कर चैबीस भाषाओं को मान्यता दी गई है। किन्तु साहित्य अकादमी में कुछ ऐसी भाषाओं को भी परोक्ष रूप से मान्यता दी है जो अनुसूची में शामिल नहीं हैं। इनमें भाषाएं हैं। इन भाषाओं में ''भाषा सम्मान'' की स्थापना की गई है। जिसकी राशि पहले पचास हजार थी, अब एक लाख कर दी गई है।

यह वर्ष 1996 की बात है जब अकादमी के अध्यक्ष प्रसिद्ध कन्नड साहित्यकार अन्नमूर्ति थे। उस समय हिमाचल अकादमी की ओर से पहाड़ी को मान्यता देने की बात चली। अकादमी के तत्कालीन उपाध्यक्ष एवं शिक्षा मन्त्री नारायणचंद पराशर के प्रश्रय में हमने प्रयास किए। अकादमी के सचिव के नाते पहाड़ी में प्रकाशित साहित्य की सूचियां ले कर मैंने अकादमी में बात की। प्रो. अन्नमूर्ति को शिमला आमन्त्रित किया। इस के फलस्वरूप 1996 में अकादमी द्वारा दिए जाने वाले प्रथम भाषा सम्मानों में हिमाचली साहित्यकारों के नाम शामिल हुए। अकादमी के तत्कालीन सदस्य पद्मचन्द्र कश्यप और अकादमी सचिव के नाते मैं उस चयन समिति का सदस्य था जिसमें सर्वश्री वंशीराम शर्मा और एम.आर. ठाकुर को प्रथम भाषा सम्मान के लिए चयनित किया गया और इन्हें दिल्ली में 27 अगस्त 1997 को यह सम्मान दिया गया।

पहली बार दिए जाने वाले इन सम्मानों में एक भाषा तुडू थी जो कर्नाटक की एक उपभाषा है और दूसरी पहाड़ी थी। सौभाग्यवश दूसरे भाषा सम्मान की चयन समिति में भी मैं एम.आर. ठाकुर और सी.आर.बी ललित के साथ साहित्य अकादेमी के सदस्य के नाते सदस्य रहा जिसमें सर्वश्री गौतम व्यथित और प्रत्यूष गुलेरी का चयन हुआ। वर्ष 2007 का यह पुरस्कार हाॅलीडे होम शिमला में 2 जुलाई 2011 को अकादेमी के नवनिर्वाचित उपाध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा प्रदान किया गया। पुराने समय में भाषाएं अपने बलबूते पर पनपीं जिनमें मातृभाषा का हमेशा स्थान ऊंचा रहा। यह लोकवाणी भी कही जा सकती है। वाणी का बुनकर कबीर था। जिसमें मसि कागद छुआ नहीं, कलम गहि नहीं हाथ, फिर भी ऐसी वाणी बुनी जो आज तक पुरानी नहीं पड़ी। कबीर ने यदि वाणी को बुना तो तुलसी ने रामनामी चादर बना कर ओढ़ा। सूर ने जिसे कृष्ण भक्ति का रस दे कर चखाया। इन कवियों ने संस्कृत को छोड़ अपनी वाणी में एक नये शिल्प का निर्माण किया। मुस्लिम कवियों ने अली अली गाते हुए भी कृष्ण मुरारी के गीत गाये।

रहीमों राम के झगड़े मिटाएः मन्दिर मस्जिद बुतखाने, कोई ये माने, कोई वे माने, हैं दोनो तेरे मस्ताने। कभी लैला खुदा बन गई तो कभी हीर ने कहा, कनें मुदरां पा के मत्थे तिलक लगा के, मैं जाणा जोगी दे नाल, मैं उस जोगी किस होर न जागी, मैं जाणा जोगी दे नाल, जैसे गीत गाने लगी। हिमाचल में चम्बा के गीत के केवल चार शब्दों का उदाहरण देना चाहूंगा। शब्दों की मितव्ययता का ऐसा उदाहरण कहीं नहीं मिलेगा। गीत के बोल के छः शब्द हैंः ''पखला माह्णूः खौदला पाणी, डर लगदा।'' यानि जिस मनुष्य से आपकी मुलाकात हुई है, वह पखला है, आपके लिए अजनबी है। उस की स्थिति आपके लिए खौदले पानी जैसी है। पानी, जो निर्मल नहीं है मटमैला है। ऐसे मटमैला पानी, जो स्वयं पत्थर फेंक कर या किसी छठी में मैला किया जाता है। खौदल पाणा एक मुहावरा भी है। अजनबी मनुष्य और मटमैला, पानी डर लगता है। यह दो पंक्तियां लम्बी व्याख्या मांगती है।

पहाड़ी भाषा की जब हम बात करते हैं तो इसमें लेखनी चलाने वाले साहित्यकारों की भूमिका का सवाल आता है। निश्चित तौर पर किसी भी भाषा को आगे लाने में उस में लिखने वाले साहित्यकारों की भूमिका अहम रहती है। डोगरी इस का ज्वलंत उदाहरण है। पहाड़ी में खूब लिखा गया, इसमें संशय नहीं है। किन्तु अधिकाशं लेखक सरकार के साथ प्रकट और लुप्त होता गया। कांग्रेस सरकार आई तो पहाड़ी होने लगी, भाजपा आई तो वहीं

लेखक हिन्दी के लेखक बन गये। उन्हें पहाड़ी को लेखक कहलाने में संकोच होने लगा। इस से यह कभी आन्दोलन नहीं बन पाया। जब जब सरकार से सहयोग हुआ, तब कुछ हिन्दी लेखक इसके विरोधी बने रहे। एक ही प्रदेश में आधा अधूरा सीमित दायरा होने से भी इस ओर चल पाना धारा के विरूद्ध चलने के समान रहा। ऐसी स्थिति में जिस मुकाम पर इसे पहुंचना चाहिए था, नहीं पहुंच पाया। सरकारी प्रोत्साहन की बात करें तो पाराशर में तत्कालीन संस्कृति मन्त्री स्व. लालचंद प्रार्थी और इसके बाद नारायणचन्द का प्रकाशन हुआ।

अकादमी तथा भाषा विभाग द्वारा हिन्दी-पहाड़ी शब्दकोषों सहित कई पुस्तकमालाएं प्रकाशित की गई। सन् 1972 में अकादमी के गठन के बाद अकादमी द्वारा पहाड़ी में स्तरीय प्रकाशन निकाले गये। अकादमी द्वारा ही पहाड़ी की एक सम्पूर्ण पत्रिका 'हिमभारती' तथा बाद में लोक सम्पर्क विभाग 'गिरिराज' में चार पृष्ठ केवल पहाड़ी को दिए गए।

पिछले दिनों कहीं पढ़ा था कि अण्डेमान में एक बोली बोलने वाले अंतिम व्यक्ति की मृत्यु हो गई। कुछ बोलियों के जानकार धीरे-धीरे समाप्त हो रहे हैं। हिमाचल में अभी ऐसी स्थिति नहीं आई किन्तु समाप्ति के खतरे बरकरार है। इसे चाहे भाषा का दर्जा न मिले, संरक्षण के लिए कुछ न कुछ किया जाना आवश्यक है।

।। बघाटी बोली बघाटी जीवन दर्शन की परिचायक है ।।

ठाकुर हरिदास व्यक्तित्व एवं कृतित्व

हिमाचल प्रदेश जिला सोलन के कुनिहार के गांव खनोल की पुनीत माटी में माँ महाजनु देवी के गर्भ से ठाकुर गोसांऊ राम के यहाँ भाद्रपद 24 अगस्त 1924 को एक ऐसी महान विभूति का जन्म हुआ जो हिमाचल प्रदेश के विकास का पावन प्रतीक बन कर रह गया और दिनांक जनवरी 1984 को हिमाचल प्रदेश के स्वतन्त्रता के इस सेनानी का स्वर्गवास दिल्ली में हृदय गति रूक जाने से हुआ।

'होनहार विरवान के होत चिकने पात' वाली कहावत यदि हम स्व. हरिदास पर चरितार्थ करें तो अतिशयोक्ति न होगी क्योंकि उन के जीवन का हर पल सामाजिक विकास की बहुआयामी निष्ठाओं से सम्बद्ध रहा। एक ओर जब महात्मा गांधी के नेतृत्व में समस्त भारत वर्ष एक जुट हो भारत वर्ष के स्वतन्त्रता संग्राम में अपने को आहुत कर रहा था उस समय 31 छोटी-बड़ी पश्चिमोत्तरी रियासतों के राजाओं/राणाओं के निरंकुश शासन से मुक्ति दिलानें के लिए एक संग्राम भीतर ही भीतर ज्वालामुखी का रूप धारण कर चुका था जिसे स्वाधीनता संग्राम के नाम पर प्रजा मण्डल की महत्वपूर्ण भूमिका को श्रेय जाता है। कुनिहार, कुठाड़, महलोग, बघाट, नालागढ़ बाघल और बेजा रियासतों के भीतर प्रजामण्डल में 1943-45 के भीतर प्राण फूंकने का श्रेय दिवंगत ठाकुर हरिदास को रहा और इन्होंने दीर्घ काल तक गरिमा को बनाए रखा जिसके फलस्वरूप 15 अप्रैल 1948 को 31 छोटी बड़ी रियासतों का विलय हुआ और हिमाचल प्रदेश अस्तित्व में आया।

हिमाचल प्रदेश के अस्तित्व में आने के पश्चात्, हिमाचल निर्माता डाॅ. वाई.एस. परमार के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर हिमाचल को उदय से विकास की ओर प्रवृत्त करने का समूचा श्रेय स्व. ठाकुर हरिदास को जाता है। जनमानस के प्रति निष्काम सेवा का ही फल है कि आप को वर्ष 1962 से 1967 के अंतराल में हिमाचल प्रदेश के विकास मंत्री के अतिरिक्त आप ने परिवहन, वन राजस्व और उद्योग विभाग जैसे महत्वपूर्ण विभागों का कुशल संचालन जन-विश्वास को लेकर मुखरित किया। कुनिहार जनपद बी.डी.ओ. कार्यालय और जिला स्तर का वन-विभाग कार्यालय खोलने के अतिरिक्त इसी क्षेत्र को औद्योगिक नगरी के रूप में विकसित करने का श्रेय भूत-पूर्व विकास मन्त्री ठाकुर हरिदास को ही है।

भूसंरक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत चैक-डैम योजना का निरूपण वन विभाग को लेकर आम जनता के लिए वृक्षारोपण और वन की समूची योजनाओं को जनसभा के लिए सुरक्षित रखने का स्वत्व अधिकार दिलाने की बात और हिमाचल प्रदेश में हरित क्रान्ति एवं श्वेत क्रान्ति के विकास के अनुक्रम का योगदान आज भी स्मरणीय है। इतना ही नहीं हिमाचल प्रदेश के बहुआयामी विकास के लिए यह अत्यन्त आवश्यक था कि प्रदेश के भीतर सड़कों का जाल बिछाकर सड़कों के निमार्ण में नए मील पत्थर स्थापित किए जाएं। सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्रों में सक्रिय भागीदारी के अतिरिक्त वर्ष 1966-70 के मध्य कांग्रेस पार्टी के महासचिव पद पर रहते हुए पार्टी की सेवा करते रहे। वर्ष 1972 से 1974 के अंतराल में कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष के पद पर रहते हुए जनता की सेवा की। 1970 में खेतीहार संघ की स्थापना की तथा 1974 में हिम किसान साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन जन हित में विकास अनुक्रम की एक कड़ी नहीं तो और क्या है? प्रदेश के किसानों के हितों की सुरक्षा और विकास के निमित्त वर्ष 1977 में किसान दल की स्थापना का लक्ष्य भी इनके विकास के योग में महत्वपूर्ण भूमिका की याद दिलाता है। स्व. ठाकुर हरिदास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर सार गर्भित प्रकाश डालने पर स्पष्ट हो जाता हैं कि उन्हें भूतपूर्व प्रधानमन्त्री मोरार जी देसाई, डाॅ. राम सुगम सिंह, चैधरी चरण सिंह जैसे राष्ट्रीय नायकों का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

हिमाचल प्रदेश के स्वाधीनता संग्राम की सेवाओं का ही परिणाम था कि स्व. ठाकुर हरिदास हिमाचल प्रदेश के गणमान्य स्वतन्त्रता सेनानियों की उपाधि से भी अलंकृत हुए। जब-जब भी प्रदेश को ठाकुर साहिब की बहुमूल्य सेवाओं की आवश्यकता पड़ी अथवा सरकार को किसी धर्म संकट का सामना करना पड़ा उन कठिन परिस्थितयों में ठाकुर रामलाल की सरकार को बचाने का श्रेय भी इन्हें प्राप्त है। उपरोक्त सारगर्भित, सूक्ष्म तत्वों के परिप्रेक्ष्य में यह कहना सचमुच अतिशयोक्ति नहीं कि यदि यह व्यक्तित्व आज हमारे प्रदेश में होता तो हिमाचल प्रदेश विकास की सभी सीमाओं को लांघ कर भारत वर्ष के मानचित्र पर अपना विशेष स्थान बनाता। वास्तव में स्व. ठाकुर हरिदास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व आज भी हमारे लिए प्रेरणा का स्त्रोत और उज्जवल भविष्य का प्रतीक है क्योंकि मन, वचन एवं कर्म की भावना से देदीप्यमान नक्षत्र ठाकुर हरिदास आज भी हिमाचल प्रदेश के लिए आदर्श का उज्जवल प्रतीक है। हमंे उनके बताए मार्ग को प्रशस्त करने की आवश्यकता है।

।। राजनेता का मतलब है जनसेवा के लिए समर्पित व्यक्तित्व।।

''मलौण किला'' एंग्लो-गोरखा युद्ध का मूक गवाहः

हिमाचल के एक विस्तृत भू-भाग पर सन् 1815 ई. तक गोरखों का शासन रहा। विशेषतः शिमला की पहाड़ी रियासतों के ऊपर अमर सिंह थापा के सैनिकों द्वारा किये गये अत्याचार आज भी जन-मानस में 'गोरखायण' के रूप में अंकित है। कुछ रियासतों के शासकों ने गोरखों के आतंक से भयभीत होकर उनके साथ अपनी पुत्रियों के विवाह करके कुछ राहत ली जबकि हिन्डूर नरेश तो गोरखों के विरूद्ध ब्रिटिश कम्पनी की सेना की शरण में चला गया था। कम्पनी सरकार उन दिनों भारत में अपने साम्राज्य को बढ़ाने के लिये प्रयासरत थी। कम्पनी सरकार ने तुरन्त सर डेविड अखतरलोनी के नेतृत्व में एक सेना हिण्डूर नरेश के आग्रह पर गोरखों के विरूद्ध भेज दी। कुमांऊ में कम्पनी सेना गोरखों के विरूद्ध युद्ध रत थी।

ब्रिटिश सेना ने गोरखों को अन्तिम मात मलौणगढ़ में दी। यहां गोरखा सेनापति अमरसिंह थापा मोर्चा सम्भाले था। उस समय तक गोरखों के पास जैथकगढ़ और मलौणगढ़ ही शेष बचे थे। जैथकगढ़ में अमर सिंह थापा का पुत्र रणजीत सिंह थापा डटा हुआ था। इसी समय अमर सिंह थापा को कुमाऊं के हाथ से निकल जाने का समाचार प्राप्त हुआ। अमर सिंह थापा ने अपने आप को चारों तरफ से दुश्मनों से घिरा पाया। परन्तु उसने लड़ाई जारी रखी। उसका भाई भक्ति सिंह थापा समीप ही मलौण से दो किलोमीटर दूर नरायण कोट में अंग्रेजों से लोहा ले रहा था। 70 वर्ष की आयु में भी उसमें युवाओं जैसा जोश था।

अमर सिंह थापा के सैनिक हाथों में खोखरी और तलवार लिये 'हर-हर महादेव' और 'जय काली कलकते वाली' का जयघोष लगाते हुए युद्ध क्षेत्र में अपने प्राणों की आहुति दे रहे थे। अपने सैनिकों की कम होती संख्या से कुछ गोरखा सैनिकों ने अमर सिंह थापा का साथ छोड़ दिया। जबकि बचे सैनिक और युद्ध से कतराने लगे थे। ठीक इसी समय 15 अप्रैल 1815 को भक्ति सिंह थापा युद्ध क्षेत्र में खेत रहा। अख्तरलौनी ने उसके शरीर को कीमती शालों में लपेट कर अमर सिंह थापा के पास भिजवाया ताकि उसका रहा सहा मनोबल भी टूट जाये।

अख्तरलौनी की युक्ति काम कर गई। भाई के शव को देखकर अमरसिंह थापा बिल्कुल टूट गया। उसने अपने तथा अपने पुत्र रणजीत सिंह तथा बचे सैनिकों के जीवन के बदले आत्मसमर्पण कर दिया। दोनों सेनाओं की उपस्थिति में भक्ति सिंह थापा का अन्तिम संस्कार किया गया। उसकी दोनों पत्नियां उसके साथ सती हो गई। अमरसिंह थापा ने नेपाल की राह ली। कहते हैं कि रास्ते में ही उसकी मृत्यु हो गई।

मलौण किला शिमला से लगभग 90 किलोमीटर दूर है जबकि बिलासपुर से यह मात्र 32 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। लुहारघाट की चोटी पर बना यह किला किसी जमाने में हिण्डूर रियासत का अजेय दुर्ग होता था। इस किले पर अधिकार करने वाला हमेशा अपने को गौरवान्वित महसूस करता था। इसलिए बिलासपुर के शासक हमेशा इसे ललचाई दृष्टि से देखते थे। फलस्वरूप रतनपुरगढ़ और मलौण गढ़ के सैनिकों के बीच आए दिन झड़प होती रहती थी।

किले तक जाने के लिये लुहारघाट से आधे घण्टे की सीधी चढ़ाई चढ़नी पड़ती है। किले के निर्माण के बारे में कुछ भी स्पष्ट नहीं है कि इसका निर्माण कब और किसने किया था। मलौण वासियों के अनुसार यह गोरखों द्वारा निर्मित है जबकि यह सत्य नहीं है। यह गोरखों से लगभग सौ वर्ष पूर्व का बना है। सम्भवतः कई वर्षों तक गोरखों के कब्जे में रहने के कारण इसे गोरखों द्वारा निर्मित कहा जाने लगा।

परन्तु शोध से एक तथ्य सामने आता है कि इसका निर्माण हिन्डूर के राजा भूप चन्द (1704-1755) ने करवाया था। बिलासपुर क्षेत्र की एक लोकगाथा के अनुसार मलौण का निर्माण हिन्डूर के राजा ने करवाया था। गाथा के अनुसार हिन्डूर और कहलूर की किसी कलह के चलते हिन्डूर ने मलौण को चिनना शुरू किया। जब गढ़ बन कर तैयार हो गया तो वह बिलासपुर की महारानी 'बादला' को नागवार गुजरा। महारानी बादला ने कहलूर के राजा को हिन्डूर पर चढ़ाई के लिये प्रेरित किया तथा मलौण पर अधिकार करने की बात कही। रानी के उकसाने पर राजा ने पम्मा नड्डा को बुला कर जो उस समय रियासत के वजीर थे, कहा कि सेना ले जाकर या तो मलौणगढ़ को अपने कब्जे में ले लो या उस गढ़ को गिरा दो। पम्मा नड्डा ने निक्कु, नोगलु, अमरू, सुंघाल आदि ढाई धड़े चन्देलों के व 36 धड़े सुंघाल सिपाहियों की सेना लेकर हिन्डूर की ओर कूच किया। बिलासपुर से चल कर पम्मा नड्डा ने मन्दोलड़िया में पहला डेरा डाला। दूसरे दिन पम्मा ने हिन्डूर में प्रवेश कर भारी उत्पात मचाया। पम्मा ने एक ही हमले से आधा हिन्डूर अपने कब्जे में कर लिया।

पम्मा नड्डा को बढ़ता देख कर हिन्डूर की महारानी बसोहली को बड़ी चिन्ता हुई। राजा उस समय बालक था। उसने राजा को पम्मा की गोदी में डाल कर पम्मा को अपना धर्म भाई बनाने का षड्यन्त्र रचा। पम्मा उस षड्यन्त्र में फंस गया। बसोहली रानी ने पम्मा से कहा कि मैं तुझे हिन्डूर की वजीरी भी प्रदान करती हूं। हिन्डूर की

वजीरी के लालच में आकर पम्मा का वध करवा दिया। पम्मा की लाश को शाल में लपेट कर उसके डेरे मन्दोलड़ी में पहुंचा दिया। पम्मा की लाश को देख कर उसके साथी हक्के-बक्के रह गये। सैनिकों ने तुरन्त कहलूर से बीरीया वजीर को बुलवाया। बीरीया के नेतृत्व में सेना ने पुनः हिन्डूर पर हमला किया। यहां यह उल्लेख मिलता है कि उस समय हिन्डूर का राजा भूप चन्द था और हिम्मत चन्द उसका वजीर था। भूप चन्द ने हिम्मत चन्द को कहलूरियों का सामना करने भेजा परन्तु इस युद्ध में हिन्डूर की हार हुई।

तारीख-ए-रियासत हिन्डूर में भूप चन्द (1704-1755) का शासनकाल सम्वत् 1761 से सम्वत् 1812 बताया गया है। हिम्मत चन्द को भूप चन्द को वजीर नहीं बल्कि उसका बाप था। जिसका शासनकाल सम्वत् 1758 से सम्वत् 1761 बताया गया है। गाथा का मुख्य नायक पम्मा नड्डा है। शशी वंश विनोद के अनुसार पम्मा नड्डा राजा भीम चन्द (सन् 1665-1694) का वजीर था। भीमचन्द सम्वत् 1722 को गद्दी पर बैठा और सम्वत् 1751 में गद्दी अपने बेटे अजमेर चन्द को सौंप कर स्वयं सन्यासी हो गया। भीम चन्द के बाद उसका बेटा अजमेर चन्द (सन् 1694-1741) सम्वत् 1751 में कहलूर की गद्दी पर बैठा। अजमेर चन्द ने सम्वत् 1798 तक कहलूर पर राज किया। अजमेर चन्द के काल में भी पम्मा नड्डा का उल्लेख मिलता है। कहलूर रियासत के इसी काल के इतिहास में एक वजीर माणिक चन्द का वर्णन आता है। भीम चन्द के राज्य रोहण के समय रियासत का वजीर माणिक चन्द था। उस समय भीमचन्द की आयु चैदह वर्ष थी। भीमचन्द की बाल्यावस्था को देख कर माणिक चन्द ने मनमानी शुरू कर दी। यह देख कर भीम चन्द की माता ने माणिक चन्द को निकाल दिया। सम्भवतः इसी के बाद पम्मा नड्डा को वजीर बनाया गया।

हम उपरोक्त वर्णन के बाद पम्मा नड्डा को केन्द्र मान कर इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि पम्मा नड्डा कहलूर का वजीर सन् 1665 के बाद से लेकर सन् 1741 के बीच रहा। गाथा में हिन्डूर के राजा के रूप में भूप चन्द का वर्णन आया है। भूप चन्द हिन्डूर का राजा सन् 1704-1755 तक रहा। इस प्रकार मलौण गढ़ का निर्माण अठारहवी शताब्दी के प्रथम दशक में हुआ प्रतीत होता है जो सत्य के समीप बैठता है।

किले को जो रास्ता जाता है उसके सामने माँ भद्रकाली का मन्दिर बना हुआ है। किले के बायीं ओर बने इस मन्दिर में रखी माँ भद्र काली की विशाल पत्थर की मूर्ति को गोरखे नेपाल से पीठ पर उठा कर लाये थे। यहां अन्य मूर्तियां भैरव और हनुमान की भी प्रतिष्ठित हैं जो शिलाओं में उकेरी गई हैं। मन्दिर के मुख्य द्वार का नव निर्माण किया गया है। जिसकी देखभाल की जा रही है। रविवार और मंगलवार को यहां लोग दूर-दूर से जातरा लेकर आते हैं। उस दिन यहां मेले जैसा दृश्य होता है।

मन्दिर में माँ के दर्शनों के बाद किले में प्रवेश किया जाता है। समुद्र तल से लगभग 4500 फुट की ऊंचाई पर स्थित इस किले की दीवार पर चढ़कर चारों तरफ नजारों का आनन्द उठाया जा सकता है। किले के एक तरफ मलौण गांव तथा दूसरी तरफ घना जंगल है। सामने बाड़ी धार अपनी ऊंचाई पर गर्व करती हुई मलौण धार को चिढ़ा रही है। रत्नगढ़ के पीछे दूर नीचे गोवन्दिसागर का नजारा देखते ही बनता है। पश्चिम की ओर फतेहगढ़, स्वारघाट की लघु पहाड़ियां राजगढ़ तथा कसौली तक के दृश्यों का अवलोकन किया जा सकता है।

बाहरी दीवार की ऊंचाई 50 फुट रही होगी। यह दीवारें आज भी कहीं 20 फुट तो कहीं 50 फुट तक ऊंची है। किले की लम्बाई लगभग 400 मीटर और चैड़ाई 8 मीटर से 50 मीटर तक है। मलौण किला रत्नगढ़ की अपेक्षा चार गुणा बड़ा प्रतीत होता है। इसी से मलौण किले की मजबूती व उसकी उपयोगिता का पता चलता है। इस भीम काय किले को देखकर आश्चर्य होता है कि वो लोग किस मिट्टी के बने होंगे जिन्होंने 5-5 फुट लम्बी पत्थर की शिलाओं को इस किले पर पहुंचाया होगा।

एक वृद्ध गोरखा के अनुसार केवल एक मुख्य द्वार से किले में प्रवेश किया जाता था। जब यह मुख्य दरवाजा बन्द किया जाता था तो दूर-दूर तक आवाज सुनाई देती थी।

खण्डहर बनते इस किले की दीवारें आज भी अलंघ्य है। कहते हैं कि चारों तरफ से जब अंग्रेजों ने इस किले को घेर लिया था तो किले में रसद खत्म होने से गोरखा महिलाओं ने कई महीनों तक घास उबाल कर पेट भरा था। इन वीरांगनांओं ने अंग्रेजों पर पत्थर बरसा कर उन्हें चकित कर दिया था।

किले के अन्दर ही फाॅसी कक्ष, रानी कक्ष, अधिकारी कक्ष, सभागार, अनाज भण्डार तथा शौचालय का भी प्रबंध था। किले से बाहर जाने के लिए गुप्त रास्ता भी था। किसी जमाने में दो फुट व्यास लिए कुंओं में पानी भरा होता था। आज इन कुंओं में मिट्टी भरी हुई है जिसमें घास उग गई है। कहते हैं कि मन्दिर से लगते भाग पर अंग्रेजों ने जमकर गोले बरसाए थे। इन गोलों के निशान कुछ वर्ष पूर्व तक देखे जा सकते थे। परन्तु मन्दिर की मुरम्मत करते समय वो मिट गये थे। किले की बाहरी दीवार चार-पांच फुट तक चैड़ी है। इसके भीतर कक्ष 12-12 फुट के

बने थे। एक कक्ष के दरवाजे की पत्थर की चैखट पर की गई चित्रकारी आज तक विद्यमान है। वह पत्थर पर उकेरी गई है।

इन कक्षों में किले के चारों ओर मोर्चे बने हुए थे। पांच-छः फुट की दूरियों पर बीच बीच में गवाक्ष बने थे। इन खिड़कियों का अग्रिम भाग दो इंच वर्गाकार का है। गवाक्ष में लगी बन्दूक को थोड़ा हटाकर इसकी दिशा बदली जा सकती थी। किले की एक दीवार में दो बड़े-बड़े दरवाजे हैं। दूसरे दरवाजे विभिन्न प्रकार की आकृतियां लिये हैं। यहां पर कुछ वर्ष पूर्व तक दो तोपें रखी हुई थी। अब इन तोपों को गोरखा ट्रेनिंग सेन्टर सुबाथू ले गये हैं। हैरानी की बात है कि इतने वर्ष बीत जाने के बाद भी ताम्बे से बनी इन तोपों में कोई जंग नहीं लगा है। इन तोपों की लम्बाई 14 फुट तथा अग्रभाग 6 फुट का है।

किले के अन्दर जल के 20-20 फुट के तालाब बने हुए थे। इन तालाबों में अब झाड़ उग चुके है। किले की दीवारें जर-जर हाल में गिर रही है। इनमें वृक्ष उग आयें हैं। किले से दो सौ मीटर दूर भक्त थापा का अन्तिम संस्कार किया गया था। यहां उसकी एक यादगार बनाई गई है। गोरखा ट्रेनिंग सेन्टर सुबाथू ने अब इसका जीर्णोद्धार किया है।

मलौण किला जो किसी जमाने में एक सुदृढ़ ऐतिहासिक दुर्ग था पिछले पचास वर्षों से उपेक्षा का शिकार है। यह किला अंग्रेज-गोरखा युद्ध का मूक दूर्शक रहा है, आज धीरे-धीरे दम तोड़ रहा है। आज यह ऐतिहासिक धरोहर जीर्णोद्धार के इंतजार में है। अगर सड़क से किले तक ठीक मार्ग बन जाए तो हजारों इतिहास प्रेमी व घुमक्कड़ यहां आना पसन्द करेंगे।

।। हमारी मातृभूमि हमारे संस्कारों की भूमि है।।

सोलन के डॉ. भूपेन्द्र भारद्वाज को राष्ट्रीय गौरव सम्मान

सोलन के विख्यात चिकित्सक डॉ. भूपेन्द्र कुमार निःस्वार्थ सेवा भाव के लिए इंडिया इंटरनेशनल फ्रैंडशिप सोसायटी (भारत अंतर्राष्ट्रीय मैत्री संस्था) नई दिल्ली द्वारा राष्ट्रीय गौरव सम्मान प्रदान किया गया। हाल ही में नई दिल्ली में आर्थिक विकास एवं राष्ट्रीय एकता पर आयोजित सम्मेलन में डॉ. भूपेन्द्र को यह सम्मान प्रदान किया गया। डॉ. भूपेन्द्र कुमार को चिकित्सा क्षेत्र एवं सामाजिक कार्यों में श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए यह पुरस्कार प्रदान किया गया। डॉ. भूपेन्द्र कुमार ने वर्ष 1976 में इंदिरा गांधी आयुर्विज्ञान चिकित्सा संस्थान शिमला से एमबीबीएस की उपाधि प्राप्त की। उसी वर्ष से उन्होंने एक चिकित्सक के रूप में रोगियों का उपचार करना आरम्भ किया। डॉ. भूपेन्द्र शिमला, सोलन तथा सिरमौर जिलों में कार्यरत रहे। एक चिकित्सक के रूप में उपचार के साथ-साथ समाज सेवा को अपना ध्येय बनाने के उद्देश्य से डॉ. भूपेन्द्र ने समय पूर्व सेवानिवृति ली। उस समय वे रामपुर के नागरिक अस्पताल में कार्यरत थे।

रेडियोलाजी के क्षेत्र में डॉ. भूपेन्द्र का नाम सोलन, सिरमौर और शिमला जिलों में किसी पहचान का मोहताज नहीं है। उनके निदान एवं परीक्षण को समूचे उत्तर भारत में विशिष्ट माना जाता है। रेडियोलाजी के साथ-साथ वे विगत काफी समय से तपेदिक के उपचार में भी जुटे हुए हैं। उनके पास आने वाले प्रत्येक रोगी को वे उपचार के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण एवं समाज की भलाई के लिए कुछ करने का परामर्श जरूर देते हैं। वे बेटी बचाओ अभियान से भी लम्बे समय से जुड़े हुए हैं। एक स्वस्थ एवं संतुलित समाज का निर्माण उनकी परिकल्पना है। डॉ. भूपेन्द्र इंडियन रेडियोलाजी एसोसिएशन से जुड़े हुए हैं तथा प्रदेश में प्रसव पूर्व लिंग निर्धारण अधिनियम के कार्यान्वयन के राज्य समन्वयक है। रोगियों की सेवा के साथ-साथ वर्तमान में डॉ. भूपेन्द्र एग्रीकल्चर एंजेल्स नामक एक परियोजना पर कार्य कर रहे हैं। इस परियोजना का उद्देश्य गांवों में गरीबी घटाना, कौशल विकास के माध्यम से रोजगार एवं स्वरोजगार को प्रोत्साहित करना तथा लोगों को अच्छे स्वास्थ्य एवं पर्यावरण संरक्षण की दिशा में प्रेरित करना है। डॉ. भूपेन्द्र को इससे पूर्व भी भारतीय चिकित्सा सम्मान पुरस्कार तथा नेशनल एचीवमेंन्ट अवार्ड फार हैल्थ एक्सीलेंस से सम्मानित किया जा चुका है।

समाजिक एवं आर्थिक विकास के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता की दिशा में कार्यरत भारत अंतर्राष्ट्रीय मैत्री संस्था द्वारा आयोजित इस सम्मेलन में हिमाचल प्रदेश के परिवार एवं स्वास्थ्य कल्याण, राजस्व एवं विधि मन्त्री ठाकुर कौल सिंह को भी सम्मानित किया गया है।

।। अपने कर्तव्य के प्रति समर्पण का भाव
हमको सम्मान दिलाता है ।।

पैलेस, गुफाओं और मन्दिरों का शहर अर्की

हिमाचल प्रदेश के सोलन जिले में स्थित अर्की एक अच्छे पर्यटन स्थल के रूप में उभर सकता है। सोलन जिले के इस छोटे से शहर में कई ऐसे स्थान हैं, जिनके बारे में पर्यटकों को ज्यादा जानकारी नहीं है। ऐतिहासिक रूप से यह शहर प्राचीन पर्वतीय राज्य बाघल की राजधानी था, जिसकी स्थापना राजा अजयदेव ने 1660-1665 के दौरान की थी। शिमला से 52 किलोमीटर की दूरी पर स्थित अर्की में अभी भी कुछ ऐसे स्मारक हैं, जो राजाओं की राजसी विरासत को प्रदर्शित करते हैं।

अर्की में कई मन्दिर व रहस्यमयी गुफाएं हैं, जो देश के सभी भागों से पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित कर सकती है। मन्दिरों में लुतुरू महादेव मन्दिर, दुर्गा मन्दिर और शाखनी महादेव मन्दिर प्रमुख है। अर्की से 4 किलोमीटर की दूरी पर स्थित लुतुरू महादेव मन्दिर भगवान शिव को समर्पित है। शक्ति पीठ के रूप में विख्यात इस मन्दिर का निर्माण 1621 में बाघल के राजा ने किया था। अर्की की यात्रा करने वाले यात्री दुर्गा मन्दिर भी देख सकते हैं, जो वास्तुकला की शिखर शैली के लिए जाना जाता है। दूसरी ओर शाखनी महादेव मन्दिर से शहर का मनोरम दृश्य दिखता है। अर्की फोर्ट (किला) और अर्की पैलेस (महल) जो प्रगतिशील बाघल साम्राज्य की विरासत का प्रतिनिधित्व करते हैं, इस शहर के उल्लेखनीय स्थलों में से हैं। इस किले का निर्माण राणा पृथ्वी सिंह ने 1695 और 1700 के बीच किया था और यह किला राजपूत और मुगल वास्तुकला की शैलियों के मेल का प्रतिनिधित्व करता है। यह पर्यटकों को पहाड़ी शैली में दीवारों पर बने चित्र देखने का अवसर प्रदान करता है, जिनमें पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की जीवनशैली दर्शाई गई है।

राणा पृथ्वी सिंह द्वारा 18 वीं शताब्दी में बनाया गया अर्की महल पश्चिमी हिमालय में स्थित है और वास्तुकला की कलाम शैली को प्रदर्शित करता है। भखालग, दीवान-ए-खास, कुनिहार और लक्ष्मीनारायण मन्दिर अर्की के कुछ प्रमुख पर्यटन स्थल हैं। पर्यटक बस-टैक्सी, वायुमार्ग व ट्रेन से यहां पहुंच सकते हैं। चण्डीगढ़ से भी यह काफी पास है।

वास्तुकला और राजसी शानो-शौकत की मिसाल है

अर्की पैलेस: राजा पृथ्वी सिंह की ओर से 18 वीं शताब्दी में बनाया गया अर्की पैलेस अपने भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है, जो अर्की कलाम शैली में बने हुए हैं। हालांकि अब यह महल खराब स्थिति में है। फिर भी यहां के भित्ति चित्र जो पुराणों, पौराणिक कथाओं, कालिदास और कुमारसंभव को दर्शाते हैं, आज भी देखने लायक है। एक हेरिटेज होटल में परिवर्तित, यह महल हिमाचल पर्वत श्रेणी के बर्फीले पहाड़ों के आकर्षक दृश्य प्रस्तुत करता है। इसके अलावा यहां कई मूर्तियां और कलाकृतियां हैं, जो बाघल अवधि के प्रगतिशील राज्य का प्रतिनिधित्व करती है।

लुतुरू महादेव मन्दिर: लुतुरू महादेव मन्दिर अर्की से 4 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। भगवान शिव को समर्पित इस मन्दिर का निर्माण बाघल के राजा ने 1621 में किया था। एक पौराणिक कथा के अनुसार भगवान शिव राजा के सपने में आए और उन्हें मन्दिर का निर्माण करने के लिए कहा। इस स्थान पर एक शिवलिंग स्थापित है। पहाड़ी की चोटी पर स्थित यह मन्दिर वास्तुकला की शिखर शैली का उत्कृष्ट नमूना है।

दुर्गा मन्दिर: अर्की और बातल घाटी के बीच स्थित दुर्गा मन्दिर एक प्रमुख पर्यटन स्थल है। संपूर्ण देवताओं की संयुक्त ऊर्जा रखने वाली देवी दुर्गा को समर्पित इस मन्दिर में नवरात्रि के दौरान वार्षिक मेला लगता है, जो सितंबर या अक्टूबर में शुरू होता है। शिखर शैली में बना यह मन्दिर लुतुरू महादेव मन्दिर के सामने स्थित है।

शाखनी महादेव मन्दिर: शाखनी महादेव मन्दिर भी प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है। भगवान शिव को समर्पित इस मन्दिर के वास्तुशिल्प पर शिखर शैली का प्रभाव दिखता है और यह बेजोड़ कलात्मक रचनात्मकता को प्रदर्शित करता है। कहा जाता है कि इस मन्दिर में प्रार्थना करने से भाग्य अच्छा होता है।

लक्ष्मीनारायण मन्दिर: लक्ष्मीनारायण मन्दिर का निर्माण राजा चतर सिंह (1664-90) ने करवाया था। यह मन्दिर भगवान विष्णु व लक्ष्मी को समर्पित है। मन्दिर का निर्माण शिखर शैली में किया गया है।

।। कला में दिव्य आकर्षण होता है ।।

1857 के महासमर में तत्कालीन बघाट रियासत का योगदान

रियासत का संक्षिप्त इतिहास:

इस रियासत की स्थापना परमार वंश के शासकों ने 14वीं शताब्दी में अलाउद्दीन खिलजी के शासन काल में की थी। एक पौराणिक कथा के अनुसार महर्षि वशिष्ठ की कामधेनु गाय विश्वामित्र ने उनके आश्रम से चुरा ली थी, पत्नी के आग्रह और विलाप करने पर मुनि वशिष्ठ ने यज्ञ कुण्ड से एक वीर पुरूष को उत्पन्न किया जिसने विश्वामित्र को जीतकर महर्षि वशिष्ठ की गाय वापस लाकर दी। महर्षि ने उसका नाम परमार रखा। 'परान् शत्रून् मारयति इति परमार'। भविष्य पुराण के अनुसार इसी वंश में राजा भोज का जन्म हुआ तथा कालान्तर में इसके वंश धारा नगरी (मध्य भारत तथा दक्षिण भारत की सीमा पर स्थित) से पलायन करके हिमाचल में आए। 1790 ई. तक इसके शासक केहलूर राज्य के सामन्त थे किन्तु बाद में इन्होंने स्वतन्त्र बघाट राज्य की स्थापना की।

इसके संस्थापक राणा हरीचन्द पाल (बसन्त पाल) थे। रियासत की सीमाएँ बाघल, कुठाड़, कुनिहार, क्योंथल तथा सिरमौर रियासत के साथ लगती थी। रियासत का क्षेत्रफल 36 वर्गमील था। रियासत ज्यादा बड़ी न होते हुए भी सामरिक तथा व्यवसायिक दृष्टि से महत्वपूर्ण थी क्योंकि मैदानी इलाकों का यह प्रवेश द्वार थी। रियासत की सुरक्षा के लिये किलों का निर्माण किया गया था जो बाहरी आक्रमण से रियासत की रक्षा करते थे। ये किले थे -

1. धारों की धार
2. बनासर का किला
3. अमरकोट का किला

रात्रि के समय मशालों के संकेत द्वारा एक किले से दूसरे किले को समाचार प्रेषण किया जाता था।

बघाट रियासत की राजधानी समय के साथ-साथ बदलती रही। प्रारम्भ में यह पिन्जौर के निकट भरवाना या भवाना थी इसके बाद टकसाल, कोटी तथा बाद में बसन्तपुर (बस्सी) वर्तमान जौणाजी तथा अन्त में सोलन इस रियासत का मुख्यालय बना। 1803-1815 के दौरान जब गोरखों ने हिमाचल के पहाड़ी राज्यों पर अपने सेनापति अमर सिंह थापा के नेतृत्व में हमला किया, उस समय बघाट रियासत के शासक राणा महेन्द्र सिंह ने अंग्रेजों का साथ न देकर गोरखों का साथ दिया। इसके तीन प्रमुख कारण थे-

1. केहलूर के राजा महान चन्द से राणा महेन्द्र सिंह की मित्रता।
2. अमर सिंह थापा से राणा महेन्द्र सिंह के पारिवारिक सम्बन्ध तथा
3. सबसे महत्वपूर्ण कारण ईस्ट इंडिया कम्पनी की विस्तारवादी नीति का विरोध।

जब तक पहाड़ी रियासतों पर गोरखों का प्रभुत्व बना रहा, राणा महेन्द्र सिंह अपनी रियासत का शासन निर्भय होकर चलाते रहे, किन्तु 1815 में जब ब्रिटिश सेना ने जनरल अक्टर लोनी के नेतृत्व में गोरखों को पराजित कर पहाड़ी रियासतों से खदेड़ दिया तो बघाट रियासत को अंग्रेजों का विरोध काफी मंहगा पड़ा। उनके द्वारा शासित 8 परगनों में से 5 जब्त कर लिये गए और पटियाला के राजा को मात्र 1 लाख 30 हजार में बेच दिये गए। इससे रियासत का क्षेत्रफल और राजस्व दोनों कट गए। 4 सितम्बर 1815 की सनद के मुताबिक 1839 में राणा महेन्द्र सिंह के निःसंतान मर जाने पर रियासत को कम्पनी सरकार ने जब्त कर लिया तथा 1282/- रूपये की मासिक पेंशन परिवार के लिये मंजूर की गई। राणा उमेद सिंह के याचिका दायर करने पर 1842 में लार्ड ऐलनबरो ने पुनः रियासत के शासन का अधिकार राणा विजय सिंह को देना स्वीकार किया। इसी बीच अंग्रेजों ने कसौली में सैन्य छावनी स्थापित कर ली थी। रियासत का प्रशासन पुनः हासिल करने के बाद राणा विजय सिंह ने जब इस बात का विरोध किया तो अंग्रेजों ने मात्र 5000/- रूपये में कसौली का क्षेत्र बघाट रियासत से खरीद लिया।

किन्तु कम्पनी सरकार किसी न किसी बहाने से बघाट रियासत को अपने अधिकार क्षेत्र में लेना चाहती थी क्योंकि उनके विरूद्ध बघाट के शासकों का गोरखों को सहयोग देना नासूर की तरह उनको चुभ रहा था। अतः 1849 में राणा विजय सिंह की मृत्यु के बाद लार्ड डलहौजी ने एक बार फिर लैप्स नीति के तहत बघाट रियासत को वारिस न होने के कारण अंग्रेजी राज्य में मिलाने का फैसला किया। 1850 में रियासत ब्रिटिश साम्राज्य का हिस्सा बन गई। डलहौजी के इस फैसले से बघाट रियासत की प्रजा भी बहुत क्षुब्ध थी और जन-जन में अंग्रेजों की विस्तार वादी नीति के विरूद्ध असंतोष फैल रहा था। इसी कारण 1857 के महासमर के समय बघाट रियासत के शासक और जनता ने अंग्रेजों का साथ न देकर स्वतन्त्रता सेनानियों का साथ दिया। इसी के फलस्वरूप संघर्ष की पहली चिन्गारी कसौली से फूटी।

राणा उम्मेद सिंह ने एक बार फिर डलहौजी के इस अन्यायपूर्ण फैसले के खिलाफ अपने हकोहकूक के लिये दावा किया। मुकद्दमें की पैरवी के लिये इंग्लैंड से मशहूर बैरिस्टर इजाक बट को नियुक्त किया गया। कई वर्षों तक कोर्ट आॅफ डायरेक्टरर्स के समक्ष मुकद्दमा चलता रहा। अन्त में 1860 में लार्ड कैनिंग ने रियासत को पुनः राणा उम्मेद सिंह को वापस देने के आदेश जारी किये। 1861 में अपनी मृत्यु से कुछ ही समय पूर्व राणा उम्मेद सिंह को रियासत की बहाली का आदेश मिला। उन्होंने अंग्रेज सरकार से अनुरोध किया कि उनकी मृत्यु हो जाने पर उनके 2 वर्षीय पुत्र राणा दिलीप सिंह को बघाट रियासत का राजा घोषित किया जाए। इस समय तक ईस्ट इण्डिया कम्पनी का शासन समाप्त हो गया था और शासन की बागडोर सीधी ब्रिटिश साम्राज्ञी के हाथों में थी अतः उनकी यह इच्छा स्वीकार कर ली गई और राणा दिलीप सिंह को बघाट का शासक मुकर्रर किया गया। उनके बालिग होने तक कोर्ट आफ वाडर्स द्वारा नियुक्त प्रशासक की देखरेख में रियासत का काम काज चलता रहा। 1863 में मात्र 500/- रूपये में वर्तमान सोलन छावनी की जमीन भी अंग्रेज सरकार ने बघाट के शासक से ले ली थी।

1911 में राणा दिलीप सिंह की मृत्यु के बाद उनके नाबालिग पुत्र राजा दुर्गा सिंह को रियासत का वारिस घोषित किया गया जो कि भारत के स्वतन्त्र होने तक इस रियासत के अन्तिम शासक रहे। 1922 में उनके बालिग होने तक रियासत की सारी व्यवस्था इनके चाचा मियां अमर सिंह के हाथों में रही।

।। राष्ट्र सबसे पहले ।।

सोलन में हरिजन सेवक संघ का कार्य

स्वतन्त्रता पूर्व के ब्रिटिश भारत में हरिजन सेवक संघ तो काफी समय से कार्य करता आ रहा है। परन्तु हिमाचल प्रदेश में विलीन होने वाले देशी राज्यों में यह कार्य नहीं हुआ, ना ही अखिल भारतीय हरिजन सेवक संघ की कोई शाखा यहां बन पाई। पाठकों के परिचय के लिए इन देसी राज्यों के नाम नीचे दिए जा रहे हैं।

नाम वर्तमान जिला	इसमें विलीन होने वाले देसी राज्यों के नाम
1. चम्बा	चम्बा
2. मण्डी	मण्डी, सुकेत
3. बिलासपुर	बिलासपुर, कल्हूर
4. सिरमौर	सिरमौर
5. महासू	महलोग, कुठार, बेजा, अर्की (बाघल), कुनिहार, मांगल, बघाट (सोलन), क्योंथल, कोटी, भज्जी, धामी, ठियोग, रतेश, बलसन, मधान, घूण्ड, खनेटी, जुब्बल, देलठ, कुमारसेन, सांगरी, बुशहर तथा शिमला के कोटखाई व कोटगढ़ के क्षेत्र।

स्वतन्त्रता के पूर्व इन राज्यों में कांग्रेस का पदार्पण न हुआ और न ही गांधी जी के अन्य रचनात्मक विचारों का प्रवेश। उन दिनों अस्पृश्यता निवारण के आन्दोलन का इन क्षेत्रों में श्रेय आर्य समाज को ही रहा। सन् 1948 में प्रदेश बनने के साथ-साथ ही यहां कांग्रेस का निर्माण हुआ और उसके साथ रचनात्मक प्रवृत्तियों का ध्यान भी इधर आकर्षित हुआ। श्री धर्मदेवजी शास्त्री अध्यक्ष अशोक आश्रम कालसी देहरादून ने प्रथम इस क्षेत्र की समस्याओं की सुध ली। वह इस प्रदेश में घूमे और हिमाचल प्रदेश के लिए हरिजन सेवक संघ की शाखा का निर्माण किया। उसका कार्यालय प्रारम्भ अशोक आश्रम कालसी देहरादून में रहा। तभी से शास्त्री जी संघ की अध्यक्षता कर रहे हैं और साथ-साथ आदिम जाति सेवक संघ द्वारा सेवा कर रहे है। हिमाचल प्रदेश इनकी सेवाओं का सदैव आभारी रहेगा।

हरिजन-सेवा का कार्य साम्प्रदायिकता से ऊपर उठकर इसी संघ ने किया है और कर रहा है। इसके प्रचार की शैली किसी सम्प्रदाय के विरोध पर आधारित नहीं है। महात्मा गांधी का कथन था कि जिन सवर्णों ने वर्षों से अस्पृष्यता के व्यवहार द्वारा मानव के प्रति अन्याय किया है उसका प्रायश्चित यही है कि सवर्ण हरिजन-सेवा कार्य करें। इस पद्धति से बड़ा लाभ यह हुआ है कि साम्प्रदायिकता का विष समाप्त हो गया और साथ ही कार्य-प्रभाव सम्पन्न हो सका। अस्पृष्यता-निवारण तथा हरिजन-सेवा का कार्य प्रचार, संस्कार केन्द्रों और औद्योगिक प्रोत्साहन, शिविरों आदि द्वारा उक्त संघ ने इस प्रदेश में किया और इनके प्रचार से हृदय-परिवर्तन का क्रम चला। इनके प्रयास से प्रेमपूर्वक सैंकड़ों मन्दिर तथा जलाशय हरिजनों के लिये खुले। सिनेमा गाड़ी का प्रचार हुआ। इसी के प्रचार से भीमाकाली का प्रसिद्ध मन्दिर अनुसूचित जातियों के लिये खुला। हरिजन-सेवक-संघ के गत वर्षों के कार्य का संक्षिप्त विवरण निम्न है:-

इस प्रदेश का हरिजन-सेवा का कार्य पहले पंजाब शाखा के अन्तर्गत ही था। परन्तु अक्तूबर 1954 में श्री धर्मदेवजी शास्त्री के प्रयत्नों से पृथक शाखा का निर्माण हुआ। पहले प्रादेशिक-कार्यालय अशोक आश्रम कालसी में रहा, अब सलोगड़ा (महासू) जिला सोलन में है। संघ ने हर जिले में शाखाओं की स्थापना की। प्रारम्भ में संघ के पास एक ही कार्यकर्ता था परन्तु इस वक्त संघ के हर जिलों में कार्यकर्ता है। संघ की भजन मण्डली घूमती रहती है। हर जिलों में सघन क्षेत्र है जिनमें सर्वेक्षण होकर यह सफल प्रयास किया गया कि चतुर्मुखी सामूहिक अस्पृष्यता का नाश हो जावे। यह सघन क्षेत्र सिरमौर में पौण्टा, सोलन में अर्की, बिलासपुर में सदर, मण्डी में करसोग, चम्बा में चम्बा तहसीलें रखी गई थी। इनका सर्वेक्षण और रिपोर्ट है कि इन स्थानों के जलाशय, मन्दिर तथा अन्य सामूहिक स्थानों अर्थात् होटलों आदि पर स्पर्शास्पर्श भेद कुछ बहुत समाप्त हो गया था। रिपोर्ट के अनुसार उक्त संघ आजतक 100 से अधिक सहभोज करा चुका है। जिनमें से हरेक में सैकड़ों व्यक्तियों ने भाग लिया। 12 के करीब शिविर लगाये जिनमें हर जाति के सवर्ण तथा सब अनुसूचित जातियों के सदस्य शामिल हुए और 4 दिनों से लेकर एक सप्ताह तक सब साथ-साथ रहे। इस क्रम से अस्पृष्यता-निवारण पर बड़ा ही लाभदायक प्रभाव पड़ा है।

शिक्षा के सम्बन्ध में संघ ने कुल मिलाकर 12 संस्कार केन्द्र चलाये। जो हर जिलों में हरिजन-बस्तियों में थे और घर-घर जाकर अनुसूचित जातियों को अपने बच्चे स्कूल भेजने के लिए प्रोत्साहित किया। सरकारी सहायता पर अवलम्बित 3 छात्रावास पौण्टा (सिरमौर) सराहन (सोलन) तथा चम्बा में चलाये।

संघ ने सरकारी सहायता से हरिजनों के लाभ हेतु 3 केन्द्र चलाए हैं। इसके लिए प्रेरणा वस्तुतः दो विशेष परिस्थितियों से मिली। एक तो बरड़ों के बसाने की योजना ने उद्योगीकरण की आवश्यकता को प्रकट किया और दूसरे श्री उच्छमराय नवल शंकर ढेवरजी को नन्दग्राम (सोलन) में श्रीमती सुभद्रा अमीचन्द से भूदान हरिजन हितार्थ मिलने पर भी इसी ओर प्रेरणा मिली। दो केन्द्र चल रहे हैं। तीसरे की योजना बन रही है। विचार यह है कि यह केन्द्र अनुसूचित जातियों के युवकों को प्रशिक्षण दें और बाद में उनके अपने स्वाबलम्बी उत्पादन केन्द्र बन जाएं। प्रशिक्षण का कार्य आगे किसी और उचित स्थान पर ले जाया जाए।

इसके अतिरिक्त संघ ने साहित्य प्रकाशित किया, पोस्टर बांटे, सम्मेलन किए, पद यात्राओं द्वारा ग्राम-ग्राम तक अस्पृश्यता निवारण का संदेश पहुंचाया और सवर्ण तथा अनुसूचित जातियों के दरम्यान जो खाई थी और बढ़ रही थी उसको पाटकर स्नेह तथा प्रेम का वातावरण पैदा किया। सस्नेह एक दूसरे के निकट आने से अस्पृष्यता का मूलाधार टूटने लगा और इस दिशा में विशेषतया संघ की सेवाएं बड़े महत्व की रही। संघ ने सरकार की योजनाओं को पूरा करने में भी सहायता की जैसे सरकार के पास चरखे व सिलाई की मशीनें अनुसूचित जातियों में बांटने के लिए थी। संघ के कार्यकर्ताओं ने गांव-गांव में जाकर पात्र व्यक्तियों को यह चीजें दिलवाई। इस तरह सरकार की कई योजनओं की पूर्ति में संघ पूरी-पूरी सहायता देता रहा।

।। मानवता समस्त श्रेष्ठ गुणों का खजाना है ।।

बघाटराज स्व. श्री दुर्गासिंह जी की दिनचर्या

माननीय स्व. बघाट नरेश जी के सानिध्य में प्राप्त अनुभव के अनुसार उनकी दिनचर्या यहां प्रस्तुत है जो कि बघाट वासियों एवं अन्य लोगों के लिए येन केन प्रकारेण प्रेरणा का स्त्रोत बन सकती है।

राजा साहब हर रोज सवेरे ब्रह्ममुहूर्त में चार बजे उठ जाया करते थे। उठकर वे माँ दक्षिणा काली का ध्यान करते थे। फिर पन्द्रह मिनट तक बाहर टहलते थे। उसके बाद स्नान करके कॉफी पीते थे। सात बजे अपने मन्दिर में पूजा के लिए प्रस्थान करते थे। दस बजे उनकी रानी शशिप्रभा के साथ आई दासी सावित्री देवी उनके लिए कॉफी लेकर आती थी। कॉफी पीकर वे दस मिनट बाद संध्या करना आरम्भ करते थे। एक बजे संध्या पूरी करके अपने वस्त्र बदल करके भोजन करने के लिए भोजनकक्ष में चले जाते थे। उनके लिए भोजन ब्राह्मण के द्वारा परोसा जाता था।

उपरान्त वस्त्र बदलकर अपने वाहन के द्वारा अपने न्यायिक परिसर स्थित कार्यालय में चले जाते थे। वहां आधा घंटा आराम करने के बाद कार्यालय सम्बन्धी व न्यायसम्बन्धी काम करते थे। यह क्रम शाम पांच बजे तक चलता था। उपरान्त वे कभी पैदल अथवा कभी वाहन से वापिस अपने निवास स्थान पर पहुंचते थे। कार्यालय समय में कोई उनसे भेंट करने आता था तो वे उससे खुद जाकर मिलते थे। शाम को 6 बजे वे अपने महल में पहुंच जाते थे। 6 से आठ बजे तक 2 घन्टे अपने कर्मचारियों से विचार विमर्श करते थे। रात के आठ से नौ बजे तक मौन संध्या करते थे। पन्द्रह मिन्ट का तो उनका नितांत मौन रहता था। नौ बजे वे अल्प सा भोजन करते थे। रात नौ से दस बजे तक रेडियो पर समाचार सुना करते थे। दस से ग्यारह बजे तक महानिशा ध्यान करते थे। इसके बाद वे रात्रि विश्राम करते थे। इस प्रकार हम देखते हैं कि उनकी दिनचर्या धर्म व अध्यात्म से ओतप्रोत थी जोकि किसी भी मानव को श्रेष्ठता प्रदान कर सकती है। यही कारण है कि माँ शूलिनी के उपासक राजा बघाट दुर्गासिंह जी अन्य राजाओं में ऋषिवत् आदरणीय माने जाते थे। हमें अपने उस महान् राजा के प्रजाक्षेत्र निवासी होने का सौभाग्यपूर्ण गौरव प्राप्त है। जय माँ बघाटेश्वरी शूलिनी।

।। श्रेष्ठ जीवन का आधार है श्रेष्ठ दिनचर्या ।।

''सर्वसुलभसन्ध्या सूर्यार्घ्यदान''

मनुष्य अपने शरीर के प्रति आसक्त होने से सांसारिक इच्छाओं का गुलाम हो जाया करता है। इस गुलामी से बदलते हुए संसार चक्र के साथ जीवात्मा का साम्य न होने से पग-पग पर समस्याएं आती रहती है। विश्व संचालक भगवान् की इच्छा का आदर करने से हम सुखी और सम्पन्न बन सकते हैं। इधर जाऊँ या उधर जाऊँ के झमेले से बचने के लिए हमें खोजना चाहिए कि हम संसार में किस प्रयोजन से आए हैं। समस्त सांसारिक वस्तुओं का आदि और अन्त केवल एक परमेश्वर है। हम उससे और केवल उसी के लिए पैदा हुए हैं। हमारा यह प्रियतम शरीर भी केवल उसी से और उसी के लिए पैदा हुआ है जिससे हम इतनी ममता रखते हैं। हम उसी की प्रेरणा से उसी के प्रयोजन के लिए इस धरती पर आए हैं। हमारी आंखें, जिह्वा और पैर आदि उसी की सेवा के लिए काम कर रहे हैं। संसार की सारी सक्रियता उसकी सेविका है।

विश्व संचालक भगवान् सूर्य हमारे प्रत्यक्ष प्रधान देवता हैं। इनका एकमात्र प्रयोजन 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' है। भगवान् के प्रयोजन की पूर्णता में ही हम सबके जीवन की सार्थकता है। भगवान् के प्रयोजन में बाधा डालने का मतलब है अपने सच्चिदानन्द स्वरूप जीवात्मा को नरक में डालना। हमको समझना चाहिए कि हम सब भी महान् अर्जुन की तरह भगवान् की कर्म सामग्री या टूल्ज हैं। संध्या के रहस्य को जाने और उसको किए बिना हम भगवान् के विश्वसंचालन रूप प्रयोजन में भागीदार नहीं बन सकते।

आओ, हम अपने परमप्रिय भगवान् सूर्य की शरण ग्रहण करें। सोचें कि भगवान् इस संसार चक्र के स्वामी हैं। हे भगवान्! शाधि माँ त्वां प्रपन्नम् अर्थात् हमें परोपकार करने की प्रेरणा प्रदान करें। हम आप के चरण पकड़ते हैं। हम को स्थायी आनन्द का रास्ता सुझाओ। आप समस्त जीवपरिवार के परमपूज्य इष्टदेवता हैं। हम आपके प्रजापालन रूप सत्कार्य में भागीदार होना चाहते हैं। आप ही जगजननी गायत्री रूप हैं। आपके विश्वसंचालन रूप कार्य में ही हमारे समस्त सुख निहित हैं क्योंकि हममें से हर एक जीव आपकी विश्वरूप प्रजा का ही एक अंग है।

हम लोगों में से जिनका जनेऊ हुआ है या किसी कारण जनेऊ नहीं हुआ है यदि वे अल्पसमय साध्य नित्य सन्ध्या करना चाहते हैं तो उनके लिए यहां सरल सन्ध्या रूप पौराणिक सूर्याध्र्य विधि सर्वजनकल्याणार्थ प्रस्तुत की जा रही है:-

सामग्री - गणेश जी की मूर्ति, घंटी, घिसा चन्दन, गुलाली, चावल, अक्षत, अर्धा, तष्टा, आचमन पात्र और शुद्ध जल

1. शिखा व तिलक करके कुशपवित्र धारण करें।

2. तीन आचमन करते हुए हाथ धोएं -
   ओम् केशवाय नमः ।
   ओम् माधवाय नमः ।
   ओम् नारायणाय नमः ।
   ओम् हृषीकेशाय नमः ।

3. अपने ऊपर जल छिड़कें -
   ओम् पुण्डरीकाक्षाय नमः

4. गणेश जी को गंधाक्षत व पुष्प चढ़ाएं -
   ओम् श्री गणपत्यादि पंचायतनदेवताभ्यो नमः।

5. चन्दन या गुलाली से भूमि पर त्रिकोण, गोला और वर्ग बनाएं उस पर गुलाली, चावल और पुष्प चढ़ाएं तथा उस पर ताम्बे का अर्घ्य रखकर उसे शुद्ध जल से भरें-
   ऊँ शन्नो देवीरभीष्टय ऽ आपो भवन्तु पीतये।

शंय्योरभि स्रवन्तु नः।।

6. उस जल में हाथ जोड़कर गंगा गादि तीर्थों के जलों का आवाहन करें-
ओम् गड्.गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिंकुरू ।।

7. पूर्व की ओर सामने शुद्ध तष्टे या थाली में लाल सूर्याकार बनाकर उस पर गन्धाक्षतपुष्पार्पण कर सूर्य भगवान् का ध्यान करें-
ओम् एक चक्ररथोपस्थो दिव्यःकनक भूषितः
स मे भवतु सुप्रीतः पद्महस्तो दिवाकरः।।

8. दाएं हाथ में अध्य पकड़कर बाएं हाथ से घंटी बजाएं, उपरान्त दोनों हाथों से सूर्याध्य चढ़ाएं-
ओम् एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजो राशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणाध्यं दिवाकर।।
साष्टांग प्रणाम करें- ओम् आदित्याय नमः।।

यह सूर्यार्घ्य विधि समस्त पूजाकर्मो में काम आती है अतः सर्वजनोपयोगी है। यदि इसको नित्य किया जाए तो यह अपने आप में सम्पूर्ण सन्ध्या है, विशेषकर समय की कमी वाले लोगों के लिए। सन्ध्या शेष जल व सामग्री हमेशा फूल वाले गमले आदि पवित्र स्थान पर ही गिराएं। अपवित्र स्थान पर गिराई गई पूजा सामग्री विपरीत फलदायक हो सकती है। मंगलमयी शुभ कामनाएं।

।। भगवान् का स्मरण और कर्तव्यपालन दोनों एक साथ में ।।

संक्षिप्त जीवनी-लक्ष्मी दत्त कौशिक

मेरा जन्म 24-08-1922 को ग्राम बैरटी, डाकखाना घट्टी (सपरून), तहसील व जिला सोलन में हुआ। पिता का नाम पण्डित दौलत राम जिनका निधन मेरी दस साल की आयु में ही हो गया था। वह बहुत नेक सीरत व प्रतापी इन्सान थे। हमारे दादा पण्डित धूमीराम जी की बड़ी प्रतिष्ठा थी वह एम.ई.एस. कसौली में उच्च पद पर नियुक्त थे उनके कार्यकाल में चार छावनियाँ कसौली, डगशाई, स्पाटू और जतोग बनी थी। उनकी कार्य कुशलता के कारण उन्हें बड़ी ख्याति और प्रतिष्ठा मिली और धन उपार्जन भी प्रचुर मात्रा में हुआ। वह बड़े उदार मन, जन हितकारी प्रकृति के स्वामी थे। उन्होंने इलाके में व निजी जनों की हर सम्भव सहायता की। राज दरबार बघाट में भी उनका बड़ा मान सम्मान था। शासक लोग उनसे रियासत के लिए भी और स्वयं अपने लिए भी कर्ज लेते थे। राज्य कुल के अन्य लोग भी उधार लेते रहते थे। ऐसा पुराने रोबकार व पत्र व्यवहार से पता चलता है। दादा जी के चार बेटे सोभा राम, आत्मा राम, लच्छी राम व दौलत राम थे। हमारे पिता सबसे छोटे थे।

मेरी प्रारम्भिक शिक्षा स्थानीय प्राईमरी स्कूल के उपरान्त हाई स्कूल सोलन व कण्डाघाट में हुई। पिता जी के निधन के कारण पढ़ाई अधूरी छूट गई और घरेलू जिम्मेदारियों तथा भाई बिरादरी निभाने में जुट जाना पड़ा। बड़े भाई साहब बालादत्त जी घरेलू आर्थिक स्थिति के कारण शादी होने के बाद अपनी ससुराल जनेडघाट (चायल) चले गऐ थे क्योंकि वहां की जिम्मेवारी भी उनके ऊपर आ गई थी।

सौभाग्य से मेरी शादी एक अत्यन्त सुलक्षणा पत्नी से हुई जिसके सहयोग से हमने थोड़ी जमीन से ही कठोर परिश्रम व छोटी-मोटी नौकरी से घरेलु भरण पोशन सुचारू रूप से किया। घर में माता जी और छोटा भाई गणेश दत्त शर्मा थे जिसको पढ़ाने में मेरी पूरी दिलचस्पी थी। मैट्रिक तक की पढ़ाई हाई स्कूल सोलन में फिर डी.ए.वी. कालिज अम्बाला से ग्रेजुएशन करवाया। उसकी शादी करवाकर उसकी इच्छानुसार मास्टर जी की नौकरी लगवा दी। फिर वह अपने परिवार को लेकर घर से विलग होकर अपनी नौकरी और गृहस्थी चलाते रहे। घर की कोई सुध-बुध नहीं ली। मितव्ययी स्वभाव थोड़े में ही गुजर बसर करने की आदत होने से न कभी उनसे और न बड़े भाई साहिब से या किसी और से याचना करने की जरूरत नहीं पड़ी। उलटे उन्हीं की यथा सम्भव सहायता करता रहा।

माता जी की सेवा पूरी तत्परता से की। उनकी जब तीर्थ यात्रा की इच्छा हुई तो पहले गंगोत्री, जमनोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ धाम यात्रा सम्पन्न हुई। दूसरी बार जगन्नाथ, रामेश्वरम द्वारिकाजी की यात्रा भी कुशलता पूर्वक परिचित संगियों के साथ पूरी हुई। हरिद्वार की यात्रा तो उन्होंने दो तीन बार की। उसके उपरान्त उनकी जो भी इच्छा हुई और जो भी आज्ञा हुई पूरी तत्परता के साथ निभाई।

जीवन की कुछ घटनाएं और उपलब्धियों में से कुछ इस प्रकार से हैं:-

1. मेरी दस वर्ष की आयु में महात्मा गांधी जी का आशीर्वाद प्राप्त करना। मुझे प्रसन्नता है कि न सिर्फ हिमाचल प्रदेश बल्कि अन्यत्र भी गिने-चुने ही लोग होंगे जिन्हें महात्मा जी का आशीर्वाद मिला होगा। घटना उस समय की है जब महात्मा जी सन् 1930-31 में शिमला कान्फ्रेंस से वापिस लौट रहे थे। हमारे चाचा जी श्री रामशरण जी भी महात्मा जी के श्रद्धालु व उपासक थे। वह उन दिनों शतचण्डी पाठ कर रहे थे और मौनव्रती थे। उन्होंने लिखकर मुझे सब बात समझाई और साथ चलने को कहा। महात्मा जी के आने तक वहां स्वागत के लिए विशाल जन समूह इकट्ठा हो गया था। प्रबन्धकों ने हमें यत्नपूर्वक महात्मा जी से मिलवाया। मैंने महात्मा जी को थैली भेन्ट की (थैली में ग्यारह सौ रूपये नकद मलिका के थे) और कहा कि ये भेंट श्री रामशरण जी की ओर से है। महात्मा जी ने प्रसन्न होकर मेरे सिर पर हाथ फेरा और कहा बेटा कांग्रेस के वफादार रहना। मुझे आज भी उनका आशीर्वाद भूला नहीं है। अक्सर उस महत्वपूर्ण क्षण की याद आती है और चित् प्रफुल्लित हो जाता है।

2. हमारे ''हैप्पी वैली'' इलाके में कुछ लोगों ने (जो लाईमस्टोन खान माफिया था) अन्धाधुन्ध कटान कर और पत्थर गिराने से इस ग्रीन वैली व पर्यावरण सन्तुलन को नुकसान पहुँचाया। पर्यावरण सन्तुलन बिगड़ने से चारों ओर गन्दगी व धूल-मिट्टी होने लगी। उनके खिलाफ संघर्ष छेड़ा और मुख्यमन्त्री व प्रधानमन्त्री को याचिका भेजी। तब भी स्थिति नियन्त्रण में नहीं आई तो हिमाचल हाई कोर्ट में जनहित याचिका दायर की और मुख्यमन्त्री और प्रधानमन्त्री को भेजी याचिकाओं की प्रतिलिपि भी संलग्न की। इलाके भर में हो रहे नुकसान के फोटोग्राफ भी पेश किए। इस पर हाईकोर्ट ने भी पूरी छानबीन कर के खानें बन्द करने का फैसला दे दिया। खान माफिया ने इस फैसले की अपील सुप्रीम कोर्ट में कर दी। हमारे पक्ष ने भी पूरी तत्परता से सारे साक्ष्य जुटा कर व पर्यावरण बिगड़ने का हवाला देकर सुप्रीम कोर्ट ने भी हमारे पक्ष की बात स्वीकार कर पूर्णरूप से खानें बन्द करने का निर्णय दे दिया और इस हैप्पी वैली को बर्बाद होने से बचाया। तब से लेकर इलाके में अमन चैन है और जो मनमुटाव पैदा हो गया था वह भी समाप्त हो गया।

3. निःस्वार्थ भाव से सामूहिक कामों में सदा ही रूचि रही है। आजादी मिलने के उपरान्त भी हमारे गांव में पीने के पानी की विकट समस्या थी। दूर जाकर बावड़ी से पानी लाना पड़ता था। इस समस्या से निजाद पाने के लिए एक स्कीम समझ में आई जो ग्रैविटी से स्वच्छ पानी गांव में ला दे। इसके लिए कठोर परिश्रम से डवैल्पमैन्ट विभाग से स्कीम मंजूर करवाई और अल्काथीन पाईप से पानी गांव में पहुंचाया। कुछ दिनों बाद जी.आई. पाईप बदलने का कार्य पूरा करवाकर स्कीम को सफल बनाया। कालान्तर में सरकार की उठाऊ पेय जल योजना से कई गांवों को जोड़ दिया गया है।

4. बैरटी गांव में खेतों की सिंचाई के लिए पानी घट्टी खड्ड के खलदार स्थान से करीब दो किलोमीटर से आता है। पुरखों ने कच्चा बन्धा बनाकर पानी लाया था और रात को टैंक में डाला जाता था वह भी कच्चा ही था। इस तरह बहुत सा पानी रिसाव द्वारा बन्धे व टैंक में बरबाद हो जाता था। मैंने बन्धा व टैंक को पक्का बनवाने का बीड़ा उठाया। कुछ हिस्सा गांव के आर्थिक सहयोग व सरकार के 92,000/- रूपये के सहयोग से स्कीम मंजूर हुई। स्कीम को सफल बनाने के लिए गांव से एक प्रबन्धक कमेटी बनाई और स्वयं अपनी निगरानी में बन्धा तैयार करवाया। टैंक को पक्का बनाने का काम बहुत जटिल था। चारों तरफ से कटिंग करवाकर टैंक को बड़ा आकार दिया और हर तरफ से छः फीट चैड़ी मियाद पूरे मसाले के साथ शुरू की और दस फीट की ऊंचाई तक दिवार कुशल कारिगरों के द्वारा तैयार करवाई। यह टैंक 45 फीट चैड़ा व 55 फीट लम्बा है जो पूरे इलाके में एक आदर्श टैंक है। आज 45 से 50 साल बीत जाने के बाद भी टैंक यथास्थिति में है। किसी किस्म का रिसाव आदि नहीं है। सरकार के कई पदाधिकारी भी देखकर प्रशंसा कर गए। टैंक निर्माण के बाद गांव के सभी भूमिदारों की भूमि को सिंचाई हेतु सब जगह तक बन्धे यथा स्थान तक पहुंचाए।

मुझे यह पुरानी यादें याद करके प्रसन्नता होती है। अन्य भी संघर्ष की घटनाएं तो अनेक हैं परन्तु वह सब अपने मुंह अपनी बड़ाई करने वाली बात होगी। इसलिए इतना ही काफी है।

हमारे गृहस्थ जीवन में प्रभु कृपा से तीन बेटे रमेश शर्मा, प्रदीप शर्मा व त्रिलोक कौशिक और तीन बेटियाँ माया शर्मा, उषा शर्मा और निर्मल शर्मा प्राप्त हुई जिनका पालन पोषण सुचारू रूप से हुआ और सभी को ग्रेजुएशन तक की पढ़ाई, सभी की शादियाँ भी सफल रही और सभी सुखी व सम्पन्न जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

मेरा सौभाग्य है कि प्रभु कृपा से बचपन से ही महान् संतजनों का सानिध्य व सत्संग प्राप्त होता रहा है उनके आशीर्वाद से मनोवृति निर्मल हो गई, नाम जप, नम्रता, परोपकार, सादगी, सहिष्णुता आदि सद्विचार ''जैसे राखे साईया वैसे रहिए'' आदि शिक्षा, उनके प्रवचनों द्वारा मिलती रही। शायद इन प्रवचनों व शिक्षाओं का ही प्रताप है कि आज 93-94 वर्ष की आयु में भी सत्पुरूषों का सतसंग सहज ही प्राप्त हो रहा है।

परम पिता परमेश्वर का अनेको नेक धन्यवाद है कि उनकी कृपा सदा ही बरसती रही है और मार्ग दर्शन करती रही है। मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूँ।

।। सफल व्यक्ति भगवान् का कृतज्ञ होता है ।।

सलोना सोलन

सोलन में मौसम का मिजाज तो हमेशा ही बेहतरीन माना जाता है। साथ ही स्वस्थ रहना हो तो सोलन की आबोहवा स्वास्थ्यवर्धक भी है। रिटायर लाइफ बढ़िया गुजारने यानी ओल्डएज के दौरान रहने के लिहाज से सोलन मुश्किलों भरा नहीं बल्कि सुगम व आसान समझा जाता है। यहां पहाड़ों की कठिन चढ़ाई-उतराई का भी कोई ज्यादा झंझट नहीं। गर्मियों के मौसम में पहाड़ी को वैसे भी लोग स्वर्ग से कम नहीं आंकते। अंग्रेजों के वक्त से हिमाचल के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल वाले शहरों में केवल चार नाम ही शिमला, धर्मशाला, चम्बा व मनाली शुमार थे। इनके बाद पर्यटकों की पसन्द का यदि कोई नया शहर उभरा है तो वह सोलन ही है। इस शहर को पूरे भारत से लोग काम-धंधे-रोजगार के लिये पसंद करते हैं। इसी के चलते बड़ी तादाद में लोग यहां बसेरा भी बना चुके हैं। कई वजहों से सोलन की प्रापर्टी के रेट शेयर बाजार की तरह उतरते-चढ़ते रहते हैं। इस बार शायद बड़ा कारण रहा सत्ता परिवर्तन। प्रदेश में 2013 में सत्ता परिवर्तन के बाद कांग्रेस सरकार ने भाजपा सरकार के शासन में जमीनों की खरीद-फरोख्त की फाइलें खोली ही थी कि प्रापर्टी डीलरों व ग्राहकों में हड़कंप मच गया। प्रापर्टी के रेट जहां थे वहीं थम गए, ग्राहक दिलचस्पी नहीं दिखा रहे हैं। फ्लैट्स-जमीनोंके बाजार व ग्राहक के बीच रस्साकसी भी जारी है। प्रापर्टी के लोकल जानकारों के मुताबिक, आने वाले दिनों में यह रेट आज के मुकाबले और लुढ़क सकते हैं। वहीं कहीं-कहीं आम लोगों में चर्चा यह भी रहती है कि कारोबार से जुड़े लोगों के प्रापर्टी में पौ बारह हैं।

एक ही प्रापर्टी कई हाथ बिक रही है जिसके कारण जमीन के रेट आसमान छूने लगे हैं। पुराने सरमाएदारों व दूसरे प्रदेशों के बिजनेसमैन-प्रापर्टी डीलरों ने यहां रियल एस्टेट में पैसा खूब निवेश किया है। कुछ लोगों का नजरिया है कि यहां कारोबार बीते दशक से लगातार फल-फूल रहा है। कई कथित प्रापर्टी डीलर स्थानीय किसानों की बेशकीमती जमीनों की झूठे दस्तावेजों के सहारे व कौड़ियों के भाव खरीद-फरोख्त में हवालात व कोर्ट के चक्कर में फंसे भी हैं। अकसर कहा जाता है कि किसानों को जमीन की कीमत न के बराबर ही मिली लेकिन रियल एस्टेट का कारोबार खूब चमका।

अमूमन यहां के जमीदार-किसान की आर्थिकी नकदी फसलों यानी फलों-सब्जियों पर निर्भर होने के कारण किसान जमीन बेचने के हक में नहीं रहता है। लेकिन रीयल एस्टेट के कारोबारियों का काम बगैर किसानों से जमीन खीद-फरोख्त के नहीं चल सकता। सोलन में जमीन के सीधे-सपाट प्लॉट तो मिलने मुश्किल हैं, पहाड़ी पर ही जेसीबी से कटिंग कर सड़कें व नये प्लाट तैयार किये जाते हैं। कुछ किसान बताते हैं कि हम प्रापर्टी डीलरों के चंगुल में फंसे हैं। थानों व अदालतों में भी जमीन की खरीद-फरोख्त को लेकर कई मामले धोखाधड़ी-ठगी के दर्ज हैं। कई संपत्तियां भू-सुधार एक्ट 118 के तहत सरकार के नाम चली गई हैं। कुछ के केस कोर्ट में लंबित पड़े हैं। एक पुलिस अधिकारी के अनुसार सख्त कानून के अभाव के चलते भू-माफिया पर शिकंजा कसना मुश्किल होता है। सोलन में अपरोक्ष तौर पर कई लोग प्रापर्टी के काम को पेशेवर के रूप में कर रहे हैं। पंजीकृत प्रापर्टी डीलरों की संख्या तो यहां न के बराबर ही है। यदि सोलन में आप कोई भी प्लाट व फ्लैट खरीदने-बेचने की सोचते हैं तो प्रापर्टी डीलर खुद ही आप तक पर्यटक गाइड की तरह पहुंचकर सौदेबाजी को अंजाम दिलवा देते हैं। कुछ भी हो, प्लाट-फ्लैट बिक रहे हैं और लोग बसने व बिजनेस्, दोनों मकसद से जगह खरीद रहे हैं। सोलन रस-बस रहा है, फैलता-फलता-फूलता जा रहा है, बेशक यह विकास रूक-रूक कर या धीमी गति से ही हो रहा है। जहां तक रेट का सवाल है जमीन-प्लाट का मामला रेट के मामले में फ्लैट आदि से हटकर है।

सोलन में पांच से दस लाख रूपये के बीच प्रति बिस्वा जमीन आप आराम से खरीद सकते हैं। पांच बिस्वा में तीन कमरों का मकान आराम से बन जाता है। सोलन राजमार्ग 22 पर दियूंघाट में यदि फ्लैट चाहिए तो वन बैडरूम कवर्ड एरिया, बालकॅनी 310 स्क्केयर फुट के साथ औसतन 2,548 रूपये प्रति स्क्केयर फुट के हिसाब से तय होता हैं। यह करीब 7-8 लाख में मिल जायेगा। इसी इलाके में टू बैडरूप, टू बाथरूम, बालकॅनी, कवर्ड एरिया 1450 स्क्केयर फीट औसतन 2,758 रूपये प्रति स्क्केयर फुट के रेट में करीब 40 लाख में मिल पायेगा। चम्बाघाट के नजदीक मल्टी स्टोरीज अपार्टमैन्ट में फ्लैट बुक करवाएं तो एवरेज थ्री बैड रूम, थ्री बाथरूम, थ्री बालकॅनी, कवर्ड एरिया 1440 फुट लगभग 53 लाख रूपये में मिलेगा। ठोडो खेल के लिये प्रसिद्ध ठोडो मोहल्ला ठोडो ग्राऊंड में बदल गया है। सोलन शहर का नवाबों से गहरा सम्बन्ध रहा, नवाबों की आज भी करोड़ों रूपयों की सम्पत्ति शहर में मौजूद है। कुछ मुस्लिम प्रापर्टी वक्फ बोर्ड के कब्जे में है। शहर के मालरोड पर आज की सेन्ट्रल लाइब्रेरी का भवन कभी गाजियाबाद के नवाब मरीन जंग का हुआ करता था। कर्नल असार अली की पुराने समय की कोठी यहां है। कर्नल असार अली की कभी सोलन में हत्या हो गई थी। प्रसिद्ध लेखक सलमान रश्दी की भी यहां टैंक

रोड पर कोठी है। पंद्रह साल पहले सलमान रश्दी यहां आकर ठहरे थे। उनका ज्यादातर बचपन सोलन में ही बीता है। सलमान रश्दी अपनी विवादित किताब 'सेटनिक वर्सेज' के कारण चर्चा में रहे हैं। यूं भी सोलन में काफी पुरानी प्रापर्टी जर्जर हालत में पड़ी है। शहर के मालरोड, गंज बाजार, लोअर बाजार व जिला सत्र कोर्ट के समीप ऐतिहासिक कोठियां देखने को मिलती है। जबकि अधिकांश स्थानों पर नए मकान बनकर तैयार हो चुके हैं। कुछ आबादी देह प्रापर्टी आधे-पौने दामों में कई सालों पहले बिक चुकी है। कुछ पुरानी इमारतों पर कोर्ट में विवाद होने के कारण बनने से महरूम पड़ी है। वहीं सोलन में हरठ गांव में मोहन हैरिटेज का निर्माण कार्य निरंतर चल रहा है। सोलन मालरोड पर चिल्ड्रन पार्क बुजुर्गों व युवाओं को काफी पसंद है।

कैसे बसा सोलन

कहा जाता है बघाट स्टेट का छोटा सा गांव सोलन रियासतकाल से ही शूलिनी देवी मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध था। 18वीं सदी में सोलन गांव माता के मन्दिर के इर्द गिर्द ही धीरे-धीरे राजा बघाट की राजधानी होने के कारण शीघ्रता से बसा था। आज उस स्थान पर सोलन क्षेत्रीय अस्पताल है। 1980 के बाद से सोलन का विस्तार बड़ी तेजी से शुरू हुआ। पुराने मकानों का जीर्णोद्धार हुआ और नए निमार्ण कार्य भी शुरू हुए। कालका शिमला राजमार्ग पर दियूंघाट, चम्बाघाट, कथेड़ व राजगढ़ रोड पर शामती व जौणाजी रोड पर करीब पांच हजार बीघा जमीन सोलन शहर को बसाने में खप चुकी है। राजस्व रिकार्ड में आज भी सदियों से चल रहे इन गांवों के नाम वैसे ही हैं। जहां खेती होती थी वहां आज बड़े पैमाने पर भव्य इमारतें मौल, फ्लैट्स, रिहायशी मकान बन चुके हैं। ग्राम एवं नगर नियोजन की वरिष्ठ प्लानर लीला श्याम मानती है कि टीसीपी सोलन में बड़ी देरी से शुरू हुआ। पिछले कुछ वर्षों से टीसीपी के सोलन में लागू होने के बाद अब टीसीपी नियमों को विभाग अमलीजामा पहनाता है। कथेड़ बाईपास, सपरून, रबौण, शामती, चम्बाघाट, बसाल सोलन के साथ घनी आबादी वाले गांव कालोनी व विहार में तब्दील हो चुके हैं। आटो, टैक्सी, मिनी बसों से सोलन के किसी भी कोने में पन्द्रह से बीस मिनट में पहुंचा जा सकता है बशर्ते ट्रैफिक जाम न हो।

।। पहाड़ों की रक्षा में ही हमारी अपनी रक्षा है ।।

बघाट (सोलन) की कला

सोलन जिले में जिस तरह से सांस्कृतिक और भौगोलिक विविधताओं का सामंजस्य है, ठीक उसी से मिलती-जुलती है यहां की कला। विविधिता का सामंजस्य हमें इस जिले की कला के क्षेत्र में भी मिलता है। सोलन जनपद में कलात्मक परिवेश की पहचान जहां एक ओर करोल पर्वत का उत्तुंग शिखर है तो दूसरी ओर नालागढ़ क्षेत्र का समतल भू-भाग। इसी भौगोलिक सीमाओं में सुरक्षित है सोलन जनपद की कला। सोलन जनपद में आवश्यकता है प्रागैतिहासिक कलात्मक खोज की क्योंकि सोलन जनपद में कला से निर्मित्त वस्तुओं की अधिक संभावनाएं हैं। आंशिक रूप से सोलन जनपद की कला के सम्बन्ध में जो जानकारी संग्रहीत कर पाए हैं उस पर सारगर्भित इकट्ठा ब्योरा इस प्रकार है।

(क) सोलन जनपद के करोल-पर्वत पर विश्व की सबसे बड़ी गुफा है। इस गुफा तक पहुँचने के लिए चम्बाघाट से करोल टीले तक पहुंचने के लिए लगभग चार किलोमीटर की सीधी चढ़ाई चढ़नी पड़ती है। वहां पहुंच कर गुफा के भीतर पत्थर की शिलाओं पर कुरेदी गई आकृतियां देखते ही बनती है। इन आकृतियों के गहन मंथन से पता चलता है कि ये आकृतियां प्राचीन काल में आदि मानव के समय की रही होंगी। इन आकृतियों के ऐतिहासिक संदर्भों की जानकारी का सहजानुमान सभी खोज का विषय हैं।

(ख) नालागढ़ क्षेत्र में खुदाई के समय कुछ ऐसे औज़ार मिले हैं जो पत्थर के बने हैं और जिनका सम्बन्ध पाषाण काल की सभ्यता से जोड़ा जाता है।

(ग) रोपड़ जिले के कुछ क्षेत्रों में भी खुदाई के समय ऐसी वस्तुएं मिली हैं जिनका सम्बन्ध सिन्धु घाटी की सभ्यता से जोड़ा जाता है।

(घ) परमाणु से कसौली जाती हुई सड़क की खुदाई के समय कुछ ऐसे सिक्के भी उपलब्ध हुए है जो कनिष्क के समय के हैं। इन ताम्बों के सिक्कों में कनिष्क राज्य का चित्र और संख्या अंकित हैं।

(ड.) सोलन जनपद के कुनिहार क्षेत्र में सन् 1954 में स्कूल के निर्माण के लिए खुदाई करते समय कुछ सिक्के प्राप्त हुए थे जिन पर रज़िया बेगम के चित्र और सन् अंकित हैं। स्पष्ट है कि रज़िया बेगम अपने आखिरी दिनों में कुनिहार रियासत में आई होगी। यह सिक्के आज भी राणा विजय सिंह कुनिहार के पास सुरक्षित हैं।

सिक्कों और अन्य कलात्मक वस्तुओं के पश्चात् सोलन जनपद की चित्र कला का उल्लेख करना भी यहां अतिशयोक्ति न होगा। इतिहास साक्षी है कि सोलन जिला पहले नालागढ़, बेजा, कुठाड़, महलोग, बघाट, कुनिहार, बाघल तथा क्योंथल राजाओं के प्रशासन में था। नालागढ़ के शासक चन्देरी बुन्देलखण्ड के रहने वाले थे। बाघल और बघाट के शासक मध्य प्रदेश तथा उज्जैन से सम्बन्ध रखते थे। मांगल के शासक मारवाड़ से आए थे। कुनिहार तथा कुठाड़ के शासक जम्मु के रहने वाले थे। इन शासकों का प्रत्यक्ष या परोक्ष का सम्बन्ध मुगलिया वंशजों से भी रहा। कालान्तर में जैसे-जैसे ये शासक इन रियासतों में आए अपने साथ कलाकारों को भी लेते आए। अस्तु संगीतकारों, चित्रकारों, शिल्पकारों तथा अन्य कलाकारों का इन राजाओं के साथ आना स्वाभाविक था। यहां हमें यह स्वीकार करना पड़ता है कि चित्रकला के विभिन्न नमूने आज भी इन भूतपूर्वक रियासतों के राज महलों में सुरक्षित हैं। सोलन जनपद की जिन भूतपूर्व रियासतों में पहाड़ी चित्रकला आज भी सुरक्षित है उसका सार गर्भित ब्योरा इस प्रकार है:-

1. **बाघल के अर्की पैलेस में**,

हिमाचल के अस्तित्व में आने से पूर्व बाघल एक रियासत थी जिसकी राजधानी अर्की और राजाओं के महल भी अर्की मुख्यालय में बने थे। अर्की के महलों में पहाड़ी चित्रकला के अछूते नमूने उपलब्ध होते हैं। 1643 में सभावन्द ने अर्की में अपना किला तथा राजभवन बनाया। 1670 में राजधानी की स्थापना हुई। राजा का हुक्का पीते हुए बनाया गया चित्र इस समय का है जो आज भी वर्तमान नरेश राजेन्द्र सिंह के यहां सुरक्षित है। 1670–1727 के बीच राजा मेहर चन्द के शासन काल में भी बहुत से चित्र बनाए गए। अर्की के शासकों की नाक की बनावट इन चित्रों में अर्की के प्रशासकों की अलग पहचान कराती है। राजा मेहरचन्द के हुक्का पीते, घोड़े की सवारी करते, कुल्लु के राजा जयसिंह से बात चीत करते चित्र मनमोहक और आकर्षक बने हैं। 1750 में राजा मूल चन्द जिन्होंने बिलासपुर और नालागढ़ के राजाओं से लड़ाइयां लड़ी थी, उन का चित्र भी हुक्का पीते अत्यन्त आकर्षक बन पड़ा है। यह चित्र आज भी राजा राजेन्द्र के पास सुरक्षित है। 1805 से 1815 तक अर्की पर गोरखों का शासन रहा। 1628 से 1840 तक शिवसरन सिंह का शासन रहा। उन्होंने कांगड़ा के राजा को अपनी शरण में रखा। शिवसरन सिंह ने अर्की में दीवानखाना बनवाया जिसे 1850 में किरन सिंह ने भीति चित्रों से सजवाया। यह भीति चित्र आज भी

सुरक्षित हैं परन्तु इनके संरक्षण की आवश्यकता है। समय के अंतराल में ये चित्र धीरे-धीरे खराब होने लगे हैं। राजा राजेन्द्र सिंह आज भी अर्की के पुराने महल में रहते हैं, जहां भीति चित्रों का अनूठा संग्रह है। इन चित्रों में शासकों के चित्र, विष्णु अवतार, नायक-नायिका भेदों के चित्र भगवान कृष्ण की लीलाओं के चित्र हैं। यहां यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि राजा अर्की के संरक्षण में पड़े महलों के पहाड़ी चित्रकला के नमूने चम्बा के भूरी सिंह म्यूज़िम को भी मात दे सकते हैं।

2. **नालागढ़ पैलेस में**,

सोलन जिले के भीतर नालागढ़ की चित्र शैली भी देखते ही बनती है। नालागढ़ राज्य की स्थापना 11वीं शताब्दी में हुई। यहां के शक्तिशाली राजा रामसरन सिंह थे जिन्होंने 1788 से 1848 तक 60 वर्ष शासन किया। 11वीं शताब्दी से लेकर 18 शताब्दी तक यहां पर भी पहाड़ी चित्रकला का सम्यक् विकास हुआ तथा 16वीं शताब्दी के मध्य यहां की पहाड़ी चित्रकला अपनी चरमसीमा पर थी। राजा रामसरन सिंह के उत्तराधिकारी राजा बृजमोहन सिंह के यहाँ भी लघु पहाड़ी चित्र शैली के अनुपम नमूने सुरक्षित थे। ये चित्र पुरानी पहाड़ी चित्र शैली के द्योतक हैं तथा 17 वीं 18 वीं शताब्दी के जान पड़ते हैं। वृजमोहन सिंह की बैठक की दीवारों में राजा रामसरन सिंह तथा केसरी सिंह के चित्र बने हैं। 1788 से 1857 के बीच राजा रामसरन सिंह तथा वृजमोहन सिंह के दरबार में दो विख्यात चित्रकार नरसिंह दास ब्राह्मण तथा हरिसिंह राजपूत थे। इन्होंने बहुत से लघुचित्रों का यहां निर्माण किया। इन कलाकारों के बनाए हुए चित्र राजा वृज सिंह के पास सुरक्षित थे। इनके बनाए हुए दो चित्र चण्डीगढ़ संग्रहालय मे भी देखे जा सकते हैं। इन कलाकारों द्वारा बनाए गए चित्रों में प्राकृतिक परिवेश, पशु-पक्षियों के भावनात्मक चित्र, रामायण कथा से सम्बन्धित चित्र जिसमें वानर सेना, हनुमान और सुग्रीव के चित्र मनमोहक हैं। इन चित्रों को राजा वृजेन्द्र सिंह ने आज भी सुरक्षित रखा है।

3. **बघाट की चित्रकला**

बघाट के भूतपूर्वक नरेश राजा दुर्गा चंद भी कला प्रेमी थे। उनके शासन काल में भी पहाड़ी चित्र कला का विकास हुआ। उनके शासन काल में बने नरसिंह मन्दिर में उकेरी गई चित्रकला भी अनुपम है। छत पर बने अलंकरण जो लगभग सौ वर्ष पुराने हैं चित्रकला का अनूठा उदाहरण है। प्रायः मन्दिर के भीतर धूप और हवन के धुएं से ये चित्र धूमिल पड़ गए है। इनकी सुरक्षा की आवश्यकता है।

4. **कसौली-अमृता शेरगिल से जुड़ी कला**

सोलन जिला जहां उत्तरी भारत की प्राचीन कलात्मक परम्पराओं से जुड़ा रहा यह आधुनिक भारतीय कलाओं से भी अछूता न रहा। कसौली में अमृता शेरगिल के परिवारजनों के घर पर आज भी उनके चित्रों को रंगा हुआ देख कर कहा जा सकता है कि सोलन जनपद की आज भी चित्रकला सुरक्षित है।

5. **कुनिहार की चित्र कला**

कुनिहार हिमाचल प्रदेश से पहले एक छोटी सी रियासत थी जिसके शासक 10वीं शताब्दी के आसपास अखनूर जम्मू से आए थे। कुनिहार के अंतिम शासक राणा हरदेव सिंह के पुराने महलों और मन्दिर के भीतर कांगड़ा चित्र शैली के चित्र आज भी देखे जा सकते हैं। इन चित्रों में अधिकांश पौराणिक सिक्कों के कथाचित्र कृष्णलीला और रामायणकथा सम्बन्धी चित्र विद्यमान हैं। धीरे-धीरे इन चित्रों को सुरक्षित रख पाना कठिन हो गया है। बहुत से चित्र जीर्णोद्वार के समय नष्ट हो गए। ऐसा समझा जाता है कि कुनिहार नरेशों के सम्बन्ध कागड़ा के राजाओं से थे और वहीं से कलाकारों ने आकर इन चित्रों को उकेरा था।

उपरोक्त उपलब्ध सूत्रों के आधार पर हमें यह स्वीकार करना होगा कि सोलन जनपद में भी कलात्मक परिवेश का इतिहास संचित है परन्तु आवश्यकता है इसे सुरक्षित रखने की। यदि इन कलाकृतियों का प्रतिलेखन, फोटोग्राफी या वीडियो फिल्म के द्वारा अभी न हो पाया तो कालान्तर में दुर्लभ चित्र शैली के नमूने समय के गर्भ में कहीं लुप्त हो जाएंगें।

।। कला वह है जो ईश्वर में आस्था पैदा करे ।।

हिमाचल प्रदेश का निर्माण

।। राजा दुर्गासिंह की भूमिका अविस्मरणीय है ।।

1946/47 में पहाड़ी रियासतों के छोटे-छोटे रजवाड़ों में काफी परेशानी थी, उनके महाप्रभु अंग्रेजों की प्रभुसत्ता समाप्त होने जा रही थी और उधर प्रजामण्डलों द्वारा चलाए आन्दोलन जोर पकड़ रहे थे। बिलासपुर, मण्डी सुकेत, बुशेहर और टिहरी गढ़वाल जैसी बड़ी-बड़ी रियासतों में राजनैतिक गतिविधियां जोरों पर थी। हम लोग छोटी-छोटी रियासतों को मिला कर पहाड़ का एक प्रान्त गठित करने के काम में लगे थे। इस विषय में 22 अप्रैल 1945 को रोहड़ू प्रजा सम्मेलन और 11 नवम्बर 1946 को रामपुर में मेरी अध्यक्षता में हुए विराट् अधिवेशन में रियासतों के एकीकरण के विषय में प्रस्ताव पास किए, जो सारे समाचार पत्रों में छपे।

भूतपूर्वक राजा दुर्गा सिंह बघाट एक सुधारक और राष्ट्रवादी विचार के व्यक्ति रहे। उन्हें मैं, श्री भागमल सोहठा और स्व. श्री सूरत राम प्रकाश देहली टेहरी हाउस में जलुाई 1943 को मिले और उनको जनता की भावनाओं के अनुरूप जनता के हित में छोटी-छोटी रियासतों को मिलाकर एक प्रदेश (प्रान्त) गठित करने में सहयोग देने का आग्रह किया और राजा साहब ने शिमला की पहाड़ी रियासतों के नरेशों को इस विषय में सहमत कराने का आश्वास दिया।

मण्डी, सुकेत, चम्बा, बिलासपुर और सिरमौर को छोड़ शेष 26 छोटी बड़ी रियासतों के राजाओं राणों की स्वीकृति प्राप्त करने में श्री दुर्गा सिंह सफल हो गए। इन सब राजागण ने बघाट के राजा को पूरे अधिकार देकर अपना प्रतिनिधि चुना और उसी आधार पर राजा दुर्गा सिंह ने दिसम्बर 1947 में शिमला हिल स्टेट्स के सब राजाओं को लिखा कि वह अपने-अपने राज्य में दस हजार की जन संख्या से जनता का एक प्रतिनिधि चुनने का अधिकार वहां की राजनैतिक पार्टीयों (प्रजामण्डल) को दें। थोड़े समय में विधिवत् चुनाव करवाना सम्भव नहीं होगा। दस हजार जन संख्या से कम आबादी वाले राज्य का एक प्रतिनिधि होगा। यह प्रतिनिधि स्वतन्त्रता दिवस 26 जनवरी को सोलन में सविधान सभा के रूप में अपना अधिवेशन करेंगे। इस के फलस्वरूप प्रायः सब रियासतों से प्रजामण्डल के नेताओं को ही मनोनीत किया गया था। जिन में बुशेहर से मेरे साथ दूसरे नेगी ठाकुर सेन, नेगी विर्जानन्द आदि जुब्बल के ठाकुर भागमल सोहठा, श्री शालिग राम तेजटा, ठ्योग से सूरत राम प्रकाश, क्योंथल के स्व. बाबू हूमानन्द, श्री देवीराम और विजयकुमार, पण्डित श्री भास्करानन्द भजी से, श्री हीरा सिंह पाल अर्की से, धामी के श्री सीता राम शर्मा कुम्हार सैन से श्री केवलराम चन्देल ओर मलहोग से श्री चिन्तामणी आदि के नाम उल्लेखनीय है।

पण्डित पद्मदेव का नाम बुशैहर प्रजा मण्डल ने उन्हें परमार समर्थक होने के कारण सूची में नहीं रखा था।

राजाओं के प्रतिनिधि के रूप में राजा दुर्गा सिंह बघाट इस अधिवेशन के लिए मनोनीत हुए थे।

26 जनवरी 1948 को जनता के प्रतिनिधि सोलन में एकत्रित हुए। सर्वसम्मति से राजा बघाट को सभा का अध्यक्ष चुना गया। इस संविधान सभा ने एक प्रस्ताव द्वारा इन सब रियासतों को एक प्रशासनिक इकाई के रूप में गठित करने का प्रस्ताव किया। जिस का नाम मेरे सुझाव पर हिमाचल प्रदेश रखा गया। राजाओं के प्रतिनिधि श्री दुर्गा सिंह ने शासन के सब अधिकार जनता के प्रतिनिधियों को सौंप दिए। इस प्रकार हिमाचल प्रदेश भारत के मानचित्र पर एक नया राज्य गठित हुआ, जिसके समाचार देश के सब समाचार पत्रों में छपे।

डॉ. परमार और उनके साथी बड़े परेशान हुए कि शायद राजनैतिक तौर पर उन्हें हिमाचल प्रशासन में कोई स्थान न मिले, शिमला हिल स्टेट्स के प्रजा मण्डल कार्य कर्ताओं में केवल पण्डित पद्म देव डॉ. महोदय के साथ थे। यह लोग भी सोलन पहुँचे इधर-उधर लोगों में भ्रान्ति फैलाने का यत्न किया परन्तु किसी ने इन्हें नहीं सुना। तब वे खिन्न होकर देहली दौड़े।

सरदार पटेल और सारे केन्द्रीय नेता उस समय छोटी-छोटी रियासतों को आस पास के प्रान्तों में मिलाने के पक्ष में थे और वह इन पहाड़ी रजवाड़ों का एक पृथक् राज्य बनाने के विरूद्ध थे। डॉ. परमार ने इस स्थिति से लाभ उठाने का अच्छा अवसर पाया। वह कुछ साथियों को लेकर सरदार पटेल से मिले और कहा कि सोलन में जो कुछ हुआ वह वहाँ के रजवाड़ों के लोगों का तमाशा था, जो हिमाचल प्रदेश नाम से एक राज्य बनाना चाहते हैं और हम लोग इन सब रियासतों को बिना शर्त केन्द्र में मिलाने के पक्ष में हैं। जिस से आप जैसा उचित समझे भविष्य के लिये इन छोटे-छोटे रजवाड़ों का निर्माण करें। सरदार पटेल ने हमें भी बुलाया। मैं, सर्व. श्री भागमल सोहठा, हीरा सिंह पाल, सूरत राम प्रकाश और भास्करानन्द उन्हें मिले तो हम ने उन्हें सारी स्थिति से अवगत कराया कि शिमला के पहाड़ी राजाओं ने सारी सत्ता जनता के प्रतिनिधियों को सौंप कर हिमाचल प्रदेश में अपने राज्यों का विलय कर

दिया है। पहाड़ के लोग अपना एक पृथक राज्य चाहते हैं। आप मण्डी, सुकेत, बिलासपुर और चम्बा तथा सिरमौर को हिमाचल में मिलाने के काम में हमारा पथ प्रदर्शन करें और अपना आशीर्वाद दें।

सरदार पटेल ने अपना रोष प्रकट करते हुए कहा कि यह छोटे-छोटे राज्य देश के हित में नहीं है। आप लोगों को बड़े सूबे में मिल कर बड़ा दिल और दिमाग बनाना चाहिए। मुझे इन रियासतों के कुछ कार्यकर्ता पहिले भी मिले हैं, आप डॉ. पट्टाभि को मिलें, उसके बाद हम डाॅ. पट्टाभि से मिले।

उन्होंने सरदार पटेल की योजना बताई कि आप लोग मण्डी, सुकेत, चम्बा या बिलासपुर आदि किसी कमजोर सी रियासत में नाम मात्र का आन्दोलन केवल प्रचारार्थ करें, समाचार पत्रों में इस की खूब बढ़ा चढ़ा कर खबरे निकालें, जिस से स्टेट मनिस्ट्री को वहां के शासन में हस्ताक्षेप का कारण मिले। बाकी स्थिति तब सरदार पटेल स्वयं सम्भाल लेंगे।

हम ने पट्टभि से निवेदन किया कि शिमला हिल स्टेट्स के राजागणों ने पहिले ही अपने सारे अधिकार और सत्ता एक प्रस्ताव द्वारा जन प्रतिनिधियों को सौंप दिए हैं और अपने राज्य का हिमाचल प्रदेश में विलय कर चुके हैं। अब स्वतन्त्र भारत में इन पहाड़ी राजागण को उनकी रियासतों के विलीनि करण पत्र पर हस्ताक्षर कराना कोई समस्या नहीं है। यदि सरदार पटेल हिमाचल प्रदेश को एक अलग राज्य के रूप में मान्यता दें तो हम इस समय हिमाचल से बाहर रही पहाड़ी रियासतों चम्बा, मण्डी, सुकेत, बिलासुपर और सिरमौर को इस में मिलाने के लिए सब कुछ करेंगे। परन्तु इन पहाड़ी रियासतों को सरदार पटेल की योजनानुसार पंजाब और उत्तर प्रदेश में मिलाना वहां की पिछड़ी जनता के हित में नहीं है।

इससे कुछ समय पहिले डॉ. परमार और पण्डित पद्मदेव ने चम्बा का दौरा करने के बाद देहली में एक प्रेस कान्फ्रेन्स में वक्तव्य दिया था कि चम्बा की रियासत को तुरन्त पूर्वी पंजाब में मिलाना वहाँ की जनता और देश के हित में होगा। यह समाचार 22-01-1948 को बी.एन.एस. के हवाले से सब समाचार पत्रों में छपा जिन की कटिंग मेरे पास सुरक्षित है। इससे प्रत्यक्ष था कि डॉ. परमार पहाड़ी इलाकों के पृथक प्रदेश के पक्ष में नहीं थे।

दूसरी ओर 11-11-1946 की मेरी अध्यक्षता में हुए प्रजा मण्डल के रामपुर अधिवेशन में एक प्रस्ताव द्वारा माँग की गई थी कि सब पहाड़ी रियासतों को मिला कर एक प्रान्त गठित किया जाए। यह समाचार उस समय लाहौर से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों प्रताप आदि में 26-11-1946 को छपा था। इस अधिवेशन में शिमला के प्रसिद्ध कांग्रेस नेता स्व. चैधरी दीवान चन्द और तत्कालीन शिमला कांग्रेस कमेटी के मन्त्री कामरेड अमीचन्द (भूत पूर्वक उपाध्यक्ष हिमाचल विधान सभा) भी उपस्थित थे (सम्मेलन के फोटो भी सुरक्षित हैं)। 17-11-1947 में देहली से छपने वाले दैनिक हिन्दी के हिन्दुस्तान में मेरा पूरे पृष्ठ का एक लेख नक्शे सहित छपा था जिस में टेहरी गढ़वाल से चम्बा तक कांगड़ा सहित सारे पहाड़ी इलाकों को मिला कर एक प्रान्त बनाने का सुझाव था। उस समय डाॅ. परमार का राजनैतिक जन्म भी नहीं हुआ था। पण्डित पद्म देव पहाड़ के लोगों के हित चिन्तक और देश भक्त रहे हैं, इस में कोई सन्देह नहीं परन्तु एक बार हमारे विरोध के कारण इन डाॅ. महाशय को कन्धे पर उठाने और अपने को सत्ता में बनाए रखने के कारण अन्दर की अन्दर कुढ़ने पर भी डॉ. परमार से चिपके ही रहे।

केन्द्रीय नेताओं को खुश करने और सोलन में घोषित हिमाचल प्रदेश की योजना को असफल बनाने के लिए शिमला में एक योजना बनी कि प्रचारार्थ तत्कालीन सुकेत राज्य की करसोग तहसील में, जहां एक नाईब तहसीलदार और 5-6 साधारण देहाती सिपाही रियासत की ओर से तहसील का काम चलाते थे और अब अग्रेजों के जाने के बाद सुकेत तो क्या भारत के बड़े-बड़े महाराजा भी पंगु और असहाय बन चुके थे ऐसी स्थिति में खून लगा कर शहीद होना तो बड़ा सरल काम था, इसलिए कुछ कार्यकत्र्ता करसोग भेज कर समाचार पत्रों को जनआन्दोलन के समाचार और केन्द्रीय सरकार को तारों आदि द्वारा 5-6 दिनों तक सूचना भेजी जाए। इसी के अनुसार सुकेत सत्याग्रह का नाटक रचा गया।

पण्डित पद्मदेव अपने कुछ शिष्यों के साथ करसोग गए और परमार साहब शिमला में बैठे उस समय यहां से ही छपने वाले अंग्रेजी के अखबार ट्रिब्यून के विशेष संवाददाता श्री राजेन्द्र (पंजाब राज्य के लोक सम्पर्क विभाग में वर्तमान उपायुक्त) से आकर्षक शीर्षक से समाचार छपवाने के काम में लगे। यह तथा कथित सत्याग्रहियों की मण्डली अपने नाच गाने करते हुए निर्विरोध तत्तापानी से चल कर सुन्दर नगर 6-7 दिनों में पैदल पहुँचे। समाचार पत्रों में जोरदार खबरें छपी कि ''सुकेत राज्य पर प्रजा मण्डल ने अधिकार कर लिया है और वहाँ के शासक ने हथियार डाल दिए हैं।''

इन तथा कथित हिमाचल के निर्माता का उन सुविधाजनक परिस्थितियों में भी स्वयं सुकेत जाने का साहस न हुआ अपितु पण्डित पद्मदेव के साथ उस समय के अपने साथी पण्डित शिवानन्द रमहोल को ही भेजा था।

सरदार पटेल की बनाई योजनानुसार तार द्वारा सुकेत और पहाड़ी रियासतों के दूसरे राजे राणों को 5 मार्च 1948 को देहली बुलाया गया। प्रायः सभी राजे स्वयं अथवा कुछ के प्रतिनिधि देहली पहुँचे, जिन में शिमला हिल स्टेट्स के वह राजे राणे भी थे जिन्होंने अपने राज्यों का विलय हिमाचल प्रदेश में कर दिया था। हम लोग जो हिमाचल प्रदेश के निर्माण का समर्थन कर रहे थे, भी उस समय देहली पहुँचे।

मिनिस्ट्री आफ स्टेट्स के कार्यालय में इस मन्त्रालय के सचिव स्व. श्री सी.सी. देसाई आई.सी.एस. की अध्यक्षता में सब रजवाड़ों तथा उन के प्रतिनिधियों की बैठक हुई। हम लोग भी दर्शक के रूप में वहाँ बैठे थे। सब राजे राणों के सामने मेज पर राज्य विलीनीकरण पत्र की एक-2 प्रति रखी गई और श्री देसाई ने अपना भाषण इस प्रकार आरम्भ किया:-

नरेशगण, आप को ज्ञात है कि सब राज्यों में जन आन्दोलन जोरों पर हैं, एक रियासत सुकेत ने तो जनता के आन्दोलन के सामने घुटने टेक दिए हैं। अब आप लोगों के लिए अपने-अपने राज्य की शान्ति व्यवस्था बनाए रखना असम्भव है। इस लिए सरदार की यह इच्छा और आदेश है कि आप लोग अभी और यहाँ इस विलिनीकरण पत्र पर अपने हस्ताक्षर करें। ध्यान रखें, यदि आप महान सरदार की इच्छा और आदेश पालन में चूके तो आप के प्रशासन को केन्द्रीय सरकार अपने हाथ में ले लगी और आप लोग अपने भत्ते और विशेषाधिकार से भी वंचित हो जाऐंगे।

इस पर कई शासकों के हाथ थर-थराने लगे और भजी के नवयुवक राणे ने सब से पहले हस्ताक्षर कर दिये। अब राजा दुर्गा सिंह बघाट उठे और उन्होंने कहा:-

देसाई महोदय, शिमला हिल स्टेट्ज के सब राजागण ने पहिले ही अपनी-अपनी रियासतों का विलय पहाड़ की जनता की इच्छा और हित के अनुसार स्वेच्छा से एक राज्य हिमाचल प्रदेश में कर दिया है जिसकी सत्ता जनता के प्रतिनिधियों को विधिवत 26 जनवरी को सोलन में सौंप दी गई है। अब यदि केन्द्रीय सरकार यह आश्वासन दे कि हिमाचल प्रदेश एक पृथक राज्य के रूप में रहेगा और उस में दूसरी पहाड़ी रियासतों को, जो अभी तक हिमाचल में नहीं मिली, उन्हें भी शीघ्र इस में मिलाया जाएगा, तो हम से जहाँ चाहें हस्ताक्षर करवाएं। ये रियासतें हमारे पास जनता की धरोहर है। इस लिए हम भोली-भाली जनता के हित के विरूद्ध कोई काम नहीं करेंगे इस समय हम ही पहाड़ की जनता के प्रतिनिधि हैं:-

इस पर देसाई साहब बड़े रोषपूर्ण शब्दों में बोले:- हाँ, राजा बघाट, आप को सरदार पटेल से भी जनता की अधिक चिन्ता है। वास्तव में आप हिमाचल के प्रथम राजप्रमुख बनने का स्वप्न देख रहे हैं। जनता तो आप लोगों का मुंह भी नहीं देखना चाहती। यह सुनकर इस साधु स्वभाव राजा के आखों में आंसू आ गए और उन्होंने उठ कर रोष भरे शब्दों में उत्तर दिया:-

देसाई महोदय, यह मत भूलिए कि आप का दिमाग अंग्रेजी राज्य में आई.सी.एस. के अहंकार से भरा है। आप स्वतन्त्र भारत के गणमान्य व्यक्तियों का अपमान कर रहे हैं। हम हिमाचल प्रदेश को एक अलग राज्य बनवा के रहेंगे, मुझे न तुम्हारे भत्ते की चिन्ता है और न राज प्रमुख बनने का लोभ। सरदार पटेल हमारे भी नेता हैं। हम उन से मिलेंगे, उनके नौकर से बात करना हम अपना अपमान समझते हैं। यह कहते हुए राजा दुर्गा सिंह ने दूसरे साथी नरेशों सहित उस बैठक से वाक आउट किया।

मैं, ठाकुर भागमल, श्री हीरा सिंह पाल और स्व. सूरतराम प्रकाश उसी शाम फिर राजा बघाट और उनके दूसरे साथियों से मिले और उन्होंने सरदार पटेल से मिल कर हिमाचल प्रदेश को मान्यता दिलाने पर जोर देने का परामर्श दिया। हमें पता था कि यदि उस अवसर पर सरदार पटेल से हिमाचल का पृथक राज्य बनाने बारे आश्वासन न मिले तो यह सारी रियास्तें पंजाब, सिरमौर और उत्तर प्रदेश में मिलादी जाएंगी। डॉ. परमार और उनके साथी तो इस दिशा में काम कर ही रहे थे और केन्द्रीय नेताओं की भी यही इच्छा और यत्न था।

दूसरे दिन राजाओं का शिष्ट मण्डल सरदार पटेल से मिला। उसके सन्मुख सी.सी. देसाई के व्यवहार पर रोष प्रकट करते हुए यह माँग रखी कि यदि सरदार पटेल विलीनीकरण पत्र पर यह लिखवाए कि हिमाचल प्रदेश एक पृथक राज्य रहेगा, जहाँ का प्रशासन दूसरे प्रान्तों की भान्ति जनता के प्रतिनिधियों के हाथ में होगा तो हम हस्ताक्षर करेंगे। काफी वार्तालाप के बाद सरदार पटेल सहमत हो गए और उन्होंने शिष्ट मण्डल को श्री वी.पी. मेनन से मिलने को कहा। जब यह लोग मेनन से मिले तो उसने देसाई की धृष्टता के लिए क्षमा मांगी और सरदार पटेल के आश्वासन अनुसार लिखित रूप में यह शर्त मानी कि ''हिमाचल प्रदेश एक पृथक् इकाई के रूप में आरम्भ में केन्द्र के अधीन चीफ कमीशनर द्वारा प्रशासित होगा और फिर उसे उपराज्य पाल और राज्य पाल का पूर्ण राज्य बना दिया जावेगा'' इस आशवासन के बाद यहाँ के राजागण ने हस्ताक्षर किए। मण्डी और सिरमौर के

राजाओं ने अपने वहाँ जनता द्वारा चुने प्रतिनिधियों से परामर्श ले कर हस्ताक्षर करने का वचन दिया। राजा बिलासपुर के प्रतिनिधि ने भाखड़ा बान्ध से विस्थापित होने वाले लोगों की समस्याओं के कारण कुछ समय मांगा। उसी समय यह निर्णय भी किया गया कि 14 अप्रैल तक विलीनीकरण का काम पूरा करके 15 से प्रदेश का कार्य एक पृथक प्रशासनिक इकाई के रूप में चलेगा। इस प्रकार हिमाचल प्रदेश की नींव रखी गई। इस में डॉ. परमार का कितना योगदान रहा, यह पाठकों के सन्मुख है। यह ठीक है कि इन्हें और इन के कुछ साथियों को केन्द्रीय नेताओं के प्रति इस वफादारी के फलस्वरूप चीफ कमीशन की सलाहकार समिति का सदस्य नामजद किया गया, इसी के कारण उसके पश्चात डॉ. परमार अपने गुट के कुछ साथियों सहित यहाँ की राजनीति पर छाते रहे।

इन्हीं दिनों रियास्ती प्रजामण्डल भी कांग्रेस में मिलाए गए। हिमाचल के लिए प्रदेश कांग्रेस समिति (पी.सी.सी.) अखिल भारतीय कांग्रेस प्रधान द्वारा हेड आक/एडहाक नामजद हुई, जिस का प्रधान डॉ. परमार ही नामजद हुआ। मैं और पण्डित पद्म देव भी प्रदेश समिति के सदस्यों में थे।

मैंन अखिल भारतीय कांग्रेस पर हिमाचल प्रदेश में चुनाव द्वारा हेड होक प्रदेश समिति को बदलने का जोर दिया। काफी समय तक जब डाॅ. परमार चुनाव टालते रहे तब तत्कालीन कांग्रेस प्रधान जो राष्ट्रपति कहलाते थे स्व. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने 7-10-1948 में कांग्रेस के महामन्त्री आचार्य जुगल किशोर को पिलानी से अंग्रेजी में पत्र लिखा, जिसके कुछ अंश अंग्रेजी में इस प्रकार है:-

----

डॉ. पट्टाभि सीता रम्मया ने 24-04-1947 को हिमाचल हिल स्टेट्ज कोंसिल के प्रधान पद से हटाते हुए डॉ. परमार के बारे लिखा था, उस के कुछ अंश इस प्रकार हैं:-

----

जब भूतपूर्व राजा सिरमौर ने डॉ. परमार को नौकरी से हटाया, तो उससे पहिले वह सब जज की कोर्ट में जब परमार की प्रतीक्षा करके चले गए थे तब यह नोट मेज पर लिख कर छोड़ गऐ थे:-

----

भूतपूर्व उपराज्यपाल बजरंग सिंह भद्री ने जब डॉ. परमार को देहली सुप्रीम कोर्ट में पांच सौ मासिक पर लगवाया था एक बार पत्रकारों के पूछने पर कहा था:-

----

अब डॉ. परमार एक प्रकार के शासक बन कर इस प्रदेश पर छाए हैं। प्रदेश आर्थिक तौर पर दिवालिया बन गया है। यदि केन्द्र का अनुदान और ऋण समय पर न मिलता रहे तो सरकारी कर्मचारियों को वेतन तक न मिल पाएगा। लेकिन डॉ. परमार और उनकी मित्र मण्डली (मन्त्री मण्डल) के सदस्यों की शान किसी भी सम्पन्न राज्य से कम नहीं है। सरकारी गाड़ियों की कतारें और खर्चे कितने भारी हैं? प्रदेश के प्रशासन की क्या दशा है? जनता का हर वर्ग कितना परेशान है? यह सब आप के सामने है। यद्यपि मेरी इस आलोचना में कुछ कड़वापन हो सकता है लेकिन यह एक सच्चाई है। अब देखना यह है कि हिमाचल के लोगों से कब तक यह नारे और जयकारे लगवाए जाते रहेंगे?

प्रदेश के पढ़े लिखे नवयुवक इस महाराजा के खोखले भाषण और कब तक सुनते रहेंगे?

कुछ दिनों पहले सरकारी तौर पर प्रदेश के अधिकारियों को लिखी वह चिट्ठी जिसमें सरकारी नौकरी में खाली स्थानों के भरने बारे सूचना केवल कांग्रेस समितियों को देने के आदेश थे, सिद्ध होता है कि डॉ. परमार प्रदेश प्रशासन की अपने गुट की इजारादारी अथवा प्राइवेट लिमिटिड बनाए रखना चाहते हैं।

यदि डॉ. परमार या उनके कोई भक्त मेरे लेख को झूठा साबित करेगा तो मैं सार्वजनिक रूप में डॉ. परमार से क्षमा मांगूगा और उतरदायी हूंगा। यदि यह सब ठीक है तो हिमाचल की जनता और कब तक यह तमाशा देखती रहेगी?

तूफां से लड़ो तुन्द लहरों से उलझो
कब तक चलोगे किनारे किनारे।

।। राजा दुर्गासिंह के अध्ययन के लिए
शिमला यूनिवर्सिटी में एक चेयर होनी चाहिए ।।

‘ ‘तेरा काम सबी दे खरा’ ’ (बघाटी कविता)

।। पहाड़ों में खेती करना अपेक्षाकृत कठिन है।।

बैंशा रा किल्टा
पिठि दे चूबा,
मच गोई
हाइ दवाई ।।1।।

पांदे दे बरखा
आगि रि लागि,
धरती माए
छाडा दुआँ ।।2।।

ओरी देख रो
काम करदे,
मोंएं बि बाइया
बागटि दिति छ्वाई ।।3।।

आदा केई,
ठोला ना मीला।
गागुटी अल्जे साय,
इज्जत बचाई ।।4।।

मेरे भायड़ा रे,
पिछली राति।
सूंर कर गोआ,
बीजा रि पटाई ।।5।।

हाय राम,
कीन्दा जाऊ।
ना हेर रो चैन,
ना बेठ रो कमाई ।।6।।

कीशे फाटे,
भाग मेरे।
पीछू बशांव,
आगू क्वालि ।।7।।

जीशा कीशा,
रीड़दा फोड़दा।
मसे शड़का खे,
हांडदी पौंचा ।।8।।

आगि रा खेल,
देखा भारि।
एकी सहायका रे,
ओइ लाता रि कमाई ।।9।।

उबलदा तारकोल,
पड़ि छटकारि
ओय गोआ बठौड़
पर देशि बचारा ।।10।।

मोंएं बोला शर्मा
तेरा काम सबी दे खरा।
चक्क किल्टु
ला शजाई ।।11।।

।। जैविक खेती के लिए हिमाचल बहुत अनुकूल है।।

``122 बघाटी पखेने या लोकोक्तियाँ''

।। पहाड़ी बोलियों में बघाटी बोली का एक विशेष स्थान है।।

01. नोरा करो शांडे मुंडे गाज पड़ो दूधा आले पांए - करे कोई भरे कोई।
02. ताते खे कड़छि शले खे हाथ - केवल अपना स्वार्थ देखना।
03. लोटा गड़दे करनाल - बनाना कुछ और बनना कुछ और।
04. पराया सोना कान भारि - पराई वस्तु कष्ट दायक।
05. दुरिए जाणा बुरिए नी जाणा - सहज पके सो मीठा।
06. घी पेटे, गेऊँ खेचे, खा ज्वाइयां पटांडे - शेख चिल्ली।
07. ठगड़े रे बोल अरो आंवले रि मठाई फीरे दे जाणुओ - बुजुर्गों की शिक्षा आंवले के स्वाद की तरह बाद में अनुभव होती है।
08. मेरि काणि मजेरि जो न्हाणि खे देओ पाणि - छज्जु का चैबारा।
09. ऊबा थुकणा - अपना नुकसान करना।
10. नींज ना माँगो साथरा अरो भूख ना माँगो ओलण - कुदरत सुविधा की मोहताज नहीं होती।
11. सह रो सिद्ध अरो जप रो निषिद्ध - सहनशीलता सफलतादायक होती है।
12. आप सायसे तो धर्म काय से - खुद कष्ट उठाकर धर्म कैसे?
13. आऊँ बि राणि तू बि राणि उखला दे कुण भरो पाणि - बड़प्पन का अभिमान दुःख दायक।
14. फटा दा कुड़मा न्यारे बिछौणे - अपनी अपनी ढफली अपना अपना राग।
15. एकी धीए सात ज्वाइ - एक ही वस्तु को सबको देने का वादा करना।
16. आपणा नी देखणा कोढ़ो रेके री हसणा जाजा खे - अर्थ स्पष्ट है।
17. बूडे बरयाला दे कांजी नी लगदी - बूढ़े आदमी को नया काम सिखाना मुश्किल है।
18. जेती रात तेती तवा परात - निश्चिंतता।
19. थूका री बदूका - थोथा चना
20. हाली रे मने बोल्दा रे कने - समझदार सेवक।
21. क्युणी रा माल कूणी दे शड़ो - कंजूस का धन नष्ट।
22. चन्द्रे री पन्द्रा भोले री सोला - चालाकी मंे घाटा है।
23. धेड़े रंगरलिए ब्याले खिंदड़ सिए दलिए - रंगरंलियों का परिणाम दुःखदायी।
24. आपणा जाणो ना रे के रा मानो - ना समझी।
25. हीला माँगो भरि कीला - आदत खराब करती है।
26. पोरे दे आया काल ओरे दे दिति गाल - मृत्यु अटल है।
27. पंछी रे आया उडणा ओरे दे कि फुर्र - होनी प्रबल होती है।
28. दें दे खौल ना खाओ राति कोलू चाटणि जाओ - खोटी आदत।
29. गोड़ा तो खरीदी पर लपोड़ा कुण करो - अर्थ स्पष्ट है।
30. आगू क्वालि पीछू बशांव - किंकर्तव्यविमूढ़ता।
31. बांदरा खे आड़बंद - लज्जाहीन को वस्त्र क्या?
32. शींगा दे छाड रो पुंजटु खे पचाका - सींग छोड़कर पूंछ से पकड़ना (समय चूकना)
33. काना पांए जुंगड़ा गरा खे आका - अर्थ स्पष्ट है।
34. चंडि रय गोइ पोरड़ि चट पट ओ गुइ ओरड़ि - सफलता से पहले ही विवाद होना।
35. आपि मरे बिना स्वर्ग नी देखुदा - दूसरों से काम लेना कठिन।
36. आन्धा जाणो तबे जबे सिर लगो कान्धा - ठोकर खाकर समझना।
37. पोरके मुइ शाशु एबके आए आशु - अर्थ स्पष्ट है, बाद में याद आना।
38. फाटो आख डामो गोडा - नीम हकीम।
39. वांज दे काणि - असफल प्रयास।
40. पाथरा हेठे रा हाथ - दुविधा जनक स्थिति।
41. बाहरे नाथू नाथू भीतरे बांग ना बाथू - अर्थ स्पष्ट है, झूठी वाह-वाही।
42. काफल बि पाके अरो चूंज बि दुखि - ऐन मौके पर बाधा खड़ी होना।

43. चुपी खाऊओ न हाला पाऊओ - दुविधाजनक स्थिति।
44. कांडे रे मूँ पैले दे ही ओ पैने - होन हार बिरवान के होत चीकने पात।
45. लींडे बोल्दा खे सात व्यादि - कमजोरियों पर और कमजोरियां होना।
46. जनी खे पाया था शाड़ा से रोआ तैं बि ग्वाड़ा - प्रयास असफल होना।
47. ठोकसु हौल अरो पोकसु ज्वानस बेकार - अस्थायी सुविधा बेकार।
48. आंदा रो कबेत्ता एखे जे ओ - अन्धा और अल्पज्ञ एक समान होते हैं।
49. नांगे रा का न्हाणा अरो का नचोड़ना - अभाव ग्रस्त से क्या लेना?
50. जोरू रा जराणा जिशके खे लाणा तिशके जाणा - जोरू का गुलाम।
51. पातलि छा डाब नी खांदि - अर्थ स्पष्ट है
52. भेड बाडि न पंचि ओइ - बेकार का मामला।
53. जेती रि लगि बाय तेती खे लणा जाइ - मन की बात पूरी करना।
54. भेणी रे सात पौर - इंतजार की घड़ियाँ लम्बी होती है।
55. मेड़ बिगड़ो तो ब्राल बि बिगड़ो - यथा राजा तथा प्रजा।
56. जेड़ि माइ तेड़ि जाइ - जैसा बीज वैसा वृक्ष।
57. जेतणा करेवड़ा लम्बा तेतणि गो चैड़ि - बराबर होना।
58. सोच रो जपणा और चाब रो घुटणा - अर्थ स्पष्ट है।
59. बक्ता दे चुकि डुमणि गाओ आल पताल - बीता वक्त हाथ नहीं आता।
60. धाना रे गांव पराल दे पछ्याणुओ - परिणाम से वस्तु ज्ञान।
61. सूते ओंदे रे कट्टे ही जमो - लापरवाही दुःख दायक।
62. एकी बीखा रा भूला शोआ कोवा खे - छोटी सी भूल का असर दूर तक होना।
63. रीषे मरी अरो मीशे तरी - स्पर्धा सुखदायक।
64. जेती रा छाडा गांव तेती रा का लणा नांव - बीति ताहि बिसारि दे।
65. जाणो कदोसला जसरि पीठ फुकुओ - जिस तन लागे सो तन जाने।
66. भ्वाणे रा राज - अराजकता।
67. खण रो बण - कोरी गप्प।
68. गण रो अरो खण रो का नी मिलदा - अनावश्यक खोजबीन बेकार।
69. हाथा रि छुटि पराइ - मार पीट खतरनाक।
70. खाचर नी कणदि गूण कणो - मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त।
71. गुणा काय गमान - गुणी में अभिमान होना।
72. जसरा खाणा दाणा तेसरा गुण गाणा - स्पष्ट।
73. आपणा घाय रो बि छैंई दे शेटो - अपना अपना ही होता है।
74. नभागा रे ओडू ही चरो - अभागे को लाभ थोड़ा होता है।
75. बाडी रे गौर शाके छ्वाए - परोपकारी निर्धन होता है।
76. शीगे पजारा रि बेल ही चूटो - जल्दबाजी नुकसानदायक।
77. डौर करो सात गौर - डर का कोई ठिकाना नहीं।
78. साजिमाइ कूते खाइ - स्पष्ट।
79. नोकरि तो बावा रि बि बुरि - पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं।
80. रेके रा मूँड पणसेरा - दूसरा आदमी मालदार दिखता है।
81. पाणि भरना मूला रा बहु ल्यावणि कूला रि - स्पष्ट।
82. आपणे गौर दिल्ली दे बि देखुओ - अपना घर सबसे प्यारा।
83. उल्टि गंगा प्होए खे - स्पष्ट
84. हटि फिर रो सेइ जगात खाना - एक ही रट लगाना।
85. शोघी रि बाठि क्षाले खे - लंबा रास्ता
86. बेठ रो न्हेरा - समय गंवाना।

87. रात रो खिंदड़ि बराबर - यथावश्यकता साधन होना।
88. मूँड मेक रो ढाल - जबर्दस्ती अपना आदर करवाना।
89. जेती खिंडुओ तेथी सारूओ - जहां नुकसान वहां फायदा भी।
90. ओरी रे ओरो बात कनबुचरी रे काने हाथ - अपने स्वार्थ पर नजर रखने वाला।
91. कसरे हाथ शशुओ कसरे पीठ शशुओ - सहकारिता में सबका लाभ।
92. गलिया बि करेडा बि - निकम्मे का लोभ।
93. दोरा झाऊ - दोनो पक्षों से लाभ उठाने वाला।
94. काणा बांडा - पक्षपात।
95. ज्योन्दे खे तील बि ना और मुए खे तलोए - धार्मिक आडम्बर।
96. बरयाला रि पीठ ना लगना - ढीठ होना।
97. हाने रा हाना ताने रा ताना - हानि भी उठाना और व्यंग्य भी सुनना।
98. बरयाला री गालि - असमर्थ की चुनौती।
99. नाक शिणक रो होठा पांएं खे - अधूरा काम।
100. बरयाल घाणा सब जाणो, दूध खाणा नी जाणदा कोई नी - सही कारण से भी हत्या बुरी।
101. बड़े रा ब्या अरो ढान्डे रा कनेया - स्पष्ट ।
102. शलु रि खातर भैंश धेड़नि - कम लाभ हेतु ज्यादा नुकसान करना।
103. ज्वानसा रा गौर अरो ठींडा रा डेरा - जिसका काम उसी को साजै।
104. नजाण विद्या प्राण खाओ - अधूरा ज्ञान खतरनाक।
105. आपणे मांजे हेठे डींग रोड़ना - अपनी कमी देखना।
106. पाणी काय दे चीशा नीणा - अति चालाकी बर्तना।
107. हसी री नरसी - हंसी खेल में नुकसान करना।
108. आपणि आपणि फाथि ऐसी तेसी मांएं जाओ साथी - स्वार्थपरायणता।
109. गंगा गले ही तैंई हो - सहनशीलता की एक सीमा होना।
110. लाया रा भूत - दूसरे के इशारे पर काम करने वाला।
111. कावा रे कैंथ - अपनी रखी चीज न मिलना।
112. मांडा रे पटांडे - मजबूरी
113. शरूए बि बाच पाणिए बि बाच - हर स्थिति एक समान होना।
114. नदी रे शादे पाणी खोलना - बिना समस्या के समाधान करना।
115. भेखले रा ब्राग - बढ़ चढ़ कर बताना।
116. काछा हेठे हलशि नी छिपदी - आसानी से कोई चीज न छिपना।
117. जांव जिवणा तांव खिंदड़ा सेवणा- स्पष्ट
118. बांडुओ बला भांगडूओ ना - बिना लड़े अलग होना।
119. पाणि थाले दे ई रौ - सत्य सत्य होता है।
120. खाओ पीओ लोक बिल देओ जपाके - स्पष्ट।
121. निमला निमला रय जाओ गाढ़ा गाढ़ा बह जाओ - साँच को आँच नहीं।
122. गरि रो मूँ आपणा ही दखाउओ - अपनी वस्तु अपनी ही होती है।

पखेनों के कुछ कठिन शब्दों के अर्थ

01. नोरा - पशु द्वारा दूसरे का नुकसान करना
02. शले - ठंडे
03. धी बेटी
04. ठगड़े - वरिष्ठ
05. साथरा - बिस्तर
06. सायसे - अभावग्रस्तता
07. कुड़मा - परिवार

08 जाज - दाद
09. क्युणी - कंजूस
10. हीला - आदत से मजबूर
11. देंदे - देते हुए
12. लपोड़ा - रख रखाव
13. काँगी - बालों को सवारने वाली कंगी
14. आड़बन्द कौपीन या खेशड़ी
15. पचाका - पकड़ना
16. जुंगड़ा - बैलों के कन्धों पर लगने वाला युगल
17. चंडि - गंतव्य स्थान या मन्दिर
18. पोरके - गतवर्ष
19. डामना - असह्य ताप देना
20. वांजणा - मन्त्रचिकित्सा
21. कैंफल - वन्य फल
22. लींडा - पुच्छहीन
23. पोकसु - नासमझ
24. कबेत्ता - अपरिचित
25. जराणा - गुलाम
26. डाब - पतलापन
27. बाए - गहरी तमन्ना
28. भेणी - रात खुलना
29. ब्राल - मेड़ से सम्बन्धित
30. करेवड़ा - सांप
31. कोह् - कोस
32. रीष - ईष्र्या
33. कदोसला - कोदे की रोटी
34. घाणा - जान से मारना
35. बाडी - मिस्त्री
36. पजार - पशुओं का आहार
37. रेका - दूसरा
38. ढाल - प्रणाम
39. सारूना- पैदा होना
40. शशुणा - घी लगना
41. मरयाल- लाभार्थी
42. बरयाल- बिल्ला
43. शिणकणा नाक साफ करना
44. कनेया - शोर
45. शलु - चमड़े का टुकड़ा
46. ज्वानस स्त्री
47. डींग - लाठी
48. चीशा - प्यासा
49. फाथि - स्वार्थ
50. बाच - नमी
51. शाद - शब्द या आवाज

52. काछ - कंधे का निचला भाग
53. जांव - जब तक
54. रहेउणा- रूकना

रंगमंच का जुनून

बघाट रियासत का ''मशरूम सिटी'' सोलन देश भर में सर्वश्रेष्ठ जलवायु के लिए विख्यात है वहीं इस शहर ने अनेकों प्रतिभाओं को उभारा है। इसी श्रेणी में सोलन के हेमन्त अत्रि शामिल है। बहुआयामी प्रतिभा के धनी हेमन्त 20 वर्षों से पत्रकारिता से जुड़े हैं, वहीं रंगमंच व लेखन के प्रति उनका जुनून उन्हें अलग पहचान दिलाता है। दयानन्द आदर्श विद्यालय सोलन के प्रथम बैच के छात्र होने से स्कूल के वार्षिक उत्सवों में होने वाले सांस्कृतिक में भाग लेने का मौका मिला। अंग्रेजी व हिन्दी नाटकों में अभिनय किया। जिसमें ''यक्ष प्रश्न'', ''सिद्धार्थ'', ''एकलव्य'', ''भामाशाह'', ''उग्रवाद की पीड़ा'' आदि नाटक शामिल थे। इसके अतिरिक्त संगीत के कार्यक्रमों, समूहगान, पहाड़ी नाटी आदि स्पर्धाओं में जिला एवं राज्यस्तर पर भाग लेकर पुरस्कार प्राप्त किए। मित्रों सहित आधारशिला रंगमण्डल की स्थापना 1998 की। पहले नाटक ''बकरी'' का निर्देशन संजीव अरोड़ा ने किया। इस नाटक के सोलन, कसौली, परवाणु आदि में मंचित किया गया। हिमाचल के शिक्षाविद्, विख्यात रंगकर्मी एवं लेखक (अनुपम खेर के गुरू) डॉ. कैलाश अहलूवालिया के निर्देशन में ''सूर्य की अंतिम किरण से पहली किरण तक'', ''बयान'', ''भोमा'', ''केवल तुम्हारे लिए'' आदि नाटकों में अभिनेता व कार्यक्रम प्रबन्धक के रूप में रंगमंच की बारीकियाँ सीखी।

बघाटी बोली के संरक्षण एवं उसके प्रसार में हेमन्त अत्रि की विशेष रूची रही। माँ बोली की प्रेरणा व कला के प्रति प्रोत्साहन उन्हें अपनी माता स्व. श्रीमती सुषमा शर्मा से मिला। कुल देवता के निमित्त किए जाने वाली लोक नाट्य विधा करियाला में उनकी गहरी रूची है। इस विधा को संजोए रखने के लिए वह रंगमंच से साथ करियाला के स्वांगों एवं संगीत में उत्साह पूर्वक भाग लेते रहे हैं। हिन्दी प्रवक्ता डॉ. बलदेव ठाकुर जी की प्रेरणा से वार्षिक पत्रिका ''हिमांशु'' के पहाड़ी अनुभाग का छात्र संपादक बने और बघाटी लेखक के रूप पहचान मिलने लगी।

इस पत्रिका में बघाटी हास्य गीत ''गागुटी'' खूब सराहा गया, जो बाद में आकशवाणी से भी प्रसारित हुआ। हाल ही में यह गागुटी गीत फेसबुक व व्हटसएप पर वायरल हुआ, जिससे बघाटी सहित हर वर्ग के हजारों लोगों खूब लोट-पोट हो रहे हैं। इसके अतिरिक्त मोबाईल फोना रा नजारा, बाबू नी आंवदे काबू, लवली सी मैडम, बेडंगा फैश्न, अहाता, राच गौआ नानका, का कैणा मेरे बघाटा रा, आदि दर्जनों कविताएं राज्यस्तरीय, प्रतिष्ठित मंचों व कवि सम्मेलनों में खूब पसन्द की जाती है। जिनमें समाजिक कुरीतियों, समस्याओं को व्यंगात्मक एवं गीत शैली में प्रस्तुत किया गया। समाज को जगरूक करने के उद्देश्य से हेमन्त ने बघाटी एवं हिन्दी में कई लघु नाटिकाएं एवं नुक्कड़ नाटकों का लेखन एवं अभिनय का सिलसिला जारी है। बघाटी बोली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 2005 में उन्होंने दिव्य हिमाचल में पहली बार वर्तमान विषयों पर तंज कसता ''बघाटी शटराला'' एवं पखेने आरंभ किए। जिसे वर्तमान पीढ़ि को ध्यान में रखते हुए ''बघाटी शटराला'' फेसबुक पर हर वर्ग को गुदगुदा रहा है।

लेखन व पत्रकारिता के रूची के चलते वर्ष 2000 में ''दिव्य हिमाचल'' में संवाददाता के रूप में कार्य आरम्भ किया। विकासात्मक, खेल एवं सांस्कृतिक पत्रकारिता को प्राथमिकता दी। सोलन में कई वर्षो से रंगमंच के अभाव को देखते हुए 2013 में पुनः रंगमंच का रूख किया। संजीव अरोड़ा के निर्देशन में 'राजा' नाटक का मंचन हुआ। इसके पश्चात् युवा रंगकर्मियों सहित मिलकर प्रणव-थियेटर, बियोन्ड थियेटर (पंजीकृत) संस्था का गठन किया। इसके संस्थापक प्रधान संजीव अरोड़ा एवं संस्थापक महासचिव हेमन्त अत्रि हैं। इस संस्था के अंतर्गत अंकुर कुमार द्वारा (सुभद्रा कुमार चैहान की जीवनी) लिखित नाटक ''सुभद्रा'' का निर्देशन एवं परिकल्पना संजीव अरोड़ा ने की। सोलन के बाद इस नाटक का दूसरा मंचन गेयटी थियेटर-शिमला में आयोजित राज्यस्तरीय 'हिमरंग महोत्सव' में मार्च, 2014 को हुआ। इस नाटक में हेमन्त ने पांच अलग-अलग किरदारों की भूमिका बखूबी निभायी। मानवता व विभाजन पर आधारित नाटक ''जिस लाहौर नी देख्या, ओ जम्या ई नही'' में मौलवी व हेड क्लर्क का किरदार निभाया। 2015 के हिमरंग महोत्सव में इस नाटक को समीक्षकों ने खूब सराहा। इस बीच राज्यस्तरीय युवा महोत्सवों में भी प्रणव-थियेटर, बियोन्ड थियेटर के कलाकारों ने ''नर्गिस के फूल'' और ''नई सुबह'' नामक नाटकों का प्रभावशाली मंचन किया व लगातार तीन वर्षों तक पुरस्कार अर्जित किया। इन नाटकों में हेमन्त ने कार्यक्रम प्रबन्धक के रूप में संस्था को सुदृढ़ किया। 27 अगस्त, 2015 को संस्था ने गेयटी थियेटर, शिमला में डॉ. वायला वासुदेवन पिल्ले के नाटक 'बरसी' का सफल मंचन किया। युद्ध की विभीषिकाओं पर आधारित इस भव्य नाटक में पारम्परिक वाद्ययन्त्रों व ठोडा नृत्य का सुन्दर उपयोग किया। इस

नाटक में हेमन्त ने पुजारी व शकुनि के पात्रों को अभिनय से जीवन्त किया। इवेन्ट मैनेजर के रूप में भी इनका सराहनीय कार्य किया। इस नाटक का मार्च 2016 में 'हिमरंग महोत्सव में मंचन हुआ जो उत्सव का सर्वश्रेष्ठ नाटक रहा।

गुरूग्राम, बरेली, चितकारा विश्व विद्यालय राजपुरा, सोलन आदि स्थानों में आयोजित अखिल भारतीय नाट्य प्रतियोगिता में मंचित नाटक ''गुड़ का हलवा'' को सर्वश्रेष्ठ नाटक सहित अनेकों पुरस्कार अर्जित किए। इसके अलावा जुलाई 2016 को गेयटी थियेटर-शिमला में ''गुड़ का हलवा'' का प्रभावशाली प्रदर्शन हुआ। इसे हिमाचल के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत के सम्मुख किया। इस नाटक में हेमन्त ने साहुकार के नकारात्मक किरदार को बखूबी जीवन्त किया। दिल्ली के विख्यात लेखक एवं निर्देशक राजन तिवारी के निर्देशन में बेटी बचाओ पर आधारित नाटक ''आओ मुझे बचा लो'' में मास्टर जी की भूमिका बखूबी निभाई। इसके पश्चात् प्रणव थियेटर की अगली प्रस्तुति ''अंतद्र्वंद्व'' में इवैन्ट मनेजर के रूप में देश के प्रतिष्ठित मंच श्री राम सैन्टर नई दिल्ली, रविन्द्र मंच जयपुर, राष्ट्रीय नाटय उत्सव, धनवाद-बिहार, कुल्लू आदि मंचों पर करीब 25 मंचन हुए जिसमें हेमन्त अत्रि को सर्वश्रेष्ठ मंच सज्जा का पुरस्कार मिला। इससे पूर्व गुड़ का हलवा, बुद्ध एक यात्रा, आदि नाटकों के लिए भी इन्हें सर्वश्रेष्ठ मंच सज्जा का पुरस्कार मिला। इनदिनों वह अनुसिंह चैधरी की कहानी पर आधारित नाटक ''गजगामिनी'' में बसेसर का किरदार बखूबी निभा रहे हैं। इस नाटक का मंचन गोरश्वर असम, छिंदवाड़ा म.प्र., हिमाचल प्रदेश आदि स्थानों पर जारी है।

रंगमंच के साथ-साथ हेमन्त ने टी सिरीज के सहयोग से पुलिस एवं यातायात पर आधारित डाक्यूमैन्टरी ''आप और हम'' में बतौर अभिनेता एवं प्रोडक्शन में कार्य किया। इसके अतिरिक्त मलेरिया पर आधारित लघु फिल्म, डी.डी. उर्दू के धारावाहिक में मौलवी सहित कई विज्ञापनों, कैम्पेन एवं शारट फिल्मों में विविधतापूर्ण भूमिका निभायी। स्वच्छता पर आधारित लघु फिल्म ''एक बून्द सागर में'' बतौर प्रोडक्शन मनेजर व अभिनेता के रूप में कार्य किया। प्रणव थियेटर द्वारा निर्मित इस फिल्म को केन्द्र सरकार द्वारा अवार्ड आफ एक्सीलैन्स प्रमाण-पत्र से नवाजा गया। एल्ज़ाइमर पर आधारित हिन्दी गीत ''सिसकियां'' में सह-निर्देशक के रूप में कार्य किया। बघाटी परम्परा के लिए सजीव रखने के लिए लोक नाट्य विधा करियाला के सरक्षण के लिए कसौली स्थित अपने पैत्रिक गाँव की करियाला मण्डली से भी जुड़े है।

।। म्हारे स्थानीय कलाकार म्हारी संस्कृति रे रक्षक असो।।

शूलिनी मेला

शक्ति की उपासना भारतीय संस्कृति की यह परम्परा है जो इस पावन भारतीय भूमि को आदिकाल से खींच रही है। दुर्गा सप्तशती में वर्णित दुर्गा के एक सौ आठ नामों में एक पंक्ति है -

आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी।

इसी में उधृत शूल धारिणी को शूलिनी भी कहा जाता है जो बघाट राज्य की अधिष्ठात्री देवी है। बघाट की राजधानी पहले जौणाजी फिर कोटी रही है। इसके सोलन स्थानान्तरित होने पर शूलिनी देवी की स्थापना यहां पर की गई। इसी की कृपा से यह निर्जन स्थान जो कभी स्पाटू कैन्टोनमैन्ट की मात्र एक छोटी सी चांदमारी (फायरिंग रेंज) थी आज जिला मुख्यालय है। यही नहीं एशिया का सर्वाधिक तेजी से विकसित होने वाला पर्वतीय स्थल है। शूलिनी के नाम पर ही इसे पहले सोलनी फिर सोलन नाम मिला। लोकगीतों में - मैं ता जाई लैणा सोलनी बजार या सोलनी पड़ी गई छौणी, सोलन के आकर्षण को दर्शाते हैं।

शूलिनी उत्सव या शूलिनी मेला बघाट नरेश दुर्गासिंह जी के समय से चला आ रहा है। पहले यह दुर्गा मन्दिर के साथ ही छोटे से मैदान में मनाया जाता था, जहां पर को-ओपरेटिव बैंक आदि की ईमारतें हैं। चौथे दशक के अन्त में इस उत्सव को ठोडो मैदान में मनाना शुरू किया गया। यहां के बड़े बूढ़े लोग बताते हैं कि उन्होंने गामा, गूंगा और दारा सिंह आदि के दंगलों का इस मेले में आनन्द लिया है। जिला बनने पर इसके आयोजन का निर्वाह पूर्णतः जिला प्रशासन कर रहा है।

आषाढ़ मास के दूसरे रविवार जो जून मास के तीसरे रविवार के बाद ही आता है, को इस मेले का आयोजन किया जाता है। दो दिन पूर्व शुक्रवार को शूलिनी की यात्रा से यह मेला प्रारम्भ होता है जो तीन दिन के लिये दुर्गा मन्दिर में प्रवास करती है। श्रद्धा और विश्वास से ओत-प्रोत यह यात्रा कभी छोटी हुआ करती थी किन्तु आज यह आठ दस घन्टे का एक विशाल आयोजन बन गई है। धूम-धाम से निकाली जाने वाली इस यात्रा में कुशल मार्गदर्शन सहित युवा वर्ग की कर्मठता और अदम्य उत्साह का परिचय भी मिलता है। देवी की पालकी के साथ-साथ भजन मण्डलियों का कीर्तन, धार्मिक झांकियां, मार्शल आर्ट तथा लोक नर्तकों का समावेश इसे अत्यन्त आकर्षक रूप प्रदान करता है।

पुष्प प्रदर्शनी, पैट शौ, बच्चों की चित्रकला प्रतियोगिता, वालीबाल तथा शतरंज प्रतियोगिताओं में स्थानीय लोग बढ़-चढ़ कर भाग लेते हैं। इन सब कार्यक्रमों के बीच यहां स्थानीय खेल ठोडा को भी भुलाया नहीं जाता जिसके नाम पर ठोडो मैदान बना है। दोपहर का विशेष आकर्षण रहता है छिंज या कुश्ती जिसमें राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के पहलवान भाग लेते हैं। विशाल मानव समुद्र को ठोडो मैदान से जवाहर पार्क तक भरा हुआ देखा जा सकता है। दुकानें, प्रदर्शनी एवं स्टाल के अतिरिक्त इस वर्ष हमने शिल्प मेले का भी संयोजन कर विविधता लाने का प्रयास किया है। अभी तो यह प्रारम्भ ही है हमारी इच्छा है कि यह माँ शूलिनी की कृपा से सूरज कुण्ड जैसा आयोजन बने।

बहुत सारी सांस्कृतिक संस्थाओं वाले इस नगर के निवासी रात्रि में राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकारों के कला प्रदर्शन का आनन्द लेते हैं। सुन्दर वातावरण, रंग-बिरंगे वस्त्रों से सजे नर-नारी हिन्डोलों में घूमते युवक-युवतियां इस मेले की शोभा को चार चांद लगा देते हैं और मानव आत्म-विभोर हो तीन चार दिन के लिए खो सा जाता है। सार्थक है यह मेला जो यहां की सांस्कृतिक विरासत को उजागर करता है और सांस्कृतिक आदान-प्रदान से इस स्थान को जीवन्त बना देता है।

।। ठोडा महाभारत का एक जनमंचीय रूप है।।

श्री मुनीलाल वर्मा-एक संघर्षशील व्यक्तित्व

मुनी लाल वर्मा जी जिला सोलन के एक जाने-माने नेता, समाज सेवक व स्वतंत्रता सेनानी हैं। यह पंजाब व हिमाचल मार्किटिंग बोर्ड के प्रथम अध्यक्ष, हिमाचल प्रदेश लोकराज पार्टी के अध्यक्ष, लोकराज संदेष के प्रधान सम्पादक भी रहे। 75 वर्षिय मुनी लाल जी अपने लक्कड़ बजार स्थित निवास स्थान में अपनी पत्नी व बच्चों के साथ रह रहे हैं। राजनीति में अब वह सक्रिय नहीं हैं परन्तु आज के राजनैतिक माहौल से पूरी तरह अवगत रहते हैं।

हमारे विषेष संवाददाता नवीन अरोड़ा ने उनके घर पर भेंट की। इस भेंट के मुख्य अंष प्रस्तुत हैं:

आप जिला सोलन के एक वरिष्ठ राजनीतिज्ञ व समाज सेवक हैं, आज के राजनैतिक व सामाजिक परिप्रेक्ष्य बारे आप क्या कहना चाहेंगे ?

आज के राजनैतिक परिप्रेक्ष्य बारे में मुझे यही कहना है कि देष की प्रत्येक पार्टी अब अवसरवाद की राजनीति कर रही है। मूल्यों की राजनीति तो लगभग समाप्त हो चुकी है तथा राजनीति समाज सेवा न होकर मात्र स्वार्थ सेवा हो गई है। हमारे समय में राजनीतिक मंच समाज सेवा के लिए उपयोग होता था किन्तु आज समाज सेवा के नाम पर खुले आम राजनीति की जाती है।

आप इन राजनैतिक पार्टियों, कार्यकर्ताओं व समाज में गिरते नैतिक मूल्यों के बारे किसे दोषी मानते हैं ?

देखिए, एक समय था जब पार्टी में सदस्यता अभियान चलते थे। सदस्यों से इकट्ठे किए गए चन्दे पर पार्टी व संगठन चलते थे। इससे सबकी भागीदारी भी रहती थी तथा पार्टी के पैसे का दुरूपयोग भी नहीं होता था। परन्तु अब तो पार्टियां बड़े-बड़े उद्योगपतियों, पूंजीपतियों के दिए चन्दे पर आश्रित होती जा रही हैं अर्थात् पार्टियों व संगठनों में कार्यकर्ता व सदस्यों की भागीदारी लगभग षून्य होती जा रही हैं। जिससे यह पार्टियां उन चन्दा धारकों के इषारे पर चलने लगी हैं न कि कार्यकर्ताओं के बल पर। जहां तक नैतिक मूल्यों के गिरने का सवाल है इससे समाज का प्रत्येक वर्ग उतना ही दोषी है, जितने की राजनीतिक लोग क्योंकि राजनैतिक लोगों को भी जनता व समाज ही भ्रष्ट बना रहे हैं। चुनाव इतने महंगे हो गए हैं कि सच्चा, ईमानदार व जनसाधारण से जुड़ा व्यक्ति इसमें अपने जीवन की सारी पूंजी लगाकर भी नहीं जीत सकता। इसी कारण राजनैतिक लोग बड़े-बड़े लोगों से चन्दा लेने पर मजबूर हो जाते हैं तथा निर्वाचित होने पर उन्हें चन्दाधारकों के सब तरह के काम करने पड़ते हैं। मेरा यह मानना है कि इस सारी व्यवस्था को बदलने के लिए हिन्दुस्तान के प्रत्येक नागरिक को बदलना होगा, अन्यथा नैतिक मूल्य केवल कागजों में छपा एक शब्द ही बन कर रह जाएगा।

आप आज के राजनीतिक वातावरण से काफी असन्तुष्ट लगते हैं तो फिर आप स्वयं 50 वर्ष राजनीति में रहे तथा आप पर भी लोग कई बार दल बदलने का आरोप लगाते हैं। इस बारे आप कुछ कहना चाहेंगे?

हमारे देश में राजनीति में भ्रष्टाचार के साथ दल बदली भी एक बहुत बड़ी लानत है। दल बदली आज जनता के फायदे के लिए न होकर अपने फायदे के लिए हो कर रह गई है। मेरे ऊपर लगने वाले सभी आरोप तथ्यहीन व निराधार हैं। क्योंकि मैंने तो 1962 में जब कांग्रेस ने मुझे टिकट नहीं दिया फिर भी मैंने पार्टी की सहायता की। मैंने अपने जीवन में अपने साथियों को कभी नहीं छोड़ा परिणामवश मैंने कई महत्वपूर्ण ओहदे कई बार गंवाए। मेरे लिए सहयोगी मेरे अजीज रहे तथा पार्टी के नेता या अध्यक्ष नहीं। इसी कारण 1967 में डॉ. परमार से वैचारिक मतभेदों के कारण मैंने अपनी लोकराज पार्टी का गठन किया तथा विपक्ष में भी रहा। मैंने अपने 50 वर्ष के राजनैतिक जीवन में गांव, पंचायत, खण्ड, जिला, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की राजनीति को देखा पर मेरा सीधा सम्पर्क सदैव अपने चुनाव क्षेत्र व प्रदेश से ही रहा। यदि मैं अपने सम्पर्कों का दुरूपयोग करता तो राष्ट्रीय स्तर पर राजनीति में अच्छे खासे ओहदे हासिल कर सकता था। हमारे समय में भ्रष्टाचार सत्ता की भूख राजनीति में नहीं के समान थी परन्तु आज राष्ट्रप्रेम व समाज सेवा लोगों से मानों नदारद ही हो चली है। मुझे इस बात पर गर्व है कि मैंने एक अच्छे समय में अपने क्षेत्र व प्रदेश के लोगों की सेवा की है आज के युग में शायद मैं वह सब न कर पाता जो उस समय पर कर पाया।

आप पिछले चार पांच वर्षों से हृदय की बीमारी के कारण अधिकतर समय घर पर ही बिताते हैं। कृपया अपनी दिनचर्या व शौक बारे भी कुछ बताएं?

1993 से हृदय रोग के कारण मैं अधिकांश समय घर पर ही अपने परिवार के सदस्यों के साथ बिताता हूँ। कभी कभी पैतृक निवास स्थान शमलेच में भी फार्म हाउस पर रहता हूँ। समाचार पत्र, पत्रिकाएं भी पढ़ता हूँ। टेलीविजन भी नियमित रूप से देखता हूँ। इसके साथ साथ मेरे बेटे-बेटियां बहुएं व दोतियां, पोतियां सब मेरे साथ रहते हैं जिस कारण मुझे महसूस ही नहीं होता कि मैं अपने राजनैतिक मित्रों से दूर हूँ। हाँ, सब साथियों की

याद जरूर आती है। इसके साथ कई बार खुद छोटे-बड़े राजनैतिक व सामाजिक समारोहों में अवश्य जाना पसन्द करता हूँ यदि सेहत साथ दे तभी।

आप अपने राजनैतिक जीवन में इतने व्यस्त रहे फिर भी आज अपके परिवार के सभी सदस्य अच्छे पदों पर कार्यरत हैं। आपने अपने बच्चों के लिए कैसे समय निकाला व उनके लिए किस प्रकार की प्रेरणा दी?

सच पूछिए तो मैंने सदैव अपने परिवार की उपेक्षा ही की परन्तु परमात्मा की कृपा तथा मेरी पत्नी जी की पारिवारिक सेवा के कारण आज सब बच्चे अच्छा जीवन यापन कर रहे हैं। मैं तो अपने बच्चों के जन्म के समय पर भी घर पर उपस्थित नहीं रहा पर पद्माजी ने कभी इसका बुरा नहीं माना। पद्मा ही मेरे बच्चों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत रही। एक बार जब हम आर्थिक संकट से गुजर रहे थे तो पद्मा जी को समाज कल्याण सलाहकार बोर्ड में नौकरी हेतु ट्रेनिंग के लिए डेढ़ साल बच्ची के साथ घर से बाहर रहना पड़ा। परन्तु उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। हमारे तीनों बच्चे सनावर में पढ़े तथा आज सब अपने परिवार सहित अच्छा जीवन यापन कर रहे हैं। मेरा यह मानना है कि आज मैं और मेरा परिवार जो कुछ भी है उसका सम्पूर्ण श्रेय मेरी पत्नी पद्मा जी को जाता है।

आप लोकराज संदेश साप्ताहिक के सम्पादक के नाते पत्रकारिता से भी जुड़े रहे हैं। आज की पत्रकारिता के बारे में आप कुछ कहना चाहेंगे।

हाँ, पत्रकारिता अब व्यवसाय बन गया है जबकि हमारे लिए तो यह एक शौक था या फिर अपने संगठन व पार्टियों के संदेश को कार्यकर्ताओं व जनसाधारण तक पहुंचाने के लिए समाचार पत्र निकाले जाते थे। आज मैं यह विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि आज अच्छी पत्रकारिता हो रही है। संचार क्रांति के इस युग में पल भर में समाचार पूरे विश्व में पहुंच जाते हैं। परन्तु इसके साथ पीत पत्रकारिता भी काफी लोकप्रिय होती जा रही है। इसमें सारा दोष पत्रकारों का ही नहीं है क्योंकि पत्रकार भी समाज का एक हिस्सा है। समाज में जो घटेगा उसे भी उसी पर रिर्पोटिंग करनी है। परन्तु एक बात का मुझे दुःख है कि आज सामाजिक, विकासात्मक पत्रकारिता को अधिक स्थान नहीं मिलता। पत्रकार भी अब राजनैतिक पार्टियों की खबरें छापकर सुर्खियों में रहना अधिक पसन्द करते हैं न कि समाज में घटित हो रहे अच्छे कार्य पर कुछ लिखकर। परन्तु मुझे गर्व है कि हमारे जिला सोलन व प्रदेश में अभी भी पत्रकारिता का स्तर अन्य राज्यों की अपेक्षा कहीं अच्छा है। हाँ, केबल पर अश्लील कार्यक्रमों को रोकने का मैं समर्थन करता हूँ क्योंकि यह अश्लीलता सीधे हमारे ड्राईंग रूम में पहुंच कर हमारी संस्कृति व विरासत को नष्ट करती जा रही है। लोक राज सन्देश साप्ताहिक के सम्पादक के रूप में कई वरिष्ठ पत्रकार व लेखक मेरे सम्पर्क में आए व अच्छे मित्र बने तथा आज अपने अपने क्षेत्र में पत्रकारिता के माध्यम से समाज सेवा को समर्पित हैं। इन सब मित्रों की प्रेरणा ने ही मुझे प्रेरित किया जो मैंने मेरी डायरी के पन्नों से पुस्तक लिखी जिसका 15 अगस्त 1998 को क्रान्ति दिवस पर पूर्व लोकसभा अध्यक्ष श्री रवि रे जी ने सोलन आकर विमोचन किया।

आपको मेरी व हिमजनचेतना परिवार की तरफ से लम्बी आयु हेतु शुभकामनाएं। भविष्य की आप की कोई विशेष योजना हो तो बताएं?

मैं आज हृदय रोग से पीड़ित हूँ तथा मेरा ईलाज भी नियमित रूप से चल रहा है। आज मेरे परम मित्रों की दुआएं मेरे साथ है। मेरे भविष्य की कोई विशेष योजना नहीं है परन्तु मेरी समाज की युवा पीढ़ी व राजनैतिक पार्टियों व सामाजिक संस्थाओं से अपील है कि आज के इस युग में आप इस समाज के लिए अवश्य कुछ सार्थक कार्य करें। क्योंकि मैं यह मानता हूँ कि मानव जीवन बहुत छोटा है अतः जो कार्य मेरे द्वारा अधूरे रह गए हैं उन्हें आने वाली पीढ़ी दृढ़ संकल्प ले कर करें बस यही मेरे भविष्य का एक सपना है।

।। राजधर्म का मतलब है देश का हित करना।।

कसौली में बजा था आजादी का बिगुल

भारत को आजाद करवाने की दिशा में पहला कदम 20 अप्रैल 1857 को कसौली छावनी से शुरू हुआ था। 20 अप्रैल 1857 को अम्बाला राइफल के छह भारतीय सैनिकों ने कसौली थाने को जला कर राख कर दिया था। अंग्रेजों के शाक्तिशाली गढ़ में भारतीय सैनिकों की सेंध लगने से ब्रिटिश अधिकारी बौखला गए और कई क्रांतिवीरों को पकड़कर जेलों में ठूंस दिया तथा फांसी पर चढ़ा दिया। कसौली के बाद डगशाई, सुबाथू, कालका और जतोग छावनियों समेत पूरे हिमाचल में क्रांति की लहर फैल गयी।

अंग्रेजों ने मेरठ, दिल्ली और अम्बाला में भी विद्रोह की सूचना मिलते ही कसौली छावनी के सैनिकों को अम्बाला कूच करने के आदेश दिए, जिसे भारतीय सैनिकों ने नहीं माना और खुले तौर पर विद्रोह करके बन्दूके उठा ली। इस समय कसौली में नसीरी बटालियन (गोरखा रेजीमेंट) होती थी। इसके सूबेदार भीम सिंह बहादुर थे। 13 मई 1857 को सैनिकों ने अंग्रेजों पर हमला कर उन्हें धूल चटा दी थी और कसौली ट्रेजरी में रखे चालीस हजार की राशि लूट ली थी। उसके बाद विद्रोह की डोर स्थानीय पुलिस ने अपने हाथों में ले ली। तत्कालीन दरोगा बुध सिंह ने अंग्रेजों को काफी आतंकित किया, लेकिन वे पकड़े गए। तब उन्होंने स्वयं को गोली मार ली। पहाड़ी क्रांति के नेता पंडित राम प्रसाद वैरागी थे, जो सुबाथू मंदिर में पुजारी थे। वे संगठन पत्रों के माध्यम से संदेश भेजते रहे। 12 जून 1857 को इस संगठन के कुछ पत्र अम्बाला के कमिश्नर जीसी बार्नस के हाथ लगे, जिसमें दो पत्र राम प्रसाद वैरागी के भी थे। वैरागी को पकड़ कर अम्बाला जेल में फांसी पर चढ़ा दिया। तब से लेकर आजादी के लिए लगातार प्रयास चलते रहे। 15 अगस्त 1947 को अंग्रेज भारत छोड़कर चले गए।

।। पहाड़ी लोग देश के लिए मर मिटने के कायल होते हैं।।

ऐतिहासिक सायर मेला, अर्की

अर्की जनपद का प्रसिद्ध एवं ऐतिहासिक मेला सायर हर वर्ष सितम्बर के महीने में मनाया जाता है। मक्की फसल आने पर सोलन जनपद के अर्की तहसील मुख्यालय में सायर मेले का आयोजन हर्षोल्लास के साथ प्रतिवर्ष किया जाता है। अर्थात जैसी वरूण एवं इंद्रदेव की अनुकम्पा रही उसी के परिणामस्वरूप जैसी फसल हुई उसमें से प्रथम उपहार देवताओं को भेंट की जाती है। इन दो देवताओं के अतिरिक्त ग्राम के प्रधान देवता से अन्य देवताओं को भी नई फसल की भेंट अर्पित की जाती है। सायर असौज माता की प्रथम तिथि को शीत का स्वागत तथा वर्षा ऋतु की विदायगी के कारण हर वर्ष की दो ऋतुओं की संधि पर्व के रूप में भी मनाया जाता है। भाद्रपद की द्वितीय पखवाड़े में वन में तितली प्रजाति के एक कीट द्वारा संगीत प्रस्तुत करना इस बात को द्योतक है कि अब बरसात समाप्त हो गई है। यह कीट सायर आई, सायर आई ध्वनि करता है। सायर मेले को मनाने के लिए प्रदेश के अन्य स्थानों से विभिन्न ढंग हैं। अर्की के इस सायर मेले के दिन स्थानीय नर-नारी प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में बावड़ियों, कुँए पर जाकर वरूण देव की पूजा-अर्चना करते हैं। वरूण देव को फसलों का प्रथम भाग अर्पित करते है। जिसमें मक्की, धान की बलियों, निंबू, अदरक, अखरोट, खट्टा, कंगन को भी इस दिन वरूण देवता को चढ़ाया जाता है। स्थानीय महिलाएं फसल के स्वागत गीत और प्रभाती भजनों के समग्र परिवेश को सुरमय बना देती है। इस मेले के पीछे लोक मान्यता है कि जब राम के द्वारा समुद्र पर सेतु बनाकर रामेश्वर में शिवलिंग की स्थापना की थी तब से इस मेले का प्रचलन होता आ रहा है। अर्की में चंदेल वंशी राजाओं का राज्याश्रय इस मेले को प्राप्त था। राजा एक उन्नत आसन पर विराजमान होकर विधिवत इस मेले के शुभारंभ की घोषणा किया करता था। इस मेले के लिए बाघल रियासत और दो राजशाहियों कुनिहार एवं मांगल में भी तैयारियां होती थी।

अर्की नगर जनपद का तहसील मुख्यालय है। यहां के लिए प्रदेश और अतंरराष्ट्रीय राजमार्गों की सुव्यवस्था है। अर्की में सायर उत्सव के आयोजन में पहला दिन भैंसों की लड़ाई के लिए निश्चित होता है दूसरे दिन कुश्तियों के लिए मिलता होता है। प्रथम दिवस भैंसों की लड़ाई का मुख्य आकर्षण होता है। लोग भैंसों को खूब खुराक देकर पालते तथा लड़ने के लिए तैयार करते थे। ग्रामीण अपने-अपने भैंसों को मेले में लाते हैं। उनकी अगली टांग को रस्से से बांध लेते हैं। भैंसों को तेल से चमकाया जाता है तथा सींगों व गले में हार पहनाए जाते हैं। भैंसा स्वभाव से लड़ाकू होते हैं। वे आमने-सामने आते ही लड़ने लगते हैं। अर्की चैगान में यह खेल होता है। सायर मेले का दूसरा दिन कुश्तियों के लिए निश्चित होता है। ख्याति प्राप्त पहलवान इस दंगल में भाग लेते है। रात्रि कार्यक्रमों के आयोजन आकर्षण का केन्द्र होते है। देखना यह है कि क्रूरता नियम की अवहेलना के तहत झोटों की लड़ाई बंद करने के आदेश जारी हो चुके है। सदियों से चली आ रही झोटो की लड़ाई सदियों से चली आ रही है जोकि धार्मिक दृष्टि से करवानी जरूरी है। देखना यह है कि लड़ाई को बन्द किया जाता है तो अर्की क्षेत्र पर देवता का श्राप लग सकता है। झोटों की लड़ाई होगी। जिला स्तरीय मेला घोषित करने पर मुख्यमन्त्री वीरभद्र सिंह बधाई के पात्र है।

।। हर मेले का आधार कोई न कोई देवता है।।

''सनातन धर्म सभा रबौण के संस्थापक श्री स्वाधीन चंद्र जी गौड-एक परिचय''

माननीय स्वाधीन चन्द्र जी गौड एक पुष्ट शरीर, सरल, प्रसन्नचित्त, कर्मठ और उदारमना व्यक्तित्व हैं। अपने आप में एक सम्पूर्ण और सूक्ष्म संस्था हैं। पहली दृष्टि में नहीं लगता कि ये कोई महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हैं। परिचय के बढ़ते हुए इनमें सागर सी गहराई महसूस होने लगती है। शायद ऐसे ही लोग आध्यात्मिक आचरण से सम्पन्न होते हैं। अपने सरकारी अधिकारी पद से सेवानिवृत्ति के बाद सेवोत्तर जीवन को जो लोकोपकारिता इन्होंने प्रदान की है वह विलक्षण है।

श्री गौड सनातनधर्म सभा रबौण (सोलन)के आदि संस्थापक हैं। सनातन धर्म के प्रति इनकी अगाध आस्था हमको सोलन (बघाट) के अंतिम महान् राजा श्री दुर्गा सिंह जी की याद दिलाती है। ये सनातन धर्म को मानव जीवन की स्थायी सम्पदा मानते हैं। इनके मत में भारत सोने की चिड़िया है। सोना केवल नोट या सिक्के ही नहीं होते। मनुष्य का असली सोना हमारे प्राचीन और नवीन सांस्कृतिक ग्रन्थों में प्रतिपादित आचरणों और व्यवहारों में है। इस सोने की पहचान मनुष्यमात्र को होनी चाहिए। हमको उससे बने आभूषण धारण करने चाहिए। हजारों आक्रमणों के बाद आज भी यह सोना ज्यों का त्यों हमारे पास है। हमारा सोना हमारे वेद, उपनिषद्, दर्शन, अवतार चरित्र और पुराणादि साहित्य हैं। इनके वाक्यों में हमारे सनातन जीवन के नियमों का भण्डार पड़ा है।

गौड जी चाहते हैं कि प्राचीन जीवनोपयोगी सूत्रों को आज की तराजू में तोलकर अपने जीवन में उतारा जाए। उन्हें वैज्ञानिक कसौटी पर कसा जाए। उनको पानी की तरह छान कर ग्रहण किया जाए। प्राचीन और नवीन जीवन शैलियों के बीच की खाई को पाटा जाए और दोनों के बीच एक सुन्दर सामंजस्य बैठाया जाए। यही हमारा उपास्य युगधाम होगा। हमारे आचरणों में इसका आध्यात्मिक मधुर फल दिखाई देना चाहिए।

उपरोक्त विचारों को आधार देकर ही उक्त संस्था के नींव का पत्थर रखा गया है। इसी सुदृढ़ नींव पर आज यह संस्था फल-फूल रही है। गौड जी के इन्हीं विचारों को मन्त्र मानकर सनातन धर्म प्रेमियों ने इस संस्था की प्रगति के लिए अपनी महती दानवीरता का परिचय दिया है। अनेक दानी, विद्वान, लेखक, कलाकार, पत्रकार, व्यवसायी और उद्योगी इस संस्था के श्रृंगार बन गए हैं। यही वह सोना है जिसको हमें समाज और विश्व को बांटना है। यह संस्था माँ दुर्गा के अवतरण की तरह है जिनका श्रृंगार समस्त देवताओं ने अपने अपने साधन देकर किया था और जिससे अधर्म का नाश होकर धर्म की स्थापना हुई थी। जय सनातन जय सोलन जय भारत।

।। भारतीय संस्कृति का हर पुजारी सम्मान के योग्य है।

25

मुजारा कानून डॉ. परमार पर दबाव बनाने में सफल क्रांतिकारी नेता

प्रो0 कामेश्वर पण्डित महान क्रांतिकारी, पार्टी (सी.पी.आई.) के राज्य सचिव, इंटक मजदूर संगठन के प्रदेशाध्यक्ष और हिमाचल जनता के सम्पादक और जाने-माने लेखक तथा वक्ता थे, लोग उनके भाषण में आवाज की बुलन्दी, शब्दों में शक्ति, विचारों में विशालता, विषय गम्भीर होने पर बड़ी साग्रता के साथ व्याख्यान करते ओर श्रोतागणों का ध्यान आकर्षित रखते। वैज्ञानिक विधि और विकासवादी दृष्टिकोण की उनके लक्ष्य की प्रमुखता थी।

कामरेड कामेश्वर पण्डित का जन्म 3 सितम्बर 1923 को गाँव डाँगरी तहसील अर्की (उनके ननिहाल) में हुआ था। उनके पिता स्व. श्री सुदामा राम जी उस समय संस्कृत के अध्यापक व माता जी चन्द्रमुखी गृहणी थी। कामरेड पण्डित की प्रारम्भिक शिक्षा छठी कक्षा तक कोटखाई जिला महासू (अब जिला शिमला) में हुई। उसके बाद उनकी शिक्षा रोपड़ में दसवीं कक्षा तक हुई। उन्होंने 1939 में दसवीं कक्षा प्रथम श्रेणी में पास की। 1939 में जब कामरेड पण्डित गवरनमैंट कॉलेज में प्रवेश के लिए साक्षात्कार हेतु गए तो कॉलेज के प्रिन्सीपल ने कहा कि उनके कॉलेज में कुर्ता-पाजामा व चोटी रखने वाला विद्यार्थी एक दिन भी न टिक पाएगा। तब उन्होंने सनातम धर्म कॉलेज में प्रवेश लिया व 1943 में बी.ए. अर्थशास्त्र आनर्ज के साथ प्रथम श्रेणी में पास की तथा 450 में से 364 अंक प्राप्त किए। एम.ए. में अध्ययन करते समय उन्हें 25 रूपया का वजीफा व 50 रूपए प्रतिमाह बी.ए. प्रथम वर्ष को अर्थशास्त्र पढ़ाने का मिलता था।

कामरेड पण्डित 1943 के बाद छात्र राजनीति में आए व 1945-46 में स्टडैंट यूनियन के महासचिव रहे, इसके अलावा वे कमान्डर छात्र वालन्टियर कोर, कॉलेज स्पीकर यूनियन के प्रधान, सचिव संगीत सोसाईटी, हास्टल परफैक्ट 3 वर्ष तक रहे।

कामरेड पण्डित 1943 में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के उम्मीदवार सदस्य बने। इस आन्दोलन के प्रति उसकी परिस्थितियां विशेष कर जो दूसरे विश्व युद्ध से पैदा हुई जैसे 10 अगस्त 1942 को मुम्बई में भारत छोड़ो जलूस पर गोली चलाने से युवा कम्युनिस्ट सारा भाई (22 वर्ष) की शहादत आल इण्डिया स्टूडैन्ट फैडरेशन कराची के नेता हेमू कलानी को यातायात में रूकावट की सजा फाँसी, भाकपा के साथी मुदथिल, पोदावरथ कुन्हांवू नययर भोईथातिल चिंकधन और पालीकन अबूवकर को फाँसी सैकड़ों कम्युनिस्ट को जेलों में ठूसा जाना व अन्य कई घटनाओं ने कामरेड पण्डित के युवा दिल और दिमाग को झंझोड़ कर क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रति आस्था की दहलीज पर ला खड़ा कर दिया।

जनवरी 1948 में कामरेड पण्डित ने मोनीटरिंग सर्विस में बतौर सब-एडिटर कार्य शुरू किया। परन्तु जून 1948 में भारत पाकिस्तान के बीच कम्युनिस्टों की सूचियों के आदान प्रदान पर उन्हें बर्खास्त कर दिया गया और गुप्तचर न केवल उनका पीछा दिन रात किया करते थे बल्कि उनसे मिलने वालों को भी तरह-तरह से परेशान करते थे। 1949 में कामरेड कामेश्वर पण्डित दयानन्द मथरादास कॉलेज में अर्थशास्त्र के लैक्चरर बने। कुछ ही समय बाद वे सनातन धर्म शिमला में अर्थशास्त्र के लेक्चरर नियुक्त हुए।

1950 में कामरेड चिन्तामणी ने हिमाचल टैरिटोरियल काऊन्सिल के लिए चुनाव लड़ा जो लायलपुर में कम्युनिस्ट पार्टी के कुलवती कार्यकर्ता थे उसे चुनाव में कामरेड पण्डित ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1950 के अन्त तक कर ई.डब्ल्यू.जोसफ, कामरेड ठाकुर दास निडर के साथ मिलकर कसौली ब्रूरी में हड़ताल में सक्रिय भूमिका निभाई। मजदूर आन्दोलन के साथ-साथ किसान आन्दोलन ने बड़ी तीव्रता पकड़ी। तेलंगाना आन्दोलन ने जिस चिंगारी को सुलगाया वह ज्वाला का रूप धारण करने लगी और बल्ह में मुजारों ने किसान आन्दोलन शुरू किया। कामरेड कामेश्वर पण्डित ने इस आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। उनके प्रयास से जोगिन्दरनगर, बल्ह, तुंगल, पछीत व चच्योट आदि में किसान आन्दोलन ने जोर पकड़ा।

कामरेड पण्डित के बार-बार प्रयास करने पर ठाकुर कश्मीर सिंह (विधायक) कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हुए। तत्पश्चात कश्मीर सिंह, सुरेन्द्र देव जोशी व कामरेड पण्डित जी न राज्य कमेटी बनाई जिसके सचिव कामरेड पण्डित बने। कामरेड ठाकुर दास निडर, कामरेड देवी राम, कामरेड प्रकाश कपाटिया (सभी स्वर्गीय) के साथ मिलकर हिमाचल के कोने-कोने में मजदूरों की यूनियनें, किसान सभा, नौजवान सभा आदि का संगठन एवं प्रसार कार्य शुरू किया। इन प्रयासों में प्रेरित होकर उस समय हि.प्र. में दलितों के सबसे बड़े नेता कामरेड

अनोखी राम बेताब जो शडियूल्ड कास्ट फैडरेशन के प्रधान थे, वे कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गए। मियां धर्म सिंह, मियां भूप सिंह, मियां धनीराम, डोडाराम के साथ गाँव-गाँव जाकर किसान सभा को संगठित किया। 1950 के चुनाव में मण्डी जिला से कामरेड कश्मीर सिंह व कामरेड हरि सिंह चुनाव जीते। संघर्षों को आगे बढ़ाने में कठिन आर्थिक हालात व विषम भौगोलिक स्थिति में भी कामरेड पण्डित अपने साथियों की मद्द से मजदूरों व किसानों के संघर्ष को दिशा देते रहे। कामरेड पण्डित की गतिविधियों पर सरकार की सी.आई.डी. द्वारा नजर रखने पर उनका कार्य करना काफी कठिन हो गया और वह रात को कार्य हेतु बाहर-एक बजे निकलते थे। उन्होंने कामरेड जगदीश तथा प्रेम सागर से मिलकर पंजाब सर्बोडिनेट सर्विस फैडरेशन का गठन किया जो उस पंजाब की राजधानी शिमला थी।

1954 में केन्द्रीय सरकार द्वारा राज्य पूनर्गठन आयोग में पहाड़ी इलाकों को मिलाकर एक राज्य बनाने के लिए ज्ञापन देने व लोगों को सजग करने के लिए पार्टी ने कामरेड पण्डित के नेतृत्व में सराहनीय कार्य किया। उस समय पण्डित घनश्याम दास एम.टी.सी. ने 'हिम ज्योति' नामक पत्रिका चलाई जिसमें वे प्रगतिशील लेख लिखते रहे।

1959 में कांग्रेस सरकार ने कॉलेज के प्रबन्ध कमेटी पर दबाव डाला कि वह कामरेड पण्डित को नौकरी से निकाल दें। मुख्यमन्त्री प्रतापसिंह कैरों ने कॉलेज की ग्रान्ट बन्द करने की धमकी दी और हालात यहाँ तक पहुँचे कि यदि कामरेड पण्डित को न निकाला गया तो कॉलेज बन्द हो सकता था। ऐसी परिस्थिति उस समय की कांग्रेस सरकार ने पैदा की। यह लक्ष्य अपने आप में इस बात को दर्शाता था कि उस समय पंजाब सरकार कामरेड पण्डित के कार्यों से कितना घबराती-थरथराती थी। सरकार भली प्रकार जानती थी कि प्रो. कामेश्वर पण्डित जो उस समय एस.डी. कॉलेज में अर्थशास्त्र विभाग के प्रोफैसर थे वह साधारण परिवार से आए थे तथा नौकरी में कमाया सारा पैसा उन्होंने पार्टी के विकास हेतु लगा दिया ऐसे में नौकरी के न होने पर कामरेड पण्डित टूट सकते हैं। उस समय कामरेड पण्डित के चारों बच्चे छोटे-छोटे थे बड़े पुत्र की आयु 10 वर्ष के करीब थी और उनकी पत्नी श्रीमती राधा पण्डित केवल एक गृहिणी थी पर हर दमन के बावजूद वह साथियों की मद्द से मजदूरों व किसानों के संघर्षों को दिशा देते रहे।

कामरेड सुन्दरैया व कामरेड सुरजीत सिंह ने अन्य साथियों के साथ हिमाचल प्रदेश का दौरा करने की योजना बनाई तो कामरेड पण्डित व कश्मीर सिंह काफी कठिन परिस्थितियों में उन्हें थानेधार से आगे तक ले गए। वहाँ जीप जो सरकारी थी (क्योंकि बाकी जीपें नहीं मिलती थी) का एक्सीडैण्ट हो गया और कई परेशानियाँ हुई। पार्टी के लोगों को काफी कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। किसान के जलूस हिमाचल के कोने-कोने से पैदल मशालों सहित चण्डीगढ़ तक कई बार हजारों की संख्या में निकाले। कामरेड प्रकाश कपाटिया के सहयोग से कई यूनियनें खड़ी की।

विशाल हिमाचल बनने के बाद सारे प्रदेश में प्रगतिशील ताकतों का काफी प्रभाव बढ़ा। कामरेड परस राम व कामरेड बंसी लाल विधानसभा सदस्य बने तथा कामरेड पण्डित के नेतृत्व में पार्टी संघर्षों में अग्रसर होती रही। कामरेड पण्डित हि.प्र. कम्युनिस्ट पार्टी राज्य कमेटी के सचिव जीवन भर चुने जाते रहे। 1965 से 1975 तक एक सशक्त किसान आन्दोलन जिसके परिणामस्वरूप हिमाचल प्रदेश मुजारियत एवं भू-सुधार कानून बना। उस आन्दोलन को जुझारू रूप देने में कामरेड पण्डित ने कोई कसर नहीं छोड़ी।

हिमाचल प्रदेश ट्रांसपोर्ट वर्कर्स यूनियन, शिमला होटल वर्कर्स यूनियन, हि.प्र. किसान सभा, इसकम, पी.डब्ल्यू डी. वर्कर्स यूनियन, चमेरा प्रोजेक्ट वर्कर्स यूनियन व अन्य कई यूनियनों की गतिशीलता बनाए रखने में कामरेड पण्डित ने हमेशा अथक कार्य किया। शायद ही कोई ऐसा मजदूर आन्दोलन हिमाचल प्रदेश में हुआ हो जिससे वह सीधे और सक्रिय तौर पर जुड़े न हो। आज शायद ही कोई ऐसा कोना हो जहाँ पर कामरेड पण्डित ने मजदूर आन्दोलन में भाग लेते हुए जलसा-जलूस इत्यादि न किए हों। उनकी मधुर आवाज में चाहे ''कामया मजूरा ओर डेरा तेरा दूर आ ......'' या ''हयूँया रियों धारा ते लैणिया गवाईया ओ किने किने खादूरियां लोकां री कमाईयां ...'' ''लाल सवेरा इस दुनिया को बदल कर दम लेगा'' ''अमन का सिपाही मेरा देश प्यारा.....'' आदि गाने जगह-जगह गाऐ हैं और वही प्रेरणा दायक आवाज क्रांतिकारी नारों से गगन गुन्जित करती रही।

कामरेड पण्डित समाजशास्त्र, मार्क्सवाद, भारतीय दर्शन शास्त्र व अर्थशास्त्र के विद्वानों में से एक रहे। उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में भी 'पहाड़ी' पत्रिका एवं 'हिमाचल जनता' का 34-35 वर्ष तक सम्पादन किया। इस महान विचारक व नेता ने हि.प्र. की ज्वलन्त समस्याओं को सुलझाने के लिए अपने विचारों से कई लोगों को प्रभावित किया।

शायद कुछ लोगों ने उनके मानवतावादी दृष्टिकोण का लाभ उठाते हुए उनके व्यक्तित्व को अपनी निजी राजनीति, अपने स्वार्थ व लाभ हेतु कई बार प्रयोग किया। प्रदेश की राजनीति में बहुत से चेहरे उनकी उदारता का लाभ उठा अपने स्वार्थों की खिचड़ी पकाते आज भी दिख सकते हैं।

कामरेड पण्डित के जीवन में कई अवसरों पर उन्हें लालच दिए गए जिसमें मन्त्री पद से लेकर कई उच्च पदों पर बिठाए जाने की बात उन्हें अपने पथ से विचलित नहीं कर सकी। संयुक्त मोर्चा सरकार के समय के कार्यों को देखते हुए उन्हें राज्यपाल बनाने की बात चली तो उन्होंने इस में भी दिलचस्पी नहीं ली। उनके संघर्षों का वर्णन करने के लिए तो शायद कई पुस्तकें लिखनी पड़े। संक्षेप में उनका जीवन संघर्ष व गति का प्रतीक रहा है। जो क्रांतिकारी आवाज हिमाचल प्रदेश के शोषितों, दलितों, मजदूरों, कर्मचारियों को बार-बार संघर्ष के लिए झंझोड़ती रही वह आवाज 29 जून की सुबह बिना किसी से कुछ कहे सदा सदा के लिए बन्द हो गई। एक महान व्यक्तित्व हमें सदा के लिए छोड़ कर चला गया। उनके अधूरे कामों को आगे बढ़ाने, दबे कुचले, गरीब असहाय लोगों, मेहनतकश आवाम के लिए बेहतर व सुरक्षित समाज की स्थापना के संघर्ष में अपना यथाशक्ति योगदान देने का संकल्प ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

अंत में हरेक व्यक्ति पण्डित जी की महती गम्भीरता का तभी से उल्लेख करता है जब से वह कम्युनिस्ट आन्दोलन में शामिल हुए थे। उन्होंने कभी भी किसी बैठक को हल्के से नहीं लिया, चाहे वह बैठक सरकारी मसले पर हो या एटक के नेतृत्वकारी सदस्यों या साधारण सभा की बैठक हो। सभी बैठकों में वह तैयारी के साथ वह बहुत सोच समझकर निर्णय करते थे। उनका जो भी सर्वोत्तम प्रयास है व संगठन के लिए हितकर और बेहतर है और यह उस ध्येय और लक्ष्य का पूर्ण रूप है जिसकी पूर्ति में उन्होंने अपने संघर्षशील हदय की आखिरी धड़कन तक काम किया।

।। भारत का विकास भारतीय विचारधारा से ही संभव है।।

खालटू

जिला सोलन की पच्छाद तहसील और पटियाला रियासत की सीमा पर कवाल खड्ड के मुहाने पर बसा एक जनपद है खालटू डुण्गी सेर। खड्ड कवाल द्वारा सदियों से लाई जा रही उपजाऊ मिट्टी इसके मुहाने पर सीधे खेतों में बिछती रही है। कुछ वर्ष पहले तक यहां धान की खेती होती थी। 'धान की खान' की संज्ञा दी जाए तो भी अतिशियोक्ति नहीं होगी। अदरक आलू, मक्की, प्याज, लहसुन की अच्छी उपज भी उगाई जाती थी।

सोलन ब्रूरी में डायर मेकिन नाम के अंग्रेज उद्योगपति ने शराब का कारखाना लगाया तो मिस्टर पीक नाम के एक व्यक्ति को इसका मैनेजर नियुक्त किया गया। मिस्टर पीक की रूचि बाग-बगीचे लगाने में थी। अपने कार्य काल में घूमते फिरते उन्हें खालटू-डुण्गी सेर जनपद को देखने का मौका मिला। धीरे-धीरे उन्होंने इस जनपद के खालटू गांव को खरीदने और यहां रसदार पौधों का बगीचा लगाने का जुगाड़ बना दिया। खालटू गांव के निचले भाग की सिंचाई कवाल खड्ड से होती है और ऊपर के भाग को सिहावग टिब्बे और धारों की धार से निकलने वाले शाक खड्ड और करोला खड्ड से सिंचाई का जल मिलता है। इस सर-सब्ज वादी ने श्री पीक का मन मोह लिया। कुछ ही समय में मझगांव गांव के निचले भाग शीस्स से लेकर खालटू के निचले भाग तक रसदार फलों का बगीचा लगा दिया गया। सिरमौर से सोलन आने वाले मार्ग पर युकलिप्टस तथा पापलर के पौधे लगा दिए गये।

चार पौधे लूकाट के एक बान्ध के समीप लगाये गए जहां पथिकों को पानी पीने और विश्राम करने का स्थान उपलब्ध करवा दिया गया।

पटियाला (पैप्सू) रियासत की एक चुन्गी चौकी भी स्थापित कर दी गई जहां सिरमौर से कृषि उत्पाद पर चुन्गी ली जाने लगी। अंग्रेजी वास्तुकला पर आधारित एक कोठी भी बना दी गई, जहां मिस्टर पीक सप्ताह के अन्त में आते थे और अवकाश के दिन भी बिताते थे। स्थानीय लोग माली के तौर पर प्रशिक्षित करवाये गये। जिनमें स्व. श्री सोहन सिंह, जवालू राम, तीखू राम, जैण्डू राम, सूरतिया तथा खीनू राम प्रमुख थे। पौधों के रख-रखाव तथा नर्सरी के काम में माहिर इन लोगों ने पूरे क्षेत्र में अच्छी किस्म के पौधे पहुँचाए जिससे इस जनपद की आर्थिकी को मजबूती मिली।

आजादी के बाद जब अंग्रेज स्वामी को वापिस इंग्लैण्ड जाने की मजबूरी हुई तो आनन-फानन में इस गांव को पंजाब के एक सेवानिवृत चिकित्सक डॉ. बग्गा को बेच दिया। सन् 1947 से सन् 1964 ई. तक डॉ. बग्गा ने इसे उपनिवेश के तौर पर रखा। डॉ. बग्गा सफेद कुर्ते-पायजामें में इधर-उधर आते जाते दिखाई देते थे। उन्होंने दो ऐलसेशियन कुत्ते पाले हुए थे। उन्होंने गन्ना उगाने का तथा सरसों और तोरिया की फसलें उगाने का काम आरम्भ किया। गन्ने से गुड़-शक्कर बनाना तथा सरसों से तेल के लिए कोल्हू स्थापित किए। डॉ. बग्गा ने लोगों को रोजगार दिया। वे दवाईयाँ भी देते थे। अपने अच्छे स्वभाव के कारण तथा दवाईयों के उपकार के कारण पूरे जनपद में लोकप्रिय हो गये।

दिल का दौरा पड़ने से अचानक डॉ. बग्गा का देहान्त हो गया। उनके वारिस यहां न रहते थे, न रहना चाहते थे। अतः इस गांव को बेचने की बात चल पड़ी। तत्कालीन मुख्यमन्त्री हिमाचल प्रदेश डॉ. यशवन्त सिंह परमार अपने देश निकाले के वक्त गांव दाड़ो-देवरिया (सिरमौर) में ठहरे थे तथा उनकी पारखी नजर में यह गांव ठहरा हुआ था। बागवानों के लिए उपयुक्त स्थान तथा कृषि-अनुसंधान के योग्य समझकर कृषि विभाग को इसे खरीदने के निर्देश दिए। शीघ्र ही यह कृषि अनुसंधान केन्द्र बन गया। यहां सब्जियों और अनाज पर अनुसंधान होने लगा।

जब हिमाचल प्रदेश पूर्ण राज्य बन गया और अपना कृषि विश्व-विद्यालय स्थापित करने की बात चली तब मुख्यमन्त्री डॉ. परमार की पहली पसन्द खालटू ही रहा।

अब तक सोलन जिला अस्तित्व में आ गया था। नौणी-मझगांव, माहलाना, मासरिया, उच्चा गांव, घोडे का घाट आदि गांव की जमीन बड़ी उपजाऊ थी। खेत समतल थे। सड़क से जुड़ी थी। सोलन राजगढ़ मार्ग पर बड़ी-छोटी गाड़ियाँ चलने लगी थी। अतः कृषि विश्व-विद्यालय की स्थापना हेतु उपयुक्त पाई गई। खालटू गांव को सिरमौर जिले की पच्छाद तहसील से काट कर जिला सोलन में मिला दिया गया। माहलाना से सड़क कवाल खड्ड के मुहाने तक बना दी गई। कवाल खड्ड से पानी उठा कर नौणी पहुँचा दिया गया।

डॉ. परमार के मुख्यमन्त्री का पद छोड़ने के बाद कृषि विश्व-विद्यालय को पालमपुर (जिला कांगड़ा) ले जाने की मुहिम चली। इसे औद्यानिक एवं वानिकी विश्व-विद्यालय बनाया गया। इसके संस्थापक के नाम पर इसे डॉ. वाई.एस. परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्व-विद्यालय का नाम दिया गया। आज यह एशिया का दूसरा ऐसा विश्वविद्यालय है। उद्यान एवं वन क्षेत्र के अनुसंधान क्षेत्र में इस विश्व-विद्यालय का विश्व में गौरवपूर्ण स्थान है।

यह पूरी खूबसूरत इमारत खालटू नाम के जमीन के टुकड़े पर ही बनी और विकसित हुई है और जिला सोलन और हिमाचल प्रदेश के नाम को चार-चाँद लगाकर रौशन कर रही है।

।। कई कारणों से सोलन का एशिया में नाम है।।

जीमी नी बेचणी (पहाड़ी कविता)

म्हारे नी जीमी बेचणी भायड़ा,
ऐबे म्हारे नी जीमी बेचणी। न..... न......
थोड़े भौते पैसे री खातरी हामें जीमी बेचो।
जुआ-खेलों, शराब पीओं, आपणी लाड़ी बेचों ।।
भायड़ा म्हारे............
होरी रे छोटू डीसी बणो म्हारे बणो डरेबल।
पड़दे लिखदे कुछ ना, रई जओ टेबल रे टेबल।।
भायड़ा म्हारे............
बारो दे आए रो फैक्टरी लांव, खूब पैसा कमाओं।
हामे जीमी बागटी पोरी बेचो, बैठणे खे नी बचा ठाओं।।
भायड़ा म्हारे............
चिकणी-चुपड़ी बातो लाय रो हामों दे जीमी ठगो।
आपी तो बड़े साब बणो, हामे नौकर तिनो रे लगो।।
भायड़ा म्हारे............
टुकड़े-टुकड़े करी जीमी बेची किया बुरा हाल।
छोटू-छोटी रे आवन्दो रा राखा नी कुई ख्याल।।
भायड़ा म्हारे नी आया बेचणी.....
ऐबे नी जीमी बेचणी.....
ऐबे नी आया बेचणी.... न..... न......

।। परम्परानुसार माता व भूमि को बेचना महापाप है।।

श्री राणी साहिबा का शरीरान्त

29 मार्च सन् 1947 में राणी साहिबा को लक्ष्मी-पूजा की रात्रि को लक्ष्मी-पूजा के समय बाईं तरफ में हल्का सा पक्षाघात का आक्रमण हो गया। इसका उपचार किया गया। कुछ ठीक होने पर देहली चले गये। वहां भी उपचार होता रहा। प्रायः स्वस्थ हो गये थे। व्रतादि नियमों का विशेष पालन करते थे। इन दिनों व्रतों के कारण वायु की विशेष वृद्धि से सोलन आने पर होली के दिन दाईं ओर भी पक्षाघात का तेज आक्रमण हो गया। वे एक दम अस्वस्थ हो गई। उनकी चिकित्सा के लिए रा. व डॉ. जीवन लाल मैडिकल ऐडवाइजर बघाट स्टेट तथा हास्पिटल लाहौर के इंचार्ज, डॉ. विग गवर्नमेण्ट हास्पिटल अमृतसर के इंचार्ज (जो कि बाद में प्रधान मन्त्री श्री जवाहर लाल नेहरू जी के व्यक्तिगत चिकित्सक बने) डॉ. गौतम माथुर बघाट-स्टेट सोलन के चीफ मैडिकल आफिसर आदि कई डाक्टर श्री राणी साहिबा के उपचार में अहर्निश प्रयत्नशील थे। नस में खून देकर प्रसन्न थे कि श्री राणी साहिबा को बचा लेंगे। किन्तु कालगति बलवती होती है। जब समय आ जाता है तो ऋषि महर्षि रामादि अवतारों को भी जाना पड़ा। मनुष्यादि प्राणियों का तो कहना ही क्या है। सायं के 6 बजे के लगभग डाक्टरों के सम्मुख ही जब मैं पहुँचा तो धमनी नाड़ी देखने पर श्री राजा साहिब को अलग में ले जाकर स्थिति बतादी और सोलन राज्य की श्री सौभाग्यवती श्री राणी शशि-प्रभा जी की अन्तकाल की सूचना देकर श्री राजा साहब को सावधान किया तथा अन्त समय के किए जाने वाले दानों को करवाने के लिए कर्मकाण्ड के विद्वान पंडित उमादत्त जी राजोपाध्याय को कहा। भोजनालय में जाकर भोजनालय-प्रबन्धक को भी सावधान किया कि सबको शीघ्र भोजन करा दो, अन्यथा पातक के कारण 24 घण्टे भूखा रहना पड़ेगा। मैं स्वयं भी इस घटना से अत्यधिक दुःखी था। जिससे मन को स्थिर रखना कठिन था। किन्तु श्री राजा साहिब से मुख में पन्चरत्न रखवाने, उत्तर शिर करवाने, अन्त काल के दान करवाने आदि के लिए स्मरण दिलाता रहा। डाक्टर लोग श्री राजा साहिब से कहते रहे कि कल से आज इनका स्वास्थ्य कुछ अच्छा है। ये स्वस्थ हो जाएंगे, यह उनको भ्रम था। जबकि मैंने इसके विपरीत कहा। अस्तु 29 मार्च 1948 की रात्रि 10 बजकर 15 मिन्ट पर नेत्रों के सामने श्री माँ आनन्दमयी जी का चित्र दिखाते हुए श्री राजा साहिब श्री राणी साहिबा को बार बार उद्बोधित कर रहे थे कि श्री माँ का चित्र देखों, माँ का ध्यान करो और साथ ही विलाप भी कर रहे थे। ऐसी हृदय-विदारक स्थिति में एक बार आँखे खोल कर सब की ओर देखा और माँ के चित्र पर दृष्टि स्थिर कर दी। इसके अनन्तर दीर्घ श्वास लिया और प्राणवायु इस शरीर से उड़ गया तथा आँखें खुली ही रह गई। दर्भासन मैंने महिले ही तैयार करवाया था। उसमें अन्तिम सांस से पूर्व ही मैंने और बाबु श्री देवी राम जी प्राइवेट सैक्रैटरी ने पार्थिव शरीर रख दिया था और मृत्यु कमरे में श्री राजा साहिब के दोनों चचेरे भाई कंवर श्री शिव सिंह जी सेसन जज और कंवर श्री हरि सिंह जी मुख्याध्यापक वी.डी. हाई स्कूल सोलन, बैठे थे। मैंने उन्हें श्री राणी साहिबा के शरीरान्त की दुःखद घटना सुनाई और कहा कि श्री मन्त्री जी को टेलीफोन करके यह दुःखद वृत्त सुनादो। उन्होंने मुझ से कहा कि यह दुःखद घटना आप सुनाएं। फिर मैंने मन्त्री श्री करतार कृष्ण जी हजारी को टेलीफोन कर के यह समाचार सुनाया और यह भी कहा कि रातों रात प्रजा तक यह समाचार पहुँचाने का प्रबन्ध कर दीजिए। इसके अनन्तर अगले दिन शव-यात्रा का समय तथा अन्य कार्यों का निश्चय करके मैं श्री राणी साहिबा के शव के पास आकर गीता-पाठ करने लग गया। श्री राजा साहिब की आज्ञानुसार कंवर श्री शिव सिंह जी और कंवर श्री हरि सिंह जी भी श्री राणी साहिबा के शव के पास बैठ गए। सारे रणवास के निवासी तथा अन्य उपस्थित जन माँ-3 बोलो का कीर्तन सारी रात करते रहे। दूसरे दिन भी शव-यात्रा में कीर्तन होता रहा। बघाट-राज्य की कुल परम्परा के अनुसार सौभाग्यवती राणी के शव का श्रृंगार सनातन धर्मवाली सौभाग्वती ब्राह्मणी करती है। अतः यह श्रृंगार मेरी धर्मपत्नी शारदा देवी ने किया। हृदय-विदारक इस दुःखद घटना से दुःखी सारे प्रजा-जन सोलन राज-दरबार में एकत्रित होकर परस्पर दुःख प्रकट करने लगे। सैकड़ों दुशाले श्री राणी साहिबा के शव पर जनता ने चढ़ाए। ग्यारह बजे दिन में शव-यात्रा प्रारम्भ हुई और एक बजे बघाट के राजाओं की परम्परागत श्मशान भूमि में पहुंचे। जो लगभग एक किलोमीटर होगी। आगे बेण्ड बाजे के साथ बघाट राज्य की पुलिस थी, जिसका नेतृत्व पुलिस इंचार्ज पण्डित श्री तारा दत्त अत्रि कर रहे थे। उनके पीछे राजा श्री दुर्गा सिंह जी नंगे पैरों चल रहे थे, फिर अर्थी और उसके पश्चात् प्रजा के गण्य मान्य तथा सर्व-साधारण जनता चल रही थी। शव-यात्रा में असंख्य भीड़ थी। विधिपूर्वक दाह-संस्कार किया गया। तीसरे दिन अस्थि प्रवाह किया किया गया। इस दिन भी काफी संख्या में लोग थे। इन अस्थियों को डोली में सजा कर प्रवाह के लिए हरिद्वार भेजा गया। पारलौकिक क्रिया श्री राजा साहिब ने अपने हाथ से की। शास्त्रीय विधि में किंचित भी कमी नहीं की। षोडश श्राद्ध में प्रत्येक पिण्ड करने से पूर्व स्नान किया। राजाओं के लिए एक दिन में 16-17 बार स्नान करना साधारण बात नहीं थी। प्रत्येक श्राद्ध में बहुत बड़ी सांगोपांग शय्याएं दी। इसी प्रकार सारे कार्य यथाविधि विशेष रूप से किए। वार्षिक, चतुर्वार्षिक आदि पर भी

विशेष खर्च किया। श्रीमद्भागवत, देवी-भागवत की कथाएं, बहुमूल्य शय्याएं दी। श्री राणी साहिबा के व्रतों के जो उद्यापन छूटे थे, उन्हें भी श्री राजा साहब ने उनकी मृत्यु के बाद किया। अब यथाविधि कर्मकाण्ड, गायत्री-अनुष्ठान, ब्रह्मभोजन के उपरान्त श्री राजा साहिब राज-भवन में अकेले रहे गए। पिता बाल्य अवस्था में छोड़ गए थे। माता युवावस्था में और श्री राणी अब स्वर्गारोहण कर गई। न भाई, न बहिन, न पुत्र, न पुत्री। सपत्नी माता और चाची के अतिरिक्त सामीप्य सम्बन्धी नहीं रहे। अब केवल श्री माँ का ही आश्रय लिया श्री राजा साहिब ने।

।। सोलन के विकास में राणी साहिबा की भूमिका अमर है।।

श्री श्री माँ का प्रथम साक्षात्कार

इस के कुछ समय बार लगभग ई. सन् 1951 में मैं महामहोपाध्याय श्री मथुराप्रसाद दीक्षित जी से प्राकृत-भाषा का ज्ञान प्राप्त करने के उद्देश्य से सोलन गया था। श्री आनन्दमयी आश्रम में राजा साहब श्री दुर्गा सिंह बघाट-नरेश द्वारा आयोजित सत्संग में भक्त-मण्डल के मध्य में उच्चासन पर विराजमान श्वेताम्बरा श्री माँ के दर्शन से मैं कृतकृत्य हो गया। उनके सान्निध्य में श्री कृष्णानन्द अवधूत जी का श्रीमद्भागवगीता के प्रथम अध्याय पर प्रवचन हो रहा था। श्री राजर्षि जी उनसे बुद्धि, मन के सम्बन्ध में कुछ प्रश्न कर रहे थे। विद्वन्मण्डल के मध्य में स्थित राजर्षि जी के ठीक पीछे जाकर मैं भी बैठ गया। सत्संग-समाप्ति के अवसर पर किसी व्यक्ति के पूछने पर श्री श्री माँ ने कल्याण का मार्ग बताया- ''सब स्त्रियों को माता समझते हुए भगवान् का भजन करो।'' श्री माँ ने कितना अच्छा कल्याण का मार्ग बताया। धन्य हैं, वे जो इसके अनुवर्ती हैं। इसी पर मैंने मातृ-पद के विवरण में परमार्थ-दृष्टि से विश्व-जननी, विश्वरूपिणी चैतन्य-शक्ति का वर्णन किया है।

नैव स्त्री न पुमानेष न चैवायं नपुंसकः ।
यद्यच्छरीरमादत्ते तेन तेन स रक्ष्यते।।

इस उपनिषद्वाक्य से युक्ति-युक्त व्यावहारिक औचित्य में समाधान तथा परमात्म-तत्त्व में समन्वय के साथ श्री माँ के श्रीमुखोक्त सूक्ति की स्वयं-सिद्ध संगति दिखाते हुए 30 पद्यात्मक मातृ-दर्शन की रचना कर डाली।

राजर्षि जी प्रकृत्य संवेदन-शील, परीक्षा-शक्ति- सम्पन्न, उदार-हृदय, ब्राह्मण विद्वानों के संरक्षक एवं उनके प्रति सौहार्द-शील थे। जिस विद्वान् का राज-वंश से कोई भी किसी समय सम्बन्ध रहा हो, उसकी पूर्ण सहायता किया करते थे। राणा दिलीप सिंह के भूत-पूर्व राज-ज्योतिषी पण्डित प्रेमपति जी के पुत्र पण्डित भवानी-दत्त जी की उन्होंने बहुत सहायता की। उन्हें तारिणी-संस्कृत-महाविद्यालय, सोलन में प्राचार्य पद पर नियुक्त किया। इसी प्रकार अपने राज-ज्योतिषी के पुत्र होने के सम्बन्ध से मेरे विषय में उनका बड़ा सौहार्द तथा किसी भी कारण से श्रद्धा, स्नेह एवं कृपाभाव रहा। यह कहना अत्युक्ति अथवा मिथ्योक्ति नहीं है। वे मुझे भी उक्त संस्था में अच्छे पद पर चाहते थे। किन्तु विधि-वश, ऐसा न हो सका। यदि ऐसा होता तो सम्भवतः मैं साहित्य-शास्त्र के अनुसन्धान से नवीन विज्ञान द्वारा संस्कृत-जगत् को मौलिक वस्तु देने में समर्थ होता।

मैं हरिद्वार में सप्तर्षि आश्रम-सप्त-सरोवर संस्कृत-महाविद्यालय के उपाचार्य पद पर कार्य कर रहा था। इसी बीच ईस्वी सन् 1961 के सितम्बर मास में राजा साहिब श्री दुर्गा सिंह जी तथा महामहिममयी श्री 105 आनन्दमयी माँ जी जन्माष्टमी पर 5-7 दिन के लिए हरिद्वार पधारे थे। श्री राजर्षि जी अपने सचिव बाबु देवी राम जी के साथ यात्रा-प्रसंग से सप्तर्षि आश्रम में आए। इस समय वहां मेरे सम्बन्ध में पूछने पर सरकार से कहा गया कि वे भजन में बैठे हुए हैं। एक बार पुनः अपने सचिव देवी राम के साथ सप्तर्षि आश्रम पहुँचे। इस समय देवी राम से मेरी कार्य-स्थिति आदि के सम्बन्ध में श्री राजर्षि जी ने स्वयं को अवगत किया तथा श्री श्री माँ के साथ सत्संग में सेवित कुटिया की ओर संकेत करते हुए कहा- 'हम यहां रहे थे' । इस के बाद इसी बीच श्रीश्री माँ भी आश्रम में पधारी थी। मैं स्वयं भी कुछ दिनों अनन्तर बघाट-हाऊस के मुख्य-द्वार पर अवस्थित भवन में राजर्षि जी से वैयक्तिक रूप से मिला और वार्तालाप किया तथा श्री श्री 1008 माँ के दर्शन किए और उनके समक्ष बैठ कर जप करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।।

{बघाट या सोलन की शक्ति उपासना एक अनुसन्धान का विषय है}

''मैं और मेरा जीवन दर्शन''

हर व्यक्ति का एक जीवन दर्शन होता है। यह पूर्वकर्म और समाज की देन होती है। मैं अपने जीवन दर्शन के लिए अपने समाज का ऋणी हूँ। जीवन दर्शन का मतलब, वह सोच है जिसके बल पर हमारा जीवन सफलता/असफलता पूर्वक चलता है। हर एक व्यक्ति के जीवन की तरह मेरे जीवन का भी एक लक्ष्य या मिशन है पर उस मिशन को मैं आज तक कोई नाम नहीं दे पाया। यह सोचकर कि दुनिया में नाम तो एक अस्थायी सम्पदा है, किसी स्थायी सम्पदा के लिए क्यों न अपने हाथ आजमाऊँ। वह स्थायी सम्पत्ति है केवल एक जगन्नियामक ईश्वर के कार्य में सहयोग। अतः वह स्थायी सम्पदा या मिशन ही मेरे समस्त प्रयत्नों का केन्द्रबिन्दु हो सकता है। वास्तव में चलती दुनिया में जिसको मिशन कहा जाता है वह तो उस स्थायी सम्पदा की ओर भेजने वाला एक रास्ता मात्र या उस रास्ते के मील का पत्थर है पर मंजिल या लक्ष्य नहीं हो सकता। यही कारण है कि मैं आज तक इस चलती दुनियाके अनुकूल अपने मिशन का नामकरण नहीं कर पाया हूँ। हाँ, अगर इस दिशा में कुछ कर पाया हूँ तो वे हैं मेरे कुछ

चिन्तन के प्रयास जो उस लक्ष्य के रास्तों की ओर संकेत करते से लगते हैं। मैं किसी जीव के कष्ट को सहन नहीं कर सकता। कष्टदाता जीव को भी मैं सहन नहीं कर सकता। सम्मिलित सहयोगपूर्ण जीवन जीना मुझे बहुत पसन्द है। वास्तव में यही परिवार, समाज और राष्ट्र के विकास का एकमात्र आधार होता है। कोई अच्छा काम सीखना, करना और सिखाना भी मेरा शौक है। इन सबके इलावा किसी भी अच्छे काम के लिए किसी को प्रोत्साहित करना भी मुझे बहुत भाता है। मेरे प्रयास, मेरे कत्र्तव्य और भावना दोनों है। इनमें मेरा हृदय और दिमाग दोनों एक साथ रहते हैं। मैं समझौते कम करता हूँ। कुल मिलाकर यही मेरा संक्षिप्त जीवन दर्शन है। मेरा जीवन एक यज्ञ, परोपकार या सहयोग की साधना है।

ग्यारह फाल्गुन विक्रमी संवत 2006, 22-02-1950, बुधवार, प्रातः 04:45 बजे सपाटू-सोलन में बंगाली डॉ. खान के अस्पताल में पूजनीय माँ श्रीमती कमलादेवी ने मुझे इस धरती माता की गोद में प्रवेश करवाया। माँ सहित मुझे मज्यारों (हरिजनों) के कन्धों पर डोली में बिठाकर वापिस घर लाया गया था। ये वे हरिजन थे जिनका गुजर बसर मेरे दादा श्री शोभाराम जी के खेतों में उनके द्वारा पैदा किए गए अनाज से ही हुआ करता था। उस समय अस्पृश्यता तो थी पर कहीं मानसिक कालुष्य नहीं था। समाज के कुछ उद्दंड लोगों को ये फटी आँख नहीं सुहाते थे। घृणा अस्पृश्यता की माँ है। मेरी वंश परम्परा में समय के सदुपयोग को सर्वाधिक महत्त्व दिया जाता रहा है। मेरे दादा जी चौथे वर्ण के लोगों से बहुत घुले मिले थे। अतः ताश-तम्बाकू उनकी दिनचर्या के भी अंग बन गए थे। इस चस्के में वे अपने सहायकों के छल-कपट के शिकार वश कुछ जमीन भी गंवा बैठे थे। जमीन को बचाने के चक्कर में पैसों की कमी के कारण दादी जी का कमाया हुआ देसी घी वकीलों को दिया जाता था। वे पैदल चलकर लकड़ी और घास सपाटू और क्यारीबंगला में बेचते थे। मज्यारों के साथ की पेशियाँ भोगने के लिए वे पैदल कुसुम्पटी जाते थे। शिक्षा के नाम पर वे केवल अपने हस्ताक्षर कर सकते थे। वे कभी झूठ फरेब नहीं करते थे। उनकी चलाई साहुकारी पिता जी तक चली। मेरी दो दादियाँ थी। बड़ी दादी के पुत्र श्री देवी राम ताया जी ने अपना अलग परिवार बसाया जिनके पुत्र पौत्र खेती-बाड़ी में काफी निपुण और समृद्ध हैं। छोटी दादी की सन्तानों में मेरे पिता स्व. श्री गीतराम तथा वर्तमान हरिराम और हेमराम जी रहे। मेरी बुआओं के भी अच्छे व सम्पन्न परिवार रहे। पिता जी दादा जी की अचानक एक टांग टूट जाने के कारण ओरिएण्टल कॉलेज जालन्धर से अपनी शास्त्री की पढ़ाई अधूरी छोड़ कर घर चले आए थे। पढ़ाई के दौरान ही उनका विवाह भी हो गया था। हम बच्चों की पढ़ाई के प्रति उनकी प्रबल लालसा देखने योग्य थी। उनका मुख्य पेशा खेती और कर्मकाण्ड थे। समाजसेवा करके उनको बहुत सन्तोष मिलता था। जालन्धर की पढ़ाई से पहले वे संस्कृत पाठशाला सोलन में भी श्री मथुरा प्रसाद दीक्षित के प्राचार्यत्व में श्री निवास, श्री सीताराम और भवानीदत्त जी आदि प्रसिद्ध विद्वानों से संस्कृत पढ़ चुके थे। इससे भी पहले हमारे पास के गांव की पाठशाला धार की बेड़ में भी सस्वर वेदपाठ का अभ्यास कर चुके थे। दुर्भाग्यवश उनसे इस अभ्यास के सीखने से मैं वंचित रह गया। वे चाहते थे कि हम पांचों भाई संस्कृत भाषा में निष्णात हों पर शायद यह विधि को मंजूर नहीं था। फिर भी संस्कृत का आवश्यक ज्ञान लगभग सभी को मिला। मेरा छोटा भाई स्व. रामनाथ होमगार्ड में सी.ओ. के पद पर रहा। तीसरा भाई केशवराम विविधविद्याविद चाचा श्री हरिराम जी से मिस्त्री का काम सीखकर जीवन यापन करता रहा है। चैथा भाई लीलादत्त खेती, होम्यो चिकित्सा और कर्मकाण्डादि विविध कार्यों से स्वाधीनता पूर्वक अपना जीवन निर्वाह करता है। पांचवां भाई उपेन्द्र सेना से सेवा निवृत्ति के बाद अपनी शिक्षा में निरन्तर विकास के साथ अध्यापन कार्य कर रहा है। हम पांचों भाई अपने अपने स्वतन्त्र स्वभाव के बल पर आगे बढ़े हैं। संस्कृत शुभ आचरण देती है। एक दूसरे को अनावश्यक सहारा हम कभी नहीं देते क्योंकि इस प्रकार के सहारे से व्यक्ति अपने पांव पर खड़ा नहीं हो सकता। जीवन में अनावश्यक सहारा लेने वाले लोग प्रायः उठ नहीं पाते जैसे कि बार-बार सरकारी सहायता लेने वाले लोगों को गिरते हुए हमने प्रत्यक्ष देखा है। आदतन वे हमेशा चाहते रहते हैं कि हमें कोई अंगुली पकड़कर ऊपर उठाए पर उनकी अपनी टांगे हमेशा कांपती रह जाती है। फलतः वे जीवन भर वहीं के वहीं मिलते हैं। कुछ अपवाद भी हो सकते हैं।

बचपन में मुझे अपने परिवार में सबसे बड़ा होने के कारण दादा जी का प्यार भरा कंधा सबसे ज्यादा मिला। वे उनकी मृत्यु से 22 साल पहले मोतियाबिन्द के शिकार हो चुके थे। हमको दादी जी व माता जी ने घरेलु काम सिखाए हमारा सारा परिवार उनकी मदद करता था। पिता जी का कठोर अनुशासन अविस्मरणीय है। दादा जी हर अवस्था में प्रसन्नचित्त रहते थे। गलत रास्ते से चलने वाले हर मिलनेवाले को आगाह करते रहते थे। उनसे मिलने वाले बन्धु बान्धवों का हमेशा तांता सा लगा रहता था। सौभाग्यवश मुझे एक संयुक्त परिवार का सदस्य होने का काफी लम्बा अनुभव है। मेरे चाचा श्री हरीराम व श्री हेमराम जी के अब अपने अपने स्वतन्त्र परिवार हैं। मेरे पिता जी चाचा श्री हरीराम जी को परिवार का प्रबन्ध सौंपते थे। श्री हेमराम जी कृषि अधिकारी पद से सेवा निवृत्त हैं। बाद में श्री हरीराम जी को अपनी ससुराल क्वारग गांव की जमीन का उत्तराधिकार संभालना पड़ा। उन्होंने सहर्ष अपनी पैतृक

जमीन मेरे पिता जी के नाम कर दी। छोटे भाई रामनाथ को भी उसके ससुराल में रहते हुए उसके लिए पिता जी ने अलग जमीन का दयारशघाट में प्रबन्ध कर दिया था। विशाल परिवार होने के बावजूद भी हम लोगों में अभी तक कोई अनावश्यक विवाद नहीं है। विवादों को अपने दायरे में ही सुलझा लेने की हमारी पैतृक परम्परा आज तक बरकरार है। मेरा परिवार परंपरा से सादगी का पक्षधर रहा है।

पिता जी ने दादा जी के न चाहते हुए भी सोलन में अपनी संस्कृत की पढ़ाई आरम्भ की थी। वहां संस्कृत पाठशाला में राजा दुर्गा सिंह जी की ओर से छात्रों के लिए भोजन-शयन का प्रबन्ध निःशुल्क होता था। अपनी शिक्षा के बीच में ही छूटने का पिता जी को बहुत मलाल था जिसका विशेष प्रभाव मुझ पर पड़ा। वे निंदाई-गुड़ाई करते हुए भी मुझे घरेलु संस्कृत शब्दों और वाक्यों का ज्ञान देते रहते थे। वे मेरे पढ़ाई के कामों में कभी बाधक नहीं बने। मैं कभी-कभी सख्त काम के डर से भी बस्ता खोलकर बैठ जाता था। धीरे-धीरे बस्ते से मेरा लगाव बढ़ता ही चला गया जो आज तक भी छूटने में नहीं आता। क्रमशः धार, देवठी और सोलन में पढ़ते हुए मैट्रिक और शास्त्री की कक्षाएं पास की। उपरान्त क्रमशः समरकोट, बखोर और कल्होग के सरकारी स्कूलों तथा दो संस्कृत कालजों में अध्यापन और प्रशासनिक कार्य किया। सेवा के दौरान मैंने क्रमशः बी.ए., एम.ए. संस्कृत, दर्शनाचार्य, पी.एच.डी. संस्कृत और एम.ए. हिन्दी पास किए। उस समय सरकारी सेवा में प्रवेश आज की तरह कठिन नहीं था। ओ.टी अध्यापक से लेकर आचार्य और प्राचार्य पद तक नियमानुसार प्रोन्नत होता रहा। पुराणों से मैंने दैनिक व्यवहार में प्रभू के दर्शन करने सीखे। मन्दिर हमको संगठित होकर रहना सिखाते हैं। भगवदर्थ किये जाने वाले कर्मों में ही भगवद्दर्शन संभव हैं।

मैं ''कुरू कर्मैव त्वम्'' का पालन करता रहा और फल स्वरूप धन स्वतः मिलता चला गया। प्राथमिक पाठशाला धार में मेरे साथी बच्चों के मुझे अति तंग करने पर मेरी माँ मुझे तत्कालीन मुख्याध्यापक श्री राजेन्द्र पाल जी के पास छोड़कर आती थी जो कि उनके स्कूल जाने के रास्ते में मिलते थे। मुझे सौभाग्यवश जीवन में एक से एक बढ़कर अच्छे अध्यापक व शिष्य मिले। पंजाब यूनिवर्सिटी चण्डीगढ़ में गुरूवर डॉ. श्री रमाकान्त जी आंगिरस ने मुझ से काफी ठोक पीटकर शोधकार्य करवाया था जो मेरे लिए बाद में बहुत लाभकारी सिद्ध हुआ और हो रहा है। स्व. श्री श्यामदत्त (नौरा), प्रो. श्री ओम प्रकाश सेरी (सोलन), प्रो. श्री केशवराम, आचार्य श्री शालिग्राम, राजा दुर्गा सिंह, श्री रामसिंहासन त्रिपाठी, स्वामी विवेकानन्द, अब्दुल कलाम और श्री मोदी जी येन केन प्रकारेण मेरे जीवन के लिए विशेष प्रेरणास्रोत रहे हैं। स्वभावतः स्वतन्त्र अध्ययन व लेखन हेतु मैं आज भी नयी पुस्तक व डायरी (कापी) पास में रखता हूँ। व्यक्तित्व विकास सम्बन्धी साहित्य रचना एवं कार्य मेरा प्रिय विषय रहा है। साहित्य का अर्थ होता है मिलकर काम करना। आज इस अर्थ में साहित्य पिछड़ रहा है। बिना लालच और डर के अपने परिवार गांव और देश के लिए हम क्या कर रहे हैं? इस प्रश्न का उत्तर हमें अपने आप में खोजकर आगे बढ़ने की जरूरत है। हमारे पोते पोतियों को अंग्रेजी आ रही है पर अपनी बोली में घरेलु चीजों के नाम तक नहीं पता। हमारी नयी पीढ़ी को माताएं चाहें तो इन बच्चों का कल्याण कर सकती हैं। इनको अपनी पारिवारिक संस्कृति का अमृत पिलाना जरूरी है। सोलन क्षेत्र के विख्यात कर्मकाण्ड विशेषज्ञ पण्डित श्री चन्द्रदत्त भारद्वाज जी की सबसे बड़ी सुपुत्री श्रीमती उषादेवी मेरी धर्म पत्नी पांचवी पास है पर संस्कृति के ज्ञान व संरक्षण में मुझे से आगे है। सचमुच संस्कार शिक्षा से ऊपर होते हैं। मेरे पास संस्कृत है तो उसके पास संस्कृति है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' हम दोनों का मूल मन्त्र है। भगवत्कृपा वश हमारे यहां बड़ा पुत्र डॉ. भीष्म शर्मा पशुचिकित्साधिकारी है तो छोटा पुत्र योगेश शर्मा प्राइवेट कम्पनी में साफ्टवेयर इंजीनियर है। वरिष्ठ अध्यापक श्री देवेन्द्र शर्मा को विवाहित मेरी सुपुत्री श्रीमती चेतना देवी (ट्रेन्ड मेडिकल लेबो. टेक्निशियन) एक गृहिणी है। कर्मकाण्ड हमारे पवित्र संस्कारों का खजाना है। उषादेवी को मैं एक पारिवारिक परामर्शदाता भी मानता हूँ। अभी तक हमारे यहां विवाह संस्कार वैदिक परम्परानुसार होते आ रहे हैं, जिसमें अपार सुख भी सबको मिला है। मैं अवैदिक विधि से विवाह का विरोधी हूँ पर यदि कोई वैसा कर भी ले तो मैं उसे प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाए जाने के हक में नहीं हूँ। उनका आपसी फैसला वे स्वयं निभाएं, उसमें हम क्यों दखल दें? हमें जो श्रेष्ठ लगे हम केवल वह करें। मेरी सुशीलाएं बड़ी व छोटी दोनों पुत्रवधुएं क्रमशः संस्कृत और हिन्दी में एम.ए. हैं। वे कुशल गृहिणियाँ हैं।

यथाशक्ति नित्यकर्म (निष्काम भाव पूर्वक अपना दैनिक कार्य परमात्मा को अर्पित करना) का पालन मनुष्यमात्र के लिए अनिवार्य है। अपने कुलदेवता और कुलपुरोहित का सम्मान करते हुए अपने कुलवृद्ध की सलाह लेते रहने से व्यक्ति की सर्वांगीण उन्नति संभव है। कुलपुरोहित सर्वोत्तम गुरू है। कुल परम्परा से आ रहे व्यवसाय की शाखा में आगे विकास करना बड़ा लाभदायक रहता है। अपने धर्म, सम्प्रदाय और कुल परम्परा का सम्मान करने से व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक उन्नति होती है। सबसे जरूरी अपनी राष्ट्रीय परंपराओं का सम्मान करना

है। हमारा जन्मस्थान, परिवार, सम्बन्धी और देश हमारी पूर्वकर्म साधना का फल है, इसका सम्मान करते हुए ही हम अपने अमूल्य जीवन को सार्थक बना सकते हैं। पूर्व साधना से जो कुछ भी हमें मिला है वह अमृत स्वरूप है, उसे श्रद्धास्वरूप अपने इष्टदेवता रूप परमात्मा के चरणों में समर्पित करते रहना हमारा परमकत्त्तव्य है। उस अमृत को समाजसेवा में लगाना उससे भी उत्तम है। लोकतन्त्र का पालन केवल चुनावों में ही नहीं हमारी जीवन शैली में होना भी जरूरी है।

जीवन में सबकुछ अपनी इच्छा से नहीं मिलता इसलिए अपनी सामथ्र्यानुसार काम करो और बदले में भगवान् जो कुछ दिलाएं उसको सहर्ष स्वीकार करो। मेरे दादाजी व माता जी हमें घर से दूर जाकर कमाने के सदा विरोधी रहे। आज सभी घर से दूर हैं। व्यक्ति की सामर्थ्य को अगर लक्ष्य मिले तो भले ही उसे चीन या जापान ही क्यों न जाना पड़े जरूर जाएं। घर की जिस जमीन माता के बल पर हम ऊपर उठे हैं उसका सम्मान करना हम कभी न भूलें। हमारे पितरों का असली श्राद्ध उस जमीन का सम्मान ही है। हमने अपनी जमीन और गौ माता के सम्मान हेतु एक सहायक कर्मचारी भी रखा है। स्वयं भी यथाशक्ति काम करते हैं। विशेषोत्सव हम सभी भाई के परिवार मिलकर एक ही रसोई में मनाते हैं। अपने संचित सुविचारों व सफलताओं के लिए मैं अपने समाज के प्रति नतमस्तक हूँ। ईश्वर कृपा से मुझे व्यक्तित्व विकास पर अनेक लेख, कविताएं और पुस्तकें छपवाने का मौका मिला, यह यथाशक्ति निरन्तर जारी भी है। मेरे लिए ईश्वर प्रदत्त स्वभाव और कार्यों से मैं बहुत प्रसन्न हूँ। अपने जीवन के विकास की कड़ियों में नशाखोरों, मांसाहारियों, रिश्वतखोरों और वेश्यागामियों की संगति में पड़ने और गिरने से कैसे बचा हूँ? यह प्रभु ही जानते हैं। हम सब पर ईश्वर अकारण कृपालु हैं। मेरे प्रियतम नेता नरेन्द्र मोदी हैं। मुझे व्यवहार में विनम्रतापूर्वक सीधी सपष्ट बात करना बहुत पसन्द है, परिणाम चाहे जो मर्जी हो। चाराखोरी, कपट, झूठ और विश्वासघात मेरे नापसन्दीदा विषय हैं। राजनीति की बजाए राष्ट्रनीति पसन्द होने से मैं भाजपा को ज्यादा पसन्द करता हूँ। आजमा कर देखे लें, सब का हित करने में ही हमारा अपना हित निहित होता है। मैं राष्ट्रविरोधी गतिविधियों का प्रबल विरोधी हूँ। केवल राष्ट्रमित्र ही मेरा घनिष्ट मित्र होता है। वन्दे मातरम् मेरा प्रियतम नारा है। न खाऊंगा न खाने दूंगा मेरा प्रियतम सिद्धान्त है। भारत माँ ही मेरी परमात्मा है। गायत्री मन्त्र का अर्थ मेरे लिए समस्त सत् प्रेरणाओं से भरा खजाना है। जय भारत।

।। हर व्यक्ति का एक जीवनदर्शन होता है।।

अच्छे काम की आलोचना से भगवान् भी नहीं बचे

देखा जाता है कि लोग अच्छा काम करने से डरते हैं। सोचते हैं कि लोग न जाने क्या क्या कहेंगे। आलोचना होगी, निन्दा होगी आदि आदि। हमारे बघाट में भी कुछ ऐसा ही देखने में आता है। इस तरह हमारा समाज उन्नति करने से वंचित रह जाता है और हम पिछड़ जाते हैं। भगवान् कृष्ण जी की कई विद्वानों ने महाभारत युद्ध के लिए आलोचना की है। कहते हैं कि उन्होंने ही कौरवों और पांडवों को युद्ध करने के लिए उकसाया था। मैं ऐसा नहीं मानता। विश्वव्यापी हित के लिए युद्ध करना भी हिन्दू संस्कृति का एक विशेषांग है। विश्व में जब अज्ञाताज्ञात कारणों से युद्ध की परिस्थियाँ बन जाती है तो युद्ध हो ही जाता है। अतः कृष्ण जी पर यह आरोप बलात् लगाया जाता है। इस विषय में संस्कृत के मूल ग्रन्थों में इसका प्रमाण है। इस विषय में एक बोध कथा बड़ी प्रसिद्ध है।

एक बार भगवान् शिव जी सपरिवार किसी उत्सव से अपने घर लौट रहे थे। वे बैल पर सवार थे। रास्ते में मिलने वाले दर्शक उनकी आलोचना कर रहे थे कि कैसा आदमी है खुद तो बैल पर सवार है और बेचारी कोमलांगी पत्नी पैदल चल रही है। वे बैल पर से उतर गए, पत्नी को उस पर बैठा दिया। आगे चलकर एक जनसमूह कह रहा था कि कैसा आदमी है बैल पर सवार है और बेटा (गणेश) पैदल चलकर थक रहा है। पार्वती उतर गई और गणेश को उस पर बैठा दिया। आगे मिले दर्शक कह रहे थे कि कैसा बेशर्म बेटा है, माँ-बाप परेशान हैं और बेटा ठाट से सवारी कर रहा है। कहने का मतलब यह कि दुनिया का काम तो आलोचना करना ही है। हमें कभी आलोचना से नहीं डरना चाहिए। अच्छा काम अवश्य करना चाहिए। उसी से सबका कल्याण होता है। जो आलोचना से डरता है वह कभी अच्छा काम नहीं कर सकता। अच्छे काम की आलोचना से तो भगवान् भी नहीं बच सके, मनुष्य की तो औकात ही क्या...? अतः हमें हर लोक कल्याणकारी काम में खुलकर और निडर होकर भाग लेना चाहिए। इसी में हमारा अपना और सबका हित है। जय सोलन जय हिमाचल।।

।। शुभ कर्मन तें कबहौं न डरौं।।

शंगोर (बघाटी-कविता)

मेरे गांवां दे करेले रा खेच।
तिंदि मोंएं शंगोर बाशदे शुणि।।
एकी खेचा दे शिमला मिर्च।
तिंदि मोंएं शंगोर बाशदे शुणि।।
एकी खेचा दे लाल टमाटर।
तिंदि मोंएं शंगोर बाशदे शुणि।।
एकी खेचा दे सौणी काकड़ी।
तिंदि मोंएं शंगोर बाशदे शुणि।।

विशेष: शंगोर एक स्थानीय कल्पित पक्षी है जो परंपरानुसार सुख और समृद्धि का सूचक है।

।। मेहनत काम में रंग लाती है ।।

बघाट रियासत-अनछुवे पल

बघाट रियासत के अन्तिम राजा दुर्गा सिंह धार्मिक वृत्ति के राजा होने के साथ-साथ न्याय परक भी थे, अपने शासन काल में प्रजा के प्रति न्याय भावना के लिए प्रसिद्ध थे। इसका उदाहरण उनके दरबार में प्रतिष्ठित पदों पर हर वर्ग व गांवों का प्रतिनिधित्व दर्शाता है कि वह सभी वर्गों को अधिमान देते थे।

उनके दरबार में सम्पत्ति व कोर्ट कचहरी का काम देखेने वाले (श्री ख्याली राम) मैहली गांव से थे, सचिव पद पर (श्री देवी राम) बेर से थे, दारोगा पद पर कुराली गांव से सम्बन्धित (श्री आत्मा राम) थे। कुल वैद्य के रूप में माधो राम चामत भड़ेच से तथा कुल पुरोहित (श्री उमादत्त) धार की बेड़ (रामपुर) गांव से थे।

राजा दुर्गा सिंह के जन्म से सम्बन्धित तथ्य है कि जन्म के समय राजा के नक्षत्र ग्रह माता पिता के अनुकूल न होने के कारण उन्हें पालने पोसने के लिए तोप की बेड़ गांव स्थानान्तरित किया गया था। वहां पहुंचने के लिये सड़क की व्यवस्था नहीं थी। कालान्तर में राजा बनने पर इस गांव को वाया बसाल जोड़ने के लिए सड़क का निर्माण आरम्भ किया गया था। जिसका निर्माण कार्य रानी साहिबा के देहान्त के उपरान्त बन्द कर दिया गया था। इस सड़क के चिन्ह अभी भी देखने में आते हैं।

वर्तमान बघाट बैंक का उद्‌घाटन राजा दुर्गासिंह के हाथों गंज बाजार सोलन में किया गया था। कालान्तर में इसको शिवदयाल ट्रस्ट भवन में स्थानान्तरित किया गया और आज इसका विस्तार आशा से अधिक हो चुका है।

।। होनहार बिरवान के होत न चीकने पात।।

बघाट रियासत में सर्व प्रथम व्यवसायी गोयल परिवार

सन् 1857 में रिवाड़ी के शासक राव तुला राय (वर्तमान में केन्द्रीय मन्त्री राव इन्द्रजीत के पड़दादा) की अपनी रियासत हुआ करती थी। उस समय रिवाड़ी एक प्रसिद्ध व धनधान्य से पूर्ण रियासत हुआ करती थी। रिवाड़ी के वैभव को देख कर अंग्रेजों ने उसे अपने अधिकार में लेना चाहा परन्तु राव तुला राय अंग्रेजों को अपना शत्रु मानता था और उसने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह करना आरम्भ कर दिया। उस समय भारतीय फौज प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के अन्तर्गत बगावत का बिगुल फूंक चुकी थी और राव तुला राय भी अपनी फौज को लेकर अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध करने को तैयार हो गया। अंग्रेज अपनी यूरोपिन फौज (मिलिट्री) को अकसर छावनियों में बान्ट कर रखा करते थे। उनमें से तीन छावनियाँ हिमाचल में हुआ करती थी (1) कसौली छावनी जिसमें 2000 गोरे थे (2) डगशाई छावनी में 2000 गोरे (3) सोलन छावनी में 1000 गोरे हुआ करते थे। जतोग छावनी में 2000 नसीरी सेना (गोरखा रेजीमैन्ट) हुआ करती थी। इस विद्रोह को दबाने के लिए अंग्रेजों को 5000 मिलिट्री की आवश्यकता थी इसलिए उन्होंने कसौली, डगशाई और सोलन की छावनी से अपनी मिलिट्री को राव तुला राय के खिलाफ युद्ध लड़ने के लिए महेन्दरगढ़ (हरियाणा) के निकट नसीपुर के मैदान भेजा जहाँ बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। उस युद्ध में राव तुला राय की सेना में अहिर जाति के लोगों ने अंग्रेजों को परास्त कर डाला और रिवाड़ी के शासक राव तुला राय की जीत सुनिश्चित कर दी। अंग्रेजों ने अपने को हारते हुए देख महाराजा पटियाला से सहायता मांगी और पटियाला रियासत को अंग्रेजों से मुक्त रखने का लालच दिया। पटियाला राजा के पास अपनी निजी फौज थी और उसने अंग्रेजों की सहायता के लिए अपनी फौज भेज दी, जिससे अंग्रेजों की ताकत चार गुना हो गई और राव तुला राय के पांव युद्ध मैदान से उखड़ने लगे। अंग्रेजों ने राव तुला राय को बन्दी बनाने का प्रयास किया परन्तु वह अंग्रेजों के हाथ नही आया और लोकगाथा अनुसार वह नेपाल भाग गया। अंग्रेजों ने महेन्दरगढ़ के समीप मोहनपुर गांव में अपनी अस्थाई छावनी बनाई और रिवाड़ी रियासत पर अपना अधिकार जमाने में लग गए। कुछ समय बाद अंग्रेजी फौज को राशन पानी की चिन्ता सताने लगी क्योंकि छावनी में फौज के लिए प्राप्त भोजन-पानी की व्यवस्था करना बहुत कठिन होता था। अंग्रेजों के मुखबिरों ने गुप्त सूचना दी कि पास के पड़तल गांव में एक सेठ रहता है जो सारे इलाके का अनाज खरीदता है और बहुत बड़ा व्यवसाई है। अंग्रेजों ने तुरन्त कार्यवाही करते हुए अपने गोरे पुलिस अधिकारी भेजे और सेठ को पकड़ कर कमाण्डर के सन्मुख खड़ा कर दिया। अंग्रेज कमाण्डर ने बन्दूक दिखाते हुए सेठ को हुक्म दिया कि छावनी में पूरा राशन सप्लाई करना होगा। सेठ ने डर के मारे हामी तो भर दी परन्तु राषन उधार न देने की बात कही। कमाण्डर ने सेठ की बात मान ली और तुरन्त मूल्य चुकाने को कहा। सेठ ने छावनी को प्राप्त राशन भेजना शुरू कर दिया। कुछ दिनों बाद जब स्थिति सामान्य हो गई तो फौज को वापिस रवानगी का हुक्म मिला। छावनी की फौज वापिस चलने की तैयारी करने लगी। कमाण्डर ने सेठ राम दयाल को अपने साथ डगशाई चलने का हुक्म दिया और कहा कि तुम हमें राशन की स्पलाई देना और हम बदले में तुम्हें उचित धन देंगे। राम दयाल जी जानते थे कि अंग्रेजों को मना करना मौत को दावत देने के समान है अतः सेठ राम दयाल को मजबूरन अंग्रेजों के साथ डगशाई छावनी में आना पड़ा। आज भी डगशाई छावनी में सेठ राम दयाल के नाम की प्लेट वाली बैरक नं. 19 मौजूद है। अंग्रेजी हुक्म अनुसार सेठ आस-पास के गांवों का भ्रमण करने लगे और जो भी मिल्ट्री की जरूरत का सामान गांव से मिलता इकट्ठा कर छावनी की सप्लाई पूरी करने में लग गए। कुछ समय बाद सोलन छावनी का ठेकेदार जो सोलन की मिल्ट्री को राशन सप्लाई करता था उसने अंग्रेजों को अपनी असमर्थता जताते हुए राशन देना बन्द कर दिया। अंग्रेजो ने सेठ राम दयाल की इमानदारी और राशन का समय पर पहुंचाने के काम से प्रसन्न होकर सोलन छावनी का ठेका भी दे दिया। उस समय सोलन बघाट रियासत की राजधानी हुआ करती थी और डगशाई सोलन से थोड़ी दूरी पर था इसलिए सेठ राम दयाल सोलन में आकर बस गए और अपना राशन का कारोबार करने लगे। अंग्रेजों को समय पर राशन की सप्लाई मिल जाती इसलिए वह भी सेठ जी का सम्मान करने लगे। इस प्रकार बघाट रियासत में सर्वप्रथम सेठ राम दयाल गोयल जी ने अपना स्थाई स्थान व व्यवसाय स्थापित किया, जो आज गोयल (बघाटी) परिवार के नाम से पूरे हिमाचल में विख्यात हैं।

।। जहाँ गैर बघाटी भी हो जाते हैं बघाटी।।

ढूरिया कबीला

जिला सोलन व शिमला की सरहद पर एक ऐसी ऊँची पहाड़ी है, जो समुद्र तल से लगभग 8000 से 9000 फुट की ऊंचाई पर स्थित है। जिसे मूंडलू की धार कहा जाता है। यह पहाड़ी सोलन जिले की कण्डघाट तहसील सोलन में पड़ती है। इसकी ऊंचाई करोल के टीबे व शिमला के जाखू के समान है। यह तीनों पहाड़ियाँ समानन्तर रूप में ऊँची है। मूंडलू की धार से शिमला का मन मोहक नजारा नजर आता है। सर्दियों में तीनों पहाड़ियों पर एक साथ बर्फ पड़ती है। लेकिन इस मूंडलू की धार को स्थानीय लोग खाई के नाम से जानते हैं। कहा जाता है कि इस मूंडलू की धार पर एक ऐसा कबीला राज करता था, जो लूटपाट में विश्वास करता था। वह कबीला इसी चोटी पर बसा हुआ था। वह कबीला जिसे ढूरिया कहा जाता था इस धार के दोनों तरफ पड़ने वाले गांव को लूटता था। लूट पाट का शिकार होने वाले गांव बाशा, बगेटू, कलहाज, थाना, धई, शोघी, गोख, सूरो कमाला, चिल्ली इत्यादी थे। वह लोगो पर बहुत अत्याचार करते थे। वह तवे से भी रोटियाँ पकाते वक्त ले जाते थे और घर में रखा दूध, घी, अनाज, पैसा व जेवर इत्यादि भी ले जाते थे। इस कबीले में लगभग दो सौ से तीन सौ लोग रहते थे। इस धार पर पानी नहीं है और न ही उस समय होता था लेकिन यह कबीला गांव बाशा से पानी मूंडलू की धार तक पंक्तिबद्ध तरीके से पहुँचाया करते थे। उन्होंने अपने महल बनाए हुए थे जिसके खंडहर आज भी विद्यमान हैं। महल के चारों तरफ उन्होंने एक गहरी खाई बनाई हुई थी जो हमेशा पानी से भरी रहती थी। जिसकी गहराई 40 से 50 फुट व चैड़ाई 20 से 30 फुट थी अपने आने जाने के लिये उन्होंने इस पर एक अस्थाई पुल लकड़ी का बनाया हुआ था और रात को वह इस अस्थाई पुल को हटा देते थे ताकि रात में कोई उनपर हमला न कर सके। इसलिए स्थानीय लोग इस धार को खाई कहते हैं। इस कबीले ने इस इलाके पर 7वीं शताब्दी से 9वीं शताब्दी तक राज किया। यह कबीला बहुत खूंखार व बेरहम हुआ करता था। इलाके के लोग उनसे डरते थे। जो उस वक्त के लड़ाई के सामान से सुसज्जित रहते थे। इलाके के लोग बेबस थे व मूक दर्शक बन कर उनके अत्याचार को सहन कर रहे थे। इस कबीले ने इन लोगों का जीना दुश्वार किया हुआ था। इस इलाके के लोगों ने देवता ब्रजेश्वर जो गांव बगेटू में स्थित है उनसे अपने दर्द की फरियाद की कि हमें इस अत्याचारी कबीले से छुटकारा दिल वाया जाए। तब जाकर इस देवता महाराज ने इस कबीले के ऊपर बीज (आसमानी बिजली) गिराई व इस कबीले के सभी लोग मारे गए व लोगों को उनके अत्याचार से निजात मिली। इसके पश्चात् इस इलाके के लोग सुख-चैन से रहने लगे।

ब्रजेश्वर महाराज की कृपा से लोगों को उस अत्याचारी कबीले से राहत मिली, अतः अब तक लोग मास जुलाई में उस देवता महाराज को गांव बाशा लाते हैं और अपनी मनते पूरी करते हैं। गांव बगेटू से देवता जी बाशा आते हैं उस दिन वहां भण्डारे का आयोजन किया जाता है और उस दिन से गांव बाशा के पव के पास (जहां पहले) जातरे आती थी वहां पांच रोज तक रात को करयाला किया जाता है। इसमें स्थानीय लोग भाग लेते हैं और स्थानीय लोगों का मनोरजन करते हैं व ब्रजेश्वर महाराज का शुक्रिया अदा करते हैं। ब्रजेश्वर महाराज ने गांव वालों को ढूरिया कबीले के अत्याचारों से निजात दिलवाई जहां हर इंसान बेबस था, तभी तो हिमाचल की भूमि को देवभूमि कहा जाता है। करियाला एक धार्मिक अनुष्ठान है। ढूरिया कबीले से निजात दिलवाने की खुशी में यह पर्व 9वीं शताब्दी से बिना किसी रोक-टोक के आज तक मनाया जा रहा है। अतः स्थानीय लोगों ने इस परम्परा को आज तक जिन्दा रखा हुआ है।

।। समाज को संकट से बचाने वाला देवतुल्य होता है ।।

बघाटी रिवाज

बघाट क्षेत्र के निम्न रिवाज महत्वपूर्ण रहे हैं:-

1. संक्रांत दिवस को परिवार के सदस्य घर में उच्च स्तरीय बनाते हैं तथा ईष्टदेव और कुल देवी के मन्दिर में जाते हैं।
2. संक्रांत, हरियाली, देवठन, माघी, बिशु, बूढ़ी दिवाली, दिवाली, मेले आदि दिवसों पर रिश्तेदारों, नवदम्पतियों को आमन्त्रित किया जाता है।
3. जन्मदिन, अन्य पूजन दिवसों पर सामर्थ्य के अनुसार जल स्त्रोतों के पास बावड़ी, खुरली, जोहड़ व रास्तों का निर्माण किया जाता है।
4. मुख्य देव स्थानों पर सभी जातियों/परिवारों के चयनित कल्याणों सदस्यों में से देवाजी, मंगलामुखी, पुजेरा, भण्डारी, सरजाई आदि समिति धर्म-आचरण की शिक्षा प्रदान करती है तथा शुभ कर्मों की प्रेरणा देती है।
5. गांव के सभी जातियों के सदस्यों आपस में प्रचलित रिश्तों जैसे मामा, बुआ, चाचा, दादा आदि से ही सम्बोधित किया जाता है।
6. बिशु पर्व पर माइके से गुड़ शक्कर आदि की त्यौहारली भेजी जाती है और दिवाली पूर्व बहनें खील-बताशे आदि के साथ माइके आती हैं।
7. शुभ पर्वों के अवसर पर घर में साबुत उड़द की दाल जरूर बनाई जाती है तथा मीठा भोजन बनाया जाता है।
8. देव-आज्ञानुसार पानी के सीमित प्रयोग तथा भोजन का एक भी दाना न गिराने का रिवाज रहा है।
9. बघाटी समाज अपनी सन्तानों को ब्रह्मज्ञानी गुरू जैसे जटोली के श्री कृष्णानन्द परमहंस, करोल के नागा जी, कुनले के महात्माजी, चायल के महात्मा जी से गुरू दीक्षा, गुरू मन्त्र दिलाते रहे हैं।

।। देवाज्ञा परमात्मा की आज्ञा के समान है ।।

बघाट रियासत से जिला सोलन बनने तक चुने गए विधायकों की सूची

(1) स्व. श्री राम दास, सोलन निर्वाचन क्षेत्र-1 (डी.एम.सी.) से विधायक सन् 1952 प्रथम चरण में और द्वितीय चरण 1954 से 1955 (2) स्व. श्री अर्जुन सिंह, नालागढ़ निर्वाचन क्षेत्र-10 विधान सभा से सन् 1967 में आजाद उम्मीदवार चुने गए व द्वितीय चरण में 1972 में विधायक रहे (3) स्व. श्री भगवान सिंह, कण्डाघाट निर्वाचन क्षेत्र-14 से सन् 1972 में विधायक चुने गए (4) स्व. श्री चमन लाल, कसौली निर्वाचन क्षेत्र-13 सन् 1977 में विधायक रहे (5) श्री स्व. दुसौन्दी राम, नालागढ़ निवार्चन क्षेत्र-10 में सन् 1976 से 1978 तक विधायक रहे (6) स्व. श्री गौरी शंकर, सोलन निर्वाचन क्षेत्र-14 से सन् 1977 में विधायक रहे (7) स्व. श्री हरि दास, अर्की निर्वाचन क्षेत्र-25 से प्रथम चरण में सन् 1962 में टैरीटोरियल काॅनसिल/विधायक चुने गए व द्वितीय चरण में 1963 से 1967 में मन्त्री रहे (8) स्व. श्री हरि नारायण सिंह भारतीय जनता पार्टी के विधायक नालागढ़ विधान सभा के सन् 1998 से 2003 तक मन्त्री पद पर रहे (9) मेजर कृष्णा मोहनी सोलन निवार्चन क्षेत्र-14 से सन् 1993 से 1998 तक विधायक रही (10) स्व. श्री हीरा सिंह पाल अर्की निवार्चन क्षेत्र-10 से प्रथम चरण में 1972 से द्वितीय चरण में 1954 से 1955 तक व तृतीय चरण में कुसुम्टी से 1962 में फिर अर्की से 1967 में 1968 व 1972 और अन्त में कांग्रेस से 1985 में विधायक रहे (11) स्व. श्री केशव राम सोलन निवार्चन क्षेत्र-12 से प्रंथम चरण में सन् 1967 द्वितीय चरण में 1962 से 1967 तक विधायक रहे। (12) स्व. श्री कृष्ण दत्त सुलतानपुरी सोलन निर्वाचन क्षेत्र-10 से प्रथम चरण में 1972 में विधायक द्वितीय चरण में लोक सभा सांसद सन् 1980, 1985, 1989, 1991, 1996 और 1998 (13) श्री रघुराज, कसौली निर्वाचन क्षेत्र-13 से सन् 1982 में विधायक रहे और 1985, 1993, 1998 में मन्त्री रहे (14) श्री राजीव बिन्दल भारतीय जनता पार्टी से सोलन निर्वाचन क्षेत्र-14 से सन् 2000 से 2003 में विधायक रहे (15) स्व. राजा राजेन्द्र सिंह अर्की, विधानसभा सुनी-26 से टैरीटोरियल काॅनसिल/विधायक सन् 1957 में और 1962 में रहे (16) श्री महेन्द्र नाथ सोफत भारतीय जनता पार्टी से सोलन निर्वाचन क्षेत्र-14 से सन् 1990 में मन्त्री रहे (17) स्व. श्री नगीन चन्द पाल, अर्की निवार्चन क्षेत्र-10 से सन् 1957, 1977 में विधायक व द्वितीय चरण में 1979 और 1982, 1990 में मन्त्री रहे (18) स्व. श्री राम प्रताप चन्देल, डून निर्वाचन क्षेत्र-11 से सन् 1977 और 1982 से 1985 में विधायक रहे (19) श्री रामानन्द प्रथम भारतीय जनता पार्टी के सोलन निर्वाचन क्षेत्र-14 से सन् 1982 में विधायक रहे (20) श्री सत पाल कम्बोज, कसौली निर्वाचन क्षेत्र-13 से सन् 1990 में विधायक रहे (21) राजा विजेन्द्र सिंह, नालागढ़ निर्वाचन क्षेत्र-12 से सन् 1977, 1982, 1985, 1990 और 1993 में विधायक रहे व द्वितीय चरण में मन्त्री रहे (22) वर्तमान में कर्नल-डाॅक्टर धनी राम शाडिल सोलन निर्वाचन क्षेत्र-14 से सन् 2013 से विधायक हैं।

कभी सोलन नाम की होती थी दो सीटें

असल में हिमाचल को पूर्ण राज्य का दर्जा मिलने से पहले सोलन नाम से दो सीटें होती थी। इतिहास में जाएं तो 1952 का पहला चुनाव दर्ज है। तब यहां से रामदास (एससीएफ) और हीरासिंह पाल बतौर आजाद उम्मीदवार चुनाव जीते थे। इन दोनों सीटों की कुल वोटर संख्या 28409 थी। उस समय अब के सोलन जिले का ज्यादातर इलाका पैप्सू यानी पंजाब में था। उसके बाद 1957 में चुनाव हुए। तब भी सोलन नाम से दो सीटें थी। उस समय कांग्रेस के केशव राम व पीएसपी के नगीनचन्द पाल विधायक बने। बाद में सोलन नाम से एक ही चुनाव क्षेत्र रहा और अनुसूचित जाति के लिए रिजर्व हो गया। मौजूदा कसौली हलके का ज्यादातर भाग सोलन में ही था। चुनाव हुए 1962 में और कांग्रेस के केशव राम विधायक बने। उस समय यहां 15749 वोटर थे। 1967 के चुनाव में भी कांग्रेस के केशव राम ही विधायक बने। वर्ष 1972 में सोलन जिला बन गया और सोलन के पांच हलके हो गए। कसौली अलग चुनाव क्षेत्र बन गया। लेकिन जिला बनने से पहले चुनाव हो गए थे और उस समय केडी सुलतानपुरी बतौर आजाद उम्मीदवार यहां से चुनाव जीते थे। जिला बनने के बाद चुनाव लड़ने वालों की तादाद भी बढ़ती गई। 1977 में जिला बनने के बाद पहले चुनाव हुए। उस समय जनता पार्टी से गौरी शंकर सोलन के विधायक बने। उन्हांेने कांग्रेस के ईश्वरी सिंह को हराया था। वर्ष 1982 में भाजपा के रामानन्द यहां से चुनाव जीते और उन्होंने आजाद प्रत्याशी गुरूदत को 2816 मतों से हराया। इसके बाद ढाई साल के अंतराल में ही दोबारा चुनाव हुए 1985 में। उसमें कांग्रेस के ज्ञानचन्द टूटू ने भाजपा के रामानन्द को 10122 मतों के विशाल अंतर से हराया। लेकिन कांग्रेस 1990 का चुनाव हार गई और भाजपा के महेन्द्रनाथ सोफत विधायक बने। उस समय भाजपा की सरकार बाबरी मस्जिद प्रकरण में गिरा दी गई थी। चुनाव हुए 1993 में जिसमें कांग्रेस की कृष्णा मोहिनी ने सोफत को बुरी तरह से हराया। अगला चुनाव 1998 में हुआ जिसमें मोहिनी ने सोफत को 26 मतों से हराया। अदालती झगड़े के

चलते दो साल बाद ये चुनाव रद्द हो गया। पहली बार इस हलके में उपचुनाव हुए जिसमें भाजपा के डाॅ. राजीव बिन्दल विधायक बने और वर्तमान में सन् 2013 से कर्नल डा धनी राम शान्डिल हैं।

यह भी खूब रही.....

1. जिला बनने के बाद सोलन विधानसभा क्षेत्र में आठ चुनाव हुए लेकिन मजे की बात यह है कि कोई भी प्रत्याशी यहां दो बार विधायक नहीं बना। कांग्रेस की कृष्णा मोहिनी 1998 में जरूर लगातार दूसरी बार विधायक बनी लेकिन उनका चुनाव अदालत ने रद्द कर दिया। जिला बनने से पहले केशवराम जरूर लगातार दो बार यहां से विधायक रहे हैं।

2. सोलन और शिमला चुनाव क्षेत्र में एक बढ़िया समानता है। यहां मोहिनी के निर्वाचन को लेकर भाजपा के सोफत अदालत में गए। चुनाव रद्द हुआ लेकिन अदालती लड़ाई लड़ने वाले सोफत को टिकट नहीं मिला बल्कि डॉ. बिन्दल को मिला और बिन्दल जीत भी गए। ऐसा ही शिमला में हुआ। विधायक राकेश सिंघा के खिलाफ भज्जी अदालत में गए। चुनाव रद्द हो गया लेकिन कांग्रेस का टिकट मिला आदर्श सूद को। सूद विधायक भी बने।

3. आज तक का चुनावी इतिहास देखा जाए तो सोलन विधानसभा क्षेत्र में सबसे कम वोट 1993 में अमित चैधरी को मिले थे। उन्हें मात्र 11 मत मिले थे और चुनाव बतौर आजाद प्रत्याशी लड़ा गया था।

4. सबसे कम मतों से हारजीत का रिकार्ड सोफत और मोहिनी के नाम है। वर्ष 1998 के चुनावों में मोहिनी ने सोफत को 26 मतों से हराया था।

5. पूर्व मन्त्री महेन्द्र नाथ सोफत के साथ भी कई रिकाॅर्ड जुड़े हुए हैं। वर्ष 1993 के चुनाव में वे भाजपा प्रत्याशी थे और उन्हें 11583 मत मिले थे। लेकिन मजे की बात यह है कि वे हारे उससे भी ज्यादा 11594 मतों से। सोफत सोलन हलके से पहले और आज तक के एकमात्र मन्त्री हैं।

6. सोलन हलके में आज तक सबसे ज्यादा वोट कांग्रेस की लहर के चलते उन्हें 23177 मत मिले थे। इस रिकार्ड के आसपास भी आज तक कोई नहीं पहुंच पाया है। फीसदी दर के हिसाब से कांग्रेस के ज्ञानचन्द टूटू को 1985 में सबसे ज्यादा 73 फीसदी वोट पड़े थे।

आदमी देख कर वोट डालता है सोलन का वोटर

सोलन विधानसभा हलके का प्रदेश की राजनीति में अपना एक अलग ही स्थान रहा है। लेकिन पिछले दो चुनावों से सोलन हलका क्षेत्रवाद की चपेट में है। मार्च 2002 तक सोलन हलके में 64970 मतदाता हो गए हैं। सोलन शहर के मुकाबले गांव के ज्यादा वोटर हैं। जिला बनने से लेकर आज तक का रिकार्ड देखें तो सोलन हलके में भाजपा के रामानन्द ठाकुर ही एकमात्र ऐसे नेता है जो गांव से हैं। हालांकि गौरी शंकर भी गांव से ही थे लेकिन वे सोलन में बस गए थे। इस हलके में भाजपा और कांग्रेस की कैडर वोटों के अलावा करीब दस हजार ऐसा वोट बैंक बन गया है जो किसी वायदे के चलते या किसी लहर में बह जाता है। वर्ष 1993 के चुनावों में शांता विरोधी लहर में ये सारा वोट कांग्रेस को गया। उसके बाद यह नारा लगता रहा कि गांव से प्रत्याशी होना चाहिए। यह नारा ज्यादा काम आया, 1998 के चुनावों में आजाद प्रत्याशी हमिन्दर ठाकुर थे और उन्हें 9739 मत मिले। इसके बाद 2000 के उपचुनाव में तो शहर गांव की लहर ही चली और एक गैर राजनीतिक व्यक्ति नेत्र सिंह ने भाजपा और कांग्रेस दोनों का गणित ही गड़बड़ा दिया। गांव के लोगों ने बाकायदा सोलन में आकर जुलूस निकाला जो काफी तगड़ा था। इसी नारे के चलते नेत्र सिंह ने दस हजार वोटों का आंकड़ा पार कर दिया।

एक खासियत यहां के वोटर की रही है कि यदि कोई खास ही लहर न हो तो सोलन हलके का वोटर देख परख कर ही वोट देता है। यहां का वोटर यदि एक बार सोफत को विजयी बनाता है तो अगली बार रिकार्ड मतों से हराता भी है। वहीं मोहिनी और सोफत के बराबर आजाद प्रत्याशी हमिन्दर को भी खड़ा कर देता है। कण्डाघाट व सोलन दो ब्लाकों वाले सोलन हलके के साथ कसौली, अर्की, पच्छाद व कसुम्पटी चुनाव क्षेत्र लगते हैं। चार हलकों की राजनीति का इस पर कोई असर नहीं होता और चारों हलकों से एकदम अलग राजनीति है यहां की। सोलन जिले के पांचों हलकों में सोलन एकमात्र हलका है जहां सबसे ज्यादा शहरी वोट है। शहर के वोट कई खेमों में बन्टे हैं। लेकिन ये भी एकतरफा पड़ जाते हैं। उपचुनाव में सोलन शहर के वोटों ने ही भाजपा के डॉ. राजीव बिन्दल को विजयी बनाया था। जिला बनने के बाद की बात करें तो दो बार जनता ने कांग्रेस को चुना है और तीन बार भाजपा को। वैसे कांग्रेस भी तीन बार कह सकते हैं क्योंकि कांग्रेस की कृष्णा मोहिनी 1998 से लेकर वर्ष दिसम्बर 1999 तक करीब डेढ़ साल विधायक रही है। यह बात साबित करती है कि सोलन के मतदाता तकरीबन हर बार नया विधायक बनाने में विश्वास रखते हैं।

।। स्वयं भी विधान का अनुसरण करने वाला विधायक लोकप्रिय होता है ।।

''माँ आनन्दमयी-व्यक्तित्व और आत्मसाक्षात्कार साधना''

बघाट राजदरबार से विशेष सम्बन्ध रखने वाली माँ का जन्म 30 अप्रैल 1896 को खेओरा (त्रिपुरा) में हुआ था। उनका पूर्व नाम निर्मला सुन्दरी देवी था। पिता का नाम विपिन बिहारी भट्टाचार्य और माता का नाम मोक्षोदा सुन्दरी देवी था। वे दोनों धार्मिक प्रवृत्ति के थे। पिता पूजा-पाठी थे तथा भक्तिपूर्ण गीत गाया करते थे। वे अपनी सुरीली आवाज के लिए कीर्तनमण्डलियों द्वारा सम्मानित होते थे। उनके उच्च विचारों का माँ आनन्दमयी पर बहुत प्रभाव पड़ा। माँ मोक्षोदा वेदों में कल्पित ब्रह्माणी की साकार मूर्ति थी। उस काल में उनके भक्तिपूर्ण गीतों की सराहना होती थी। उनके जीवन के लगभग पचास साल एक सन्यासिन जैसे बीेते। इस तरह माँ आनन्दमयी को एक आदर्श धार्मिक पृष्ठभूमि विरासत में मिली।

पुत्री के जन्म से पूर्व माँ देवी-देवताओं के स्वप्न देखा करती थी, परिणाम स्वरूप उन्हें प्रसवपीड़ा भी नहीं हुई। संत माँ (निर्मला) बचपन में भक्तिपूर्ण गीत सुनकर उसमें खो जाया करती थी। उनकी शिक्षा मोरीबन्द गांव के एक लोअर प्राइमरी स्कूल में हुई। वे नित्य स्कूल न जाने पर भी अपनी तीव्र बुद्धि से लोगों को चकित कर देती थी। दस साल की आयु में किसी कारण स्कूल छूट गया। उनके विचारों के सामने अच्छे अच्छे बुद्धिमानों के दिमाग मात खा जाते थे। उनका विवाह ढाका निवासी रमणीमोहन चक्रवर्ती के साथ हुआ, जिसने एक आध्यात्मिक मिलन का रूप लिया।

माँ अपने पति को यथापरम्परा गुरू मानती थी। वैदिक परम्परा में स्त्री का गुरू केवल पति होता है। कुछ समय बाद पति स्वयं ही उनकी दिव्यता के सामने नतमस्तक होकर उनको गुरू मानने लगे।

उनके सामने भौतिक वस्तुओं का कोई महत्व नहीं था वे निष्क्रिय होकर भी क्रियाशील थी। उन्होंने किसी व्यक्ति पर कभी प्रभाव डालने की कोशिश नहीं की फिर भी कोई उनसे प्रभावित हुए बिना न रह पाता था। पतितों की रक्षा और मानवता का कल्याण उनके जीवन का ध्येय बन गया था। उनके समस्त उपदेशों का मुख्य उद्देश्य मनुष्यमात्र को बन्धन से मुक्त कराना, इच्छाओं से छुटकारा दिलाना और अन्त में आनन्द की प्राप्ति कराना था।

वे कहती थी- हमेशा देवता का स्मरण करो, परिवार, कार्यालय और व्यापार के कार्यों में भी। जिस प्रकार तुम अपने दैनिक कर्तव्यों का पालन करते हो उसी प्रकार भगवान् का चिंतन करना भी तुम्हारा परम कर्तव्य है। तुम्हारा काम उसी परम देवता का काम है और उसी के लिए है। संसार में वही विद्यमान है। वह तुम्हारी पत्नी के रूप में, तुम्हारे साथ है। वह तुम्हारे सरकारी कामों में तुम्हारे साथ है। बस तुमको इसे महसूस करना है। सृष्टिकर्ता की याद के लिए थोड़ा सा समय जरूर निकालो। कम से कम दस मिनट का समय जरूर दो। यह समय तुम्हारे अपने लिए नहीं उसके लिए निर्धारित है यह संकल्प कर लो।

हमारे प्राचीन महापुरूषों ने अपनी साधना से सत्य की अनुभूति की है। मनुष्य अपनी इच्छाओं की दासता से मुक्त हो सकता है। इसके लिए भौतिक पदार्थों के प्रति मोह छोड़कर आध्यात्मिक जमीन (यह सब कुछ परमात्मा है का अनुभव) पर आना पड़ेगा। मनुष्य सत्ता तक पहुंचने को प्यासा है। वह अपनी का दास से संतवर नहीं है। अतः स्वयं को जानो और पहचानो। अपने अन्दर समान संसार को देखो, यह आत्मज्ञान ही सर्वोत्तम ज्ञान है। पहले अपने हृदय को शुद्ध करो फिर उसमे ईश्वर का वास होगा। जब मनुष्य अपनी साधना से ईश्वर के साथ तादात्मय पा लेता है तब वह पूर्ण हो जाता है, ईश्वर को अपनी आत्मा के रूप में जान लेना है।

ईश्वर के नाम का जप करो। मन्त्र में ईश्वर का नाम है। वह परमात्मा का संकेत चिह्न है। उसके बार बार जपने से मनुष्य का हृदय पवित्र हो जाता है। अन्त में वह मुक्त हो जाता है। हर मन्त्र के तीन भाग बीज, व्याहृति और देवता होते हैं। ऊँ मन्त्र मुक्ति का साघन है। ऊँ में महान सृजनात्मक शक्ति है। यह वैज्ञानिक तथ्य है कि ऊँ ध्वनि के कंपन में सृजनात्मक शक्ति है।

मनुष्य का मन हमेशा बेचैन रहता है। उस पर नियन्त्रण रखना कठिन होता है। तपस्या से वह नियन्त्रित हो सकता है। तप का मतलब है दिव्यता या अलौकिकता का ध्यान करना। अपने चित्त को शुद्ध करो। संयम सप्ताह महाव्रत से वह शुद्ध हो सकता है। यह महाव्रत एक सप्ताह का कठोर आंतरिक अनुशासन है। इसमें शुद्धता भक्ति, ध्यान और जपादि पर बल दिया जाता है। इसमें भौतिक मानसिक और आध्यात्मिक विकास होता है। इसमें जीवन को दिव्य बनाने में सहायता मिलती है। मनुष्य की आत्मा ईश्वर का प्रकाश है। मनुष्य के आन्तरिक जगत की एक अद्‌भुत चीज ईश्वर की चमक से आलोकित हो सकती है। महाव्रतम् उसी दिशा में ले जाने का एक सुन्दर प्रयास है। तुम कौन और कहां से आए हो आदि बातें जानने के लिए गीता जी के अनुसार केवल शरीर की निरंकुशता से मुक्त

होना ही काफी नहीं है उसके लिए इच्छाओं की तानाशाही से भी मुक्त होना जरूरी हे। ज्ञात हो कि महाव्रतम् की अधिक जानकारी सोलन के राजपरिवार से प्राप्त की जा सकती है।

हमारा श्वास व्यर्थ न जाए। फुर्सत मिलते ही चुपचाप जप करें। जप से ईश्वर मनुष्य को अपनी ओर खींचता है। ईश्वर के बिना शान्ति मिलना असम्भव है। अपने इष्ट का ध्यान करो। बाहरी दुनिया की ओर ध्यान न जाए। इसमें अवश्य ईश्वर की कृपा होगी एक बार के भी सच्चे ध्यान से दुनियावी आकर्षण और आनन्द जाता रहता है। ध्यान से प्रकाश और प्रकाश से ईश्वर का दर्शन मिलता है। परमात्मा या देवता प्रकाश या ज्ञान रूप ही तो है।

शुद्ध और सात्विक भोजन से हमारा हृदय बनता है और मन ईश्वर में आता है। नित्य रामायण, महाभारत, पुराण और गीता का पाठ करें। मौन रखने से भी मन नियन्त्रित होता है। मौन का मतलब है मन को ईश्वर पर केन्द्रित करना। सर्वोच्च ज्ञान किसी चीज से नहीं बल्कि अपने आप प्रकाशित होता है। मौन से अज्ञान रूप अंधकार का परदा हट जाता है। इस अवस्था में हमारे अन्दर ईश्वर के इलावा किसी चीज का वास नहीं होता। मन जब बाहर की बजाए अन्दर लगने आता है तो मौन में ईश्वरानुभूति करने में मदद मिलती है। मन के आत्मा के संसर्ग में आने से उसके प्रभाववश वह शुद्ध और जागृत हो जाता है। संसार के चिन्तन से बाहरी शक्ति नष्ट होती है जबकि ईश्वर चितन से वह बढ़ती है। माँ स्वयं मौन, सक्रिय संसार से अनासक ईश्वर-चिन्तन में लीन और मानवकल्याण में सदा व्यस्त रहीं।

सत्य की साधक होने के नाते माँ ने सदैव मानवमात्र में प्रेम बांटने का प्रयास किया। शान्ति और विश्वबन्धुत्व के लिए निष्ठा से काम किया। उनकी प्रतिभा, विद्वत्ता और महानता अगाध थी। उन्होंने इसी जीवन में ईश्वर के साथ एकाकारता साधी थी। मनुष्य को दिव्य कर्मों का सच्चा कर्ता होना चाहिए। हम अपनी सारी कामनाओं और अहंकार से अपने आप को मुक्त करें और सारा जीवन भगवदर्पित करें। परिपूर्णता की चरमावस्था में मनुष्य जानेगा कि वह शाश्वत सत्य का ही एक अंश है। व्यक्तिगत सिद्धि पाना मात्र ही माँ का लक्ष्य नहीं था, उन्होंने मनुष्यमात्र को अपनाया। वह धरती पर सामाजिक जीवन में पूर्णता प्राप्त जीवन के लिए निरंतर प्रयास करती रही ताकि मनुष्य एक पूर्ण और समग्र रूप में पूर्ण व्यक्ति बन सके। उस नए समाज में हर व्यक्ति अपनी आत्मा का साक्षात्कार कर चुका होगा। मनुष्य के समस्त अंग शुद्ध होकर अतिमानस सत्य चेतना के ढांचे में ढल जाएंगे। वह हर क्रिया में अपने उच्चतम ज्ञान की वास्तविक्ता को प्रकट करेगा। उन्होंने एक बार कहा था- मैं जो था वह हूँ और सदैव रहूंगा। आत्मसाक्षात्कार की यह सर्वोच्च स्थिति उनकी संसार को प्रेरणा है।

।। भगवान् का स्मरण करो और अपने कर्तव्य का पालन।।

अतीत में सोलन (बघाट)

भूतपूर्व जिला महासू की सोलन एवं अर्की तहसील तथा शिमला जिला की तत्कालीन कण्डाघाट तहसील एवं नालागढ़ उप-तहसील को मिलाकर पहली सितम्बर, 1972 को सोलन जिला का अस्तित्व स्थापित हुआ है। सोलन शहर इस जिला का मुख्यालय है। भगवती शूलिनी सोलन शहर की अधिष्ठात्री देवी है। शूलिनी शब्द से ही सोलन शब्द व्युत्पन्न हुआ है।

बघाट:

मध्य भारत स्थित राजा भोज की धारा नगरी के पंवार राजपूत राजवंश के दो भाई एक बार हिमाचल की ओर आए। उनमें से एक ने वर्तमान उत्तराखण्ड प्रान्त के गढ़वाल में गढ़वाल राज्य की स्थापना की और दूसरा वर्तमान हिमाचल प्रदेश के सोलन जिला के मुख्यालय सोलन से 12 कि.मी. दूर जौणाजी के पास आकर बसा। उसका नाम बसंतपाल था। बसंतपाल ने यहां के स्थानीय शासक मुआणों को मार कर अपना राज्य स्थापित किया और उसने अपने नाम से अपने राज्य और राज्य की राजधानी का नाम बसंतपुर रखा। राजा बसंतपाल की बारहवीं पीढ़ी का राजा इंद्रपाल था। इंद्रपाल के समय तक बसंतपुर राज्य का पर्याप्त विस्तार हो गया था। उस समय इस राज्य में 12 प्रमुख घाट अर्थात् दो पहाड़ियों के बीच के आवागमन के मार्ग स्थल सम्मिलित थे। ये बारह घाट इस राज्य की विशेष पहचान बन गए थे। इन बारह घाटों के आधार पर ही राजा इंद्रपाल ने बसंतपुर राज्य का नाम बघाट रखा। ये 12 घाट कौन-कौन से थे? यह स्पष्ट नहीं है, लेकिन सोलन जिला में आज भी अनेक प्रसिद्ध घाट हैं, जैसे- चम्बाघाट, केथलीघाट, ओच्छघाट, कण्डाघाट इत्यादि। इस राजवंश के 73वें राजा दलीप सिंह (1862-1911) ने बघाट राज्य की राजधानी सोलन में स्थानांतरित की। राजा दलीप सिंह के पुत्र राजा दुर्गा सिंह के समय में 15 अप्रैल, 1948 को यह राज्य भारत संघ में विलय हो गया।

बाघल:

धारा नगरी से ही पंवार राजपूत तीन भाई अजय देव, विजय देव और मदन देव पहाड़ों की ओर आकर वर्तमान अर्की तहसील के साई नामक स्थान पर ठहरे। यहां अजय देव ने अपने राज्य की स्थापना की। इनके स्थापित राज्य में बड़े घने जंगल थे और उनमें बाघ बहुत होते थे। अतः बाघों का घर बाघालय की भूमि से आवृत यह राज्य बाघल कहलाया।

अर्की:

बाघल राज्य की राजधानी पहले साई, दाड़ला, धुन्दन आदि स्थानों में रही। राजा सभा चन्द (1640-1670 ई.) सन् 1643 में इस राज्य की राजधानी धुन्दन से अर्की ले आया और उसके बाद भारत संघ में विलय होते तक यही इस राज्य की राजधानी रही। यहां पर आक के वृक्ष बहुत पाए जाते थे। आक को संस्कृत भाषा में अर्क कहते हैं। अतः आक की बहुलता से आक अर्थ में प्रयुक्त अर्क शब्द से इस स्थान का नाम अर्की पड़ा है।

हिण्डूर:

वर्तमान नालागढ़ तहसील का भू-भाग भूतपूर्व हिण्डूर राज्य के अंतर्गत आता था। हिण्डूर में पहले हाण्डू ब्राह्मण की ठकुराई थी। कहलूर के राजा काहन चंद के ज्येष्ठ पुत्र अभय चंद (1100-1171 ई.) ने सन् 1100 में हाण्डू-ब्राह्मण को युद्ध में मार कर यहां अपना राज्य स्थापित किया। हाण्डू की ठकुराई होने से इस राज्य का नाम हिण्डूर प्रचलित हुआ है।

नालागढ़:

हिण्डूर राज्य की राजधानी नालागढ़ थी जो इस समय सोलन जिला की नालागढ़ तहसील का मुख्यालय है। यहां एक नाले के किनारे की पहाड़ी पर हिण्डूर राज्य का गढ़ निर्मित हुआ है। अतः नाला तथा गढ़ के योग से इस स्थान का नामकरण नालागढ़ हुआ है।

रामशहर:

रामशहर की स्थापना नालागढ़ हिण्डूर राज्य के राजा राम चंद (1522-1568 ई.) ने की है। राजा रामचंद द्वारा स्थापित होने से ही इस शहर का नाम रामशहर रखा गया है। नालागढ़ से 20 कि.मी. दूर यह स्थान हिण्डूर राज्य की ग्रीष्मकालीन राजधानी भी रहा है। इस समय यहां रामशहर उपतहसील का मुख्यालय है।

रामगढ़:

रामशहर के साथ ही पहाड़ी पर राजा राम चंद ने एक गढ़ का निर्माण किया था। इन्हीं राजा के नाम से इस गढ़ और गढ़ स्थल का नाम रामगढ़ है।

हरदेवपुराः

कुनिहार ठकुराई के शासक हरदेव सिंह (1905–1948 ई.) कुनिहार के बणिया देवी मन्दिर में प्रायः जाया करते थे। उन्होंने इस मन्दिर के समीप में अपने परिवार के लिए एक आवास-भवन बनाया जहां अब एक गांव बस गया है। राजा हरदेव सिंह के आवास भवन के यहां होने से इस स्थान का नाम हरदेवपुरा पड़ा है।

मांगलः

मांगल वर्तमान जिला सोलन के अंतर्गत एक भूतपूर्व छोटी-सी रियासत थी जिसका संस्थापक राज्यस्थान मारवाड़ का एक खत्री राजपूत मंगल चंद था। राजा मंगल चंद के पिता ने मारवाड़ से आकर राजा बिलासपुर की सेना में सूबेदार के पद पर नौकरी की। उनकी कार्यकुशलता और कर्तव्यनिष्ठा से प्रसन्न होकर राजा बिलासपुर ने उन्हें पुरस्कार स्वरूप एक क्षेत्र जागीर में दिया। इसी जागीर पर उन सूबेदार के पुत्र मंगल चंद ने सन् 1240 ई. में अपना राज्य स्थापित किया। राजा मंगल चंद के नाम से ही उनके स्थापित राज्य और इस राज्य के राजधानी स्थल का नाम मांगल रखा गया है।

पट्टाः

सोलन की तहसील कसौली के इस स्थान पर महलोग राज्य के राजा नाहर चंद के समय 1720 ई. में महलोग की राजधानी घड़सी से स्थानांतरित होकर पट्टा में स्थापित हुई। पट्टा शब्द पाटने-उखाड़ने के अर्थ में प्रयुक्त होता है। राजधानी बसाने से पहले यहां बांस का घना जंगल था जिसे पाट कर इस स्थान को राजधानी के योग्य बनाया गया। इस प्रकार जंगल पाट कर बसाया यह राजधानी स्थल पट्टा कहलाया और पट्टा में राजधानी होने से महलोग रियासत पट्टा महलोग के नाम से प्रसिद्ध हुई।

सूरजपुरः

पट्टा महलोग रियासत के शासक दलीप चंद (1849–1880 ई.) ने मैदानी क्षेत्र से लगते अधिक गर्म क्षेत्र में अपनी सर्दियों की राजधानी स्थापित की। इस स्थान पर सर्दियों में सूरज का मन लुभाता ताप मिलता था इसलिए इस स्थान का नाम सूरजपुर रखा गया। राजा दुर्गा चंद (1902–1934 ई.) ने राज्य की राजधानी पूर्ण रूप से पट्टा से सूरजपुर स्थानांतरित की, लेकिन उनके उत्तराधिकारी राजा नरेंद्र चंद ने पुनः पट्टा को अपनी राजधानी बनाया।

{*पहले सोलन को धर्मराज की नगरी भी कहा जाता था*}

म्हारे शब्दा माँए म्हारि पावन सांस्कृतिक परम्परा

म्हारी बघाटि बोली रे शब्दा माँए म्हारि पावन सांस्कृतिक परम्परा विद्यमान असो। यही परंपरा म्हारी जीवन शैली रा आधार असो। म्हारि शब्दसम्पत्ति शब्दशक्ति रे रूपा माँ असो। यही शक्ति म्हारि रक्षा अरो पालन करो। हामा खे आपणे बीतरे झांकणा चेंइ जे हामे इयां शक्तिमाता खे छाड रो केई आपणा नुकसान तो नी लग रोए करनि। म्हारे बोले दे शब्द म्हारी जीवन शैली रा निर्धारण करो। एस बारे माँए निम्नांकित शब्दार्थसूचि साय तूमे आफी देख सको जे म्हारि आगलि पिढ़ि केतणे पाणी माँए असोः-

आमा		माँ
काल	-	अकाल
बरप्याल	-	उपद्रवी
बछावल	-	झाड़
छाबटु		रोटी का डब्बा (बाँस निर्मित विशेष पात्र)
ड्हाब		- पतलापन
पुन्या	पूर्णिमा	
कथा	-	सत्यनाराण की अथवा अन्य कथा
पणमेसर	-	परमेश्वर
ग्हारा	दाग	
पेरी पे		प्रणाम
पांयद		निचला भाग
शीरा	-	ऊपर का भाग
जवाड़		फसलनाशक जीव

चेटा - तंग
शूका - सूखा
ढो - दूरी
बरछली उछलना
गलन पैड़ा - जीवननाशक गतिविधियां
रहामि कामचोर
उज़्मा पारम्परिक उत्सव
नोहरा दोषारोपण
पटांडा कागजनुमा पतली रोटी
ठगड़ा वरिष्ठ
ग्हरि - घर की स्थिति
नखिद नीच
कुड़मा परिवार
धैंण - परिवार की विवाहित बेटी
हालि - हलवाहक
क्युणि कंजूस
चंद्रा - चालाकी बरतने वाला
ध्याड़ि दिहाड़ी
ब्यालि शाम का भोजन
च्हेलि सुबह का भोजन
हीला - आदत से मजबूर
लपोड़ा मेन्टेनेन्स
बशांव विश्राम
आड़बंद - कौपीन
पचाका पकड़ने की कोशिश
कान्ह कन्धा
परालबत - पूर्वकर्म
सुर्ग - स्वर्ग
डाम - असह्य गर्म स्पर्श
वांज - इलाज
भलख सबेरा
पौह्णा अतिथि
लींडा - पुच्छहीन
व्याद - रोग या व्यसन
ग्वाड़ा खुला
पगड़ा प्रकट
तेलड़ - तीन लड़ियों वाला
ज्वानस महिला
कबेत्ता अनजान
खूड - मिट्टी की छत
ठींड - आदमी
पातल पत्तल
बाडि - मिस्त्री
पंचि - विशेष पंचायत
बाए - वायुरोग
दपौर - दूसरा पहर

कांग	-	वैमनस्य
आल पताल	-	अर्थहीन
बीख	-	कदम
शौह्	-	दरार
रीष	-	ईर्ष्या
मीष	-	स्पर्धा
नभाग		भाग्यहीन
गौह्र	-	घर
बिस्ता		देर से
साजि		संक्रान्ति
जगात		टैक्स
न्हेरा	-	अंधेरा
ड्हाल		प्रणाम
तौन्दि		गर्मी का मौसम
नौणि	मखन	
गलिया		कामचोर
बांडा	-	हिस्सा
तलोआ		तिल का लड्डू
हाना	-	नुकसान
डांडा	-	मक्की का रफ हिस्सा
आखला	-	जमीन का चैकोर भाग
डींग	-	लाठी
शौज	-	आश्विन
सीना	-	गीला
मांड	-	जरूरत
थाला	-	बर्तन का निचला हिस्सा
काछ	-	कंधे का निचला हिस्सा
हलश		हल में लगने वाला लम्बा डंडा
संफ	-	चट्टाई
डाल	-	वृक्ष
ओडकि		बांस की बनी टोकरी
ओग	-	हल में लगने वाला लकड़ी का टुकड़ा
ज्वांण्स		औरत
ठींड	-	आदमी
भलैठि		आग जलाने में उपयोगी ब्यूल की लकड़ी
बाट	-	रास्ता
टौल	-	खाना बनाने वाले
बेलड़ा		काम न करने वाला
ब्वारा		सामुदायिक कार्य में सहयोग
पाणी	-	चप्पल या जूता
फाट	-	खेतों में हल से लगने वाली लकीर
मोई	-	खेत समतल करने वाला उपकरण
नमाला		देवताओं के निमित्त अनुष्ठान
दिवां	-	देवता का पुजारी (गुर)
पजार		देवता को भेंट किया गया अनाज

गाडका		घास का बोझा
छ्वायण	-	गोशाला में बिछाए जाने वाला घास-फूस
शजाइ		गोबर की ढुलाई
पिशणा		अनाज को पीसना
जंदा	-	ताला
आंवदा		चूल्हे पर बर्तन रखने की जगह
खिणटु		पुराने कपड़ों से बना बिछौना
श्रेणा	-	तकिया
जकरौला	-	शोर-शराबा
चांगड़		ऊपरी मंजिल में बना भण्डार घर
दयोली		दहलीज
गरि	-	घर की स्थिति
प्लाण		अस्त व्यस्त सामान रखना

विशेष: भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार बघाटी बोलने वाले लोगों की संख्या निरंतर घटती जा रही है।

।। उचित रूप से जाना गया और प्रयोग किया गया एक शब्द भी दिव्य सुख प्रदान करता है ।।

पत्रकारिता, साहित्य और संस्कृति के पुरोधा पण्डित संत राम शर्मा अब नहीं रहे....

धरा पर मानव का आना-जाना सदियों से चला आ रहा है। कौन कब जायेगा इसका इल्म न कभी किसी को हुआ है और न होगा। यह दुनिया की सबसे बड़ी सच्चाई है। लेकिन कुछ शख्सियतें ऐसी होती है, जिनके जाने के उपरांत भी उनकी यादें, उनके कार्य व पहचान सदैव जिंदा रहती है। हर गांव, शहर, कस्बे का नाम लेते ही उनकी तस्वीर स्पष्ट झलक जाती है। सोलन शहर की एक जानी पहचानी शख्सियत संत राम शर्मा जिन्हें पण्डित जी के नाम से जाना जाता था, ने 4 मई 2017 को अपने जीवन की अंतिम सांस ली। दशकों से साहित्य, पत्रकारिता, पहाड़ी संस्कृति के संवर्द्धन तथा समाज सेवा से जुड़े पंडित संत राम शर्मा के जाने से समाज को बहुत बड़ी क्षति हुई है।

पंडित जी को हिमाचल के पत्रकारिता क्षेत्र में एक ईमानदार, निडर तथा निष्पक्षता के लिये जाना जाता रहा है। उनका जन्म सोलन के समीप परहाड़-की-बेड़ में पंडित शोभा राम शर्मा के घर 18 मार्च, 1934 को हुआ। आरम्भिक शिक्षा वी.डी. (विक्टोरिया दलीप) हाई स्कूल, सोलन जिसे अब वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला (छात्र) के नाम से जाना जाता है, में हुई। बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि कुछ नया सीखने का जज्बा उनमें रहा। स्नातक की शिक्षा अम्बाला के एसडी कॉलेज से ग्रहण की। तदोपरांत दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी विषय में स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल की उसके उपरांत दिल्ली में टेलीफोन विभाग और दिल्ली के ही दयाल सिंह कॉलेज में अंग्रेजी के प्रवक्ता के रूप में सेवायें दी। महानगर में एक छोटे से गांव के इस वाशिन्दे का मन नहीं लगा। अपनी माटी की गंध वापिस सोलन ले आई।

पढ़ाई के दौरान से ही कुछ नया करने व लिखने का शौक था। लोकहित तथा जनहित के मुद्दों को सम्पादक के नाम पत्र से उजागर करना आरम्भ किया। भाषा पर पकड़ तथा समसामयिक विषयों पर लिखने पर लिखने के कारण समाचार पत्रों में स्थान निरंतर मिलता गया। पहचान बनने पर इंडियन एक्सप्रेस समूह से जुड़े। बाद में आकाशवाणी शिमला के साथ जुड़कर सोलन जिले के घटनाक्रम, राजनीति सहित समसामायिक विषयों पर निरंतर लिखते रहे। दो दशकों तक इंडियन एक्सप्रेस से जुड़कर एक पहचान बनाई।

अंग्रेजी तथा हिन्दी भाषा में जहां उनका समान अधिकार था, वहीं संस्कृत, उर्दू भाषा तथा सोलन जनपद की बघाटी भाषा पर भी उनकी मजबूत पकड़ थी। अंग्रेजी पत्रकारिता से जुड़े होने के बावजूद वे बघाटी बोली में संवाद करने को प्राथमिकता देते थे। उनके पास बघाटी बोली के शब्द, वाक्य, मुहावरों तथा लोक कहावतों का अथाह भण्डार था।

पत्रकारिता के साथ-साथ उन्हें लेखन व पढ़ने का भी शौक रहा। सोलन शहर में राज्य पुस्तकालय के अलावा अगर कहीं पुस्तकों का भण्डार है तो वह उनके घर पर ही है। यह संग्रहालय से कम नहीं है। उन्हें पुस्तकें खरीदने का बहुत ज्यादा शौक था। शिमला, चण्डीगढ़ तथा दिल्ली में कभी भी पुस्तक मेला लगा हो तो वे अपने साथी बलदेव चैहान के साथ पुस्तकें खरीदने अवश्य जाते थे। संस्कृति, साहित्य, प्रदेश की राजनीति, परम्पराएं, विदेश नीति किसी भी विषय पर उन्हें मूल रूप से जानकारी होती थी। वे अपने आप में ज्ञान का भण्डार थे। वर्षा हो, गर्मी हो, तुफान हो, बर्फ हो उन्होंने कभी भी इसकी परवाह नहीं की वे बेधड़क सोलन माल रोड पर चहलकदमी करने तथा का ॅफी हाउस में विभिन्न विषयों पर चर्चा करते देखे जा सकते थे। 80 के दशक में उनके साथी दि ट्रिब्यून के दत्त साहिब रहे। सोलन में एक कहावत प्रचलित है कि तीन लोग रोज माल रोड पर चहलकदमी करते हैं उनमें एक पंडित जी, दूसरे दत्त साहब तथा तीसरा उनका स्कूटर होता जिसे वे माल रोड के एक छोर से दूसरे छोर तक साथ घसीटते रहते।

पंडित जी का जीवन एक खुली किताब की माफिक रहा। सदैव मित्रों से घिरे रहे। मित्रों के काम को सदैव अपना काम समझा। किसी भी आयु वर्ग के साथ वे सहजता से घुल मिल जाते थे। देश व प्रदेश के प्रतिष्ठित साहित्यकारों के साथ उनका गहरा नाता रहा। वे राज्य भर में होने वाले सभी सम्मेलनों में भाग लेना अपना कर्तव्य समझते थे। लेकिन वे सदैव आत्म प्रचार से दूर रहते थे। हिमाचल राज्य पत्रकार संघ से वे 35 वर्षो से जुड़े रहे वे कभी भी अपना साक्षात्कार तथा जीवन में साहित्य, लेखन व सामाजिक कार्यों को प्रदर्शित करवाने के पक्षधर नहीं रहे। उनके परम मित्र रत्न चन्द निर्झर ने जोर देकर उनके जीवन की गहराइयों को अपनी डायरी में लिखने का दुस्साहस किया।

पंडित जी के लेखन की शुरूआत 'एक छत के नीचे' उपन्यास से हुई। उनका प्रथम उपन्यास सोलन की ही कौसल प्रिंटिंग प्रेस से प्रकाशित हुआ। इसके उपरांत उनका अंग्रेजी उपन्यास 'बदरिंग मास' इंग्लैण्ड

से प्रकाशित हुआ। अंग्रेजी साहित्य में इस उपन्यास को सर्वत्र सराहना मिली। इनके उपरांत 'साहित्य निकाय' पुस्तक लिखी। इसमें हिमाचल के शीर्ष लेखकों को स्थान दिया गया। कहानी लेखन में भी उन्हें महारत हासिल थी। मासूम इष्या कहानी बाल मनोविज्ञान का सजीव चित्रण करती नजर आती है।

उनकी बोलचाल में तथा हंसी में भी व्यंग्य की झलक आती थी। करेवड़ा कृष्ण उनकी व्यंग्य पुस्तक, वर्तमान में पत्रकारिता के रूपों को दर्शाती है। इसे लिखने का दम भी पंडित जी को ही था। पहाड़ की बदलती पत्रकारिता का चित्रण इस पुस्तक में व्यंग्यात्मक विधा से लिखा गया, जो समाज के लिये आज खतरा बना है। डॉ. परमार के साथ बिताये पलों को वे वेबाकी से सुनाते थे। आजकल वे डॉ. परमार के जीवन, कार्यों तथा उनके दर्शन पर लिख रहे थे। उन्होंने सोलन जनपद की संस्कृति से जुड़े विभिन्न विषयों-खेल, बांठड़ा, विशु, ठोडा सहित अनेक लेख हिन्दी व अंग्रेजी भाषा में लिखे।

पहाड़ की संस्कृति में उनका विशेष लगाव रहा। बघाटी संस्कृति भाषा को आगे बढ़ाने में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा। 84 वर्षीय संत राम शर्मा हम सभी को छोड़कर अनन्त यात्रा पर निकल पड़े हैं। सोलन के बाजार, माल रोड विशेषकर बस स्टैण्ड पर अखबार वालों की दुकान, काफी हाउस आने वाला एक जाना पहचान चेहरा अब नहीं आयेगा। लेकिन शहर, संस्कृति, पत्रकारिता से उनका स्नेह, जुड़ाव व सामाजिक क्षेत्रों में किये गये उनके कार्य सदैव याद रहेंगे। महानगर को छोड़कर एक छोटे से शहर में जीने वाली यह शख्यियत बड़ा नाम कमाकर और अपने पद चिन्ह छोड़कर रवाना हुई है। अब उनकी मधुर हंसी, कैसे हो, कब आये, सब ठीक है, ऊपर चलो, काफी हाउस चलते हैं, नाश्ता तो किया नहीं होगा सुनने को नहीं मिलेगा। इस शख्स के लिये यह समर्पित पंक्तियां:

न जाने कौन सा पल आखिरी हो जाये।
वे तो हर पल को मौज मस्ती से जीते रहे।

विशेष-मौलिक व्यक्तित्व के धनी विद्वान् पं. संतराम शर्मा जी हमारी संस्था एवं सोलन (बघाट) के लिए सदैव प्रेरणा के स्त्रोत बने रहेंगे।

।। अध्ययन, लेखन और जनसेवा को समर्पित व्यक्ति का नाम था पं. सन्तराम शर्मा।।

करियाला मनौती के रूप में

एक परिपाटी के अनुसार लोक नाट्य करयाला प्रारम्भ में देव बिजेश्वर, छोटा नाम देव बिजू के नाम और इसके विस्तार के उपरान्त इसे अपने-अपने ग्राम देवता के नाम भी समर्पित व मनौती के रूप में आयोजित किया जाता था। कोई भी ग्रामीण देव बिजू के नाम मनौती करता कि उसकी फलां इच्छा पूर्ण होने पर जैसे उसके घर बैटा पैदा हो या अच्छी फसल होगी या बेटे का विवाह हो तो वह करयाला करवायेगा।

मनौती पूर्ण होने पर वह व्यक्ति अपने स्थान पर करयाला मंचित करने के लिए करयाला दल को आमन्त्रित करता। करयाला दल जब अपने स्थान पर पहुंच जाता तो दल के वादकों द्वारा जंगताल बजाई जाती जिससे गांव व इर्द-गिर्द के लोगों को मालूम हो जाता कि करयाला दल पहुंच गया है। इस तरह जंगताल से प्रचार-प्रसार एवं आमन्त्रण दोनों ही कार्य सम्पन्न हो जाते।

करयाला आरम्भ होने और रात के भोजन से पहले करयाला दल के सदस्य के द्वारा मनौती पूर्ण होने की एक संक्षिप्त पूजा सम्पन्न करवाई जाती। करयाला खेतों में खुले स्थान में आयोजित होता। प्रायः खेत का खलियान अभिनय क्षेत्र के रूप में प्रयोग में लाया जाता। खलियान चिकनी मिट्टी और गोबर से लेपा एक वृत्ताकार स्थान होता है जिसे फसल गाहने आदि के लिए इस्तेमाल किया जाता है। अभिनय क्षेत्र जिसे अखाड़ा कहा जाता है, में कुछ दूरी पर एक सीध में दो दयूट गाड़े जाते। दयूट दीपक का पहाड़ी शब्द है। दयूट के लिए थोर नामक झाड़ी की लगभग दो फुट की ऊंचाई की टहनी या तीन लकड़ियों का चयन कर उसके ऊपर एक ठीकरा अर्थात मिट्टी के बर्तन का टूटा हुआ टुकड़ा रखा जाता है। इन दोनों दयूट पर हवन सामग्री जलाकर बधाई ताल पर इन दयूटो की पूजा होती है। दायां दयूट देव बिजू के नाम व बायां दयूट काली देवी के नाम से पूजा जाता है। पूजा के वक्त निम्न बोल बोले जाते हैं:-

जय जय कारी देव बिजू
हे देव बिजू छप छप पति राजा देवा
कनी रे काइदा है तेरा करयाला
देव तेरे नां रा करयाला कबूल कर
ये बोल ऐसा रे बेटे री ब्याह रा था
देवा इसका बोल छिजे
पिछला बोल था अग्गे रक्षा रख महाराज
जिथे तक याद करे जिंदगी
सही होवे।

गांवों में जब न तो बिजली और न मिट्टी का तेल उपलब्ध था तब देवदार पेड़ के सूखे कशटे दयूट पर जलाये जाते तब पूजा के ये दयूट प्रकाश प्रदीप्ति के लिए मशाल का काम करते। इन दयूटों के पीछे थोड़ी दूरी पर एक लकड़ी का ढेर, जिसे घियाना कहते हैं, जलाया जाता। उसकी भी पूजा होती। घियाना ठंड में माहौल को गर्म कर देता। याद में एक घियाना दर्शकों के पास और एक छोटा घियाना कलाकारों के लिए मेकअप स्थान पर जलाया जाता। यदि एक से अधिक करयाला मनौती के रूप में माने गए हों और उन्हें एक ही समय में खोला जाना हो तो दो करयाला के लिए चार दयूट, तीन के लिए छः और चार करयाला के लिए आठ दयूट पूजे जाते। आठ दयूट पूजन के लिए दो अखाड़े अर्थात् अभिनय क्षेत्र तैयार किए जाते है। दूसरा अखाड़ा मूल अखाड़े से थोड़ा दूर तैयार किया जाता ओर इसमें शगुन के रूप में करयाला का पहला साधू का स्वांग क्षणिक रूप में खेला जाता है। मनौती के रूप में माने गए चार करयाला एक ही समय पर आयोजित करने व आठ दयूट पूजन पर दो बकरे की बलि अनिवार्य होती।

करयाला की नाट्य प्रस्तुति समाप्त होते ही देवता के आह्वान पर दीवां (देवता का गूर) का शरीर हिलने डुलने लगता जिसे स्थानीय भाषा में हिंगरना कहा जाता है। जो बताता कि देवता ने करयाला स्वीकार कर लिया या नहीं। बकरे की बलि चढ़ाने पर खून को दोनों दयूट के साथ छूआ जाता जिसे स्थानीय बोली में लय छिट्टी कहा जाता है और तब दयूट उखाड़ दिए जाते हैं।

करयाला का प्रस्तुतिकरण

देर रात को करयाला का मंचन आरम्भ करने से पहले वादकों द्वारा विशेष ताल बजाई करने से पहले वादकों द्वारा जंगताल बजाई जाती है ताकि लोगों को मालूम हो जाए कि करयाला आरम्भ होने वाला है। दो दयूट से थोड़ा पीछे लगभग एक सीध में वादक अपना आसन ग्रहण करते हैं। कुछ दर्शक उनके पीछे और ज्यादातर दर्शक उनके सामने अभिनय क्षेत्र छोड़कर अपना स्थान ग्रहण कर लेते हैं। पारम्परिक रूप से ढोल, नगाड़ा,

करनाल और शहनाई वाद्ययन्त्रों का प्रयोग ही इस लोक नाट्य में किया जाता रहा। बाद में हारमोनियम ने भी अपना स्थान बना लिया। एक दल में 12-15 कलाकार होते और महिला पात्रों की भूमिका भी पुरूष कलाकारों द्वारा अभिनीत की जाती और महिला नृत्य भी पुरूष ही करते हैं। लोकनाट्य करयाला एवं रंगमंचीय प्रदर्शन के रूप में करयाला ताल से आरम्भ होता। करयाला एकताल का नाम है। चंद्रावली नृत्य से शुरू होता है करयाला।

।। करियाला देता है भरपूर मनोरंजन के साथ नैतिक शिक्षा।।

200 साल से अधिक हो गई प्रथम गोरखा राइफल

देश की पैदल सेना प्रथम गोरखा राइफल 200 साल की हो गई है। कम लोग यह जानते हैं कि देश के लिए अनगिनत कुर्बानियां देने वाली गोरखा राइफल की स्थापना 1815 में सुबाथू में हुई। इससे पहले गोरखा बिलासपुर के मलौन किले को लेकर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया से भिड़े। गोरखा खुखरी से लड़े और अंग्रेज तोपों से। इस जंग में अंग्रेज विजयी हुए, लेकिन गोरखा टुकड़ी के साहस के आगे वह नतमस्तक हो गए और गोरखा राइफल को (मलौन रेजिमेंट) का नाम दिया गया। यह सुनहरा अध्याय गोरखा रेजिमेंट के सैन्य इतिहास में सुनहरे अक्षरों से दर्ज है। 1815 से लेकर 2015 तक प्रथम गोरखा राइफल पैदल सेना के जवान वतन के लिए अपनी कुर्बानी देते आए हैं। 200 साल बाद आज भी वाहिनी देश की रक्षा के लिए उसी जज्बे के साथ तैनात है। प्रथम गोरखा राइफल की पांच वाहिनियां हैं जिसका मुख्य केन्द्र जिला सोलन के सुबाथू में 14 गोरखा प्रशिक्षण केन्द्र है।

गौरवमयी इतिहास

वाहिनी ने जाट युद्ध के दौरान बैटल पदक, दूसरे अफगान युद्ध के दौरान थियेटर पदक हासिल किया। 1944 में गोरखा अर्बन टैंकों के साथ इंफाल और कोहिमा पहुंचे। जहां जापान और ब्रिटिश सेना के बीच भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में वाहिनी ने ब्रिटिश सेना के साथ मिलकर कोहिमा पर विजय प्राप्त की।

वहीं 3 मई 1945 में बर्मा की राजधानी रंगून पर भी जीत हासिल की। करीब 6 साल की इस लड़ाई के बाद आखिर जापान ने गोरखा सेना के आगे हाथ खड़े कर दिए। 1947 में आजादी के बाद भारत, नेपाल और इंग्लैंड के बीच तीन देशीय समझौता हुआ। जिसमें गोरखा वाहिनी का चार हिस्सा ब्रिटिश सेना को दिया गया और छोटा हिस्सा भारत को मिला। जिसके बाद प्रथम गोरखा राइफल को भारतीय सेना में शामिल किया गया।

साहस को भारत ने किया सलाम

तृतीय गोरखा वाहिनी के कैप्टन गुरबचन सिंह सलारिया ने गोरखा सैनिकों के लक्ष्य को कांगू युद्ध में सच साबित किया है। कैप्टन सलारिया ने कांगू युद्ध में अकेले ही 61 दुश्मनों को खुखरी से मौत के घाट उतारा और अंत में वीरगति को प्राप्त हो गए। उनकी बहादुरी पर भारतीय सेना का सबसे ऊंचा पदक परमवीर चक्र सलारिया के नाम के साथ जुड़ा। गोरखा वाहिनी ने अपनी बहादुरी का परिचय देकर 2 विक्टोरया, 1 परमवीर चक्र, 7 महावीर चक्र, 16 वीर चक्र, 1 क्रीति चक्र, 3 शौर्य चक्र, 1 युद्ध सेवा मेडल और 22 सेना मेडल हासिल किए हैं।

कायर होने से बेहतर है मरना

सुबाथू सेना अध्यक्ष ब्रिगेडियर ओपी सिंह (सेना मेडल) ने बताया कि 1815 में इस सेना का गठन किया। रेजिमेंट 200 साल की हो चुकी है। युद्ध भूमि पर अपने हथियार खुखरी से दुश्मनों को ढेर करने वाले हर गोरखा सैनिक का एक ही लक्ष्य होता है कि (कायर हुन भंदा मरनो राम्रो) कायर होने से मरना बेहतर है।

।। सुबाथू कभी कालका-शिमला खच्चर मार्ग का एक पड़ाव था।।

अवसान एक प्रखर कला मर्मज्ञ व चिंतक का

शिमला के माल रोड पर अब एक संत सरीखा व्यक्तित्व कम ही दिखाई देगा, जिसका समस्त जीवन कला व जीवन-मूल्यों के प्रति समर्पित रहा। यहां हम किसी और का नहीं, चोटी के कलासेवी विश्वनाथ मेहता का जिक्र कर रहे हैं जो अक्सर लंबा चोगा धारण किये माल रोड पर टहलते दिखाई देते थे। सौम्य और शांत स्वभाव के श्री मेहता ने पिछले दिनों शिमला के निकट कोटी में लंबी बीमारी के बाद अंतिम सांस ली। कोटी में वे अपने इकलौते पुत्र गुरूश्रवर के साथ सपरिवार रह रहे थे। आत्म प्रचार से खुद को दूर रखने वाले श्री विश्वनाथ को कभी अधिक प्रकाश में आने की लालसा नहीं रही थी। सादा जीवन उच्च विचार उनका मूलमंत्र था। उनकी जीवन संगिनी उमा मेहता इसे उनकी एक बड़ी खासियत मानती है। वे सेवानिवृत अध्यापिका हैं जबकि परिवार में दो विवाहित पुत्रियाँ भी है। मेहता जी से उनका विवाह सोलन में हुआ था।

85 वर्षीय श्री मेहता की जिन्दगी कई तरह के उतार-चढ़ाव की एक लंबी दास्तान रही है। 8 नवम्बर 1925 को पाकिस्तान के जिला जेहलम के करयाला गांव के एक संपन्न परिवार में जन्मे विश्वनाथ को भाग्य दिल्ली ले आया था। किन्तु उन्होंने पहाड़ों में सोलन व शिमला को अपनी कर्मस्थली बनाया। गुरूकुल रायकोट (लुधियाना) गुरूकुल इंद्रप्रस्थ (दिल्ली) व गुरूकुल कांगड़ा हरिद्वार से दीक्षित विश्वनाथ मेहता ने पंजाब विश्वविद्यालय से कला व फाइन आर्ट्स से स्नातक होने के बावजूद परिश्रम व साधना के जरिये कला में महारत हासिल की थी। वह भी केवल आत्मसंतुष्टि के लिये। जबकि कमर्शियल आर्ट उनका व्यवसाय था।

लाहौर में रहते हुए वे एक विज्ञापन एजेंसी के लिये काम करते रहे थे। भारत आने के बाद वे दिल्ली और मुंबई में भी कार्यरत थे। तब उन्होंने कुछ फिल्मों का सफल कला निर्देशन (संभवतः उड़न खटोला आदि) भी किया था। बाद में तो कुछ समय सोलन में डायर मीकिन ब्रूरी के प्रचार अधिकारी भी रहे। लेकिन उनकी जिन्दगी का महत्वपूर्ण पड़ाव वह था जब उन्होंने 1957 में हिमाचल प्रदेश लोक संपर्क विभाग में बतौर कला-कार्य अधिकारी ज्वायन किया। आज भी हिमाचल की सबसे पुरानी साहित्यिक पत्रिका हिमप्रस्थ मासिक के तत्कालनीन असंख्य पाठक उनके द्वारा तैयार किये गये कलात्मक एवं सुरूचिपूर्ण कवर को याद करते होंगे। लोक संपर्क विभाग छोड़ने के बाद भी वे विभाग की उक्त पत्रिका के कवर पर छाये रहे। श्री मेहता जीवनभर मूल्यों और सिद्धान्तों के पक्षधर रहे तथा कभी भी प्रतिकूल परिस्थितियों से समझौता नहीं किया। मौलिक चिंतन और रचनाधर्मिता के रहते जीवन में कहीं न कहीं तो अंतर्द्वन्द्व से सामना होता है। 1969 में उन्हें अपनी दो मौलिक पुस्तकों 'टूवार्डस यूआर डेमोक्रेसी' और 'द क्योर आफ प्रेजेंट इल्ज़' के प्रकाशन को लेकर पद त्याग करना पड़ा। इसके बाद वे जीवनभर चिंतन व मनन के प्रति समर्पित रहे। उक्त पुस्तकों के जरिये उन्होंने देश के समक्ष मौजूद समाजार्थिक समस्याओं के निराकरण का रास्ता दिखाया था जिनकी दुनियाभर में तारीफ हुई थी। श्री मेहता की कुछ पुस्तकें 'ए न्यू टैकनीक' (कला की मेरी अवधारणा) तथा ब्रीफ हिस्ट्री आफ इंडियन आर्ट' (भारतीय कला का संक्षिप्त इतिहास) कला के गंभीर छात्रों व शोधार्थियों के लिये उपयोगी हो सकती हैं। उन्हें प्रकाश में लाने की जरूरत है। ऐसे कला-मनीषी व प्रखर चिंतक का चले जाना उनके प्रशंसकों को सदा सालता रहेगा।

।। मौलिक चिन्तन के साथ अपना कर्म करते रहने में ही मनुष्य जीवन की सार्थकता है ।।

हिमाचल का गौरवमय इतिहास

पश्चिमी हिमाचल का जो क्षेत्र सतलुज और तौंस नदियों के मध्य फैला हुआ है, वर्ष 1948 से पूर्व यह शिमला की पहाड़ी रियासत के नाम से जाना जाता था। आज यह क्षेत्र हिमाचल प्रदेश के जिला शिमला और सोलन जिला के नाम से जाना जाता है। इन नदियों के मध्य स्थित इन इलाकों में पन्द्रहवीं शताब्दी तक मैदानों से आये शासकों का अधिकार हो चुका था। इन शासकों को राणा या ठाकुर कहा जाता था। शिमला हिल्स की सबसे छोटी ठकुराई रतेश का क्षेत्रफल तीन वर्गमील था और वार्षिक आय मात्र दो सौ रूपये। बेजा ठकुराई मात्र चार वर्गमील में थी। मांगल ठकुराई की आय मात्र सात सौ रूपये थी।

अट्ठारह और बारह ठकुराइयों के नाम और संख्या यूरोपियन यात्रियों और यहां तैनात पालीटिकल एजेंन्टों और असिस्टेंट कमिश्नरों ने पृथक-पृथक दी है। यह संभव है कि छोटी रियासतों के बड़ी रियासतों के अधीन आने पर संख्या घटती बढ़ती रही हो। इतिहासकारों के मुताबिक इनकी संख्या अट्ठारह और बारह मानी गई है, जिन्हें मिलाकर कुल 306 ठकुराइयां बनती हैं। जेम्ज बेली फ्रेजर ने 18, ए कैप्टन रास ने 14, बीसी कैनेडी ने 18 तथा कर्नल फ्रांसिस मैसी ने 22 ठकुराइयों की संख्या दी है।

इन ठकुराइयों के इतिहास पर नजर दौड़ाएं तो प्राचीनकाल में यह क्षेत्र कुलिन्द जनपद के अधीन आता था। मौर्य, कुषाण, गुप्त तथा मुखरी सम्राटों ने अपने-अपने स्वर्णकाल में किसी न किसी रूप में इन पर अपना प्रभुत्व जमाया। पुरातन काल से ही यह भू-भाग खशदेश, कुलिन्द देश, हिमाचल, जालन्धर खण्ड आदि नामों से विख्यात रहा। नौवी-दसवीं शताब्दी से लेकर पन्द्रहवीं शताब्दी तक मैदानी भागों से आये राजपूतों ने इन पहाड़ियों में अपने छोटे-छोटे राज्य स्थापित किये। शिमला के उत्तर की ओर अठारह रजवाड़े स्थापित हुये और दक्षिण की ओर बारह रजवाड़े। ये रजवाड़े क्षेत्रफल, जनसंख्या, आर्थिक स्थिति और राज सत्ता के लिहाज से बहुत छोटे तथा कमजोर होने के कारण ठाकुर तथा राणा कहलाते थे। छोटे आकार के होने के कारण ये राज्य ठकुराई और राहोण कहलाये जाने लगे। शिमला के ऊपर की पहाड़ियों में अठारह ठकुराई तथा शिमला के नीचे की ओर बारह ठकुराई होने के कारण बारह ठकुराई के नाम से विख्यात हुआ। मध्य काल से लेकर 1815 तक यह क्षेत्र बारह तथा अठारह ठकुराइयों के नाम से प्रसिद्ध रहा।

अठारह ठकुराइयां

1. जुब्बल 2. बलसन 3. कुम्हारसेन 4. खनेटी
5. देलठ 6. रावीं 7. कुरांगलू 8. धरोज
9. मोरनी 10. बीजा 11. सांगरी 12. डोडरा-क्वार
13. सारी 14. रतेश 15. कोटी मधान
16. घूण्ड 17. भड़ोली 18. सोली

बारह ठकुराइयां

1. क्योंथल 2. कुठाड़ 3. भज्जी 4. बाघल
5. कुनिहार 6. धामी 7. महलोग 8. कोटी
9. क्यारी 10. कोटगरू 11. ठियोग 12. बघाट

ये सूची जेम्स बेली फ्रेजर की है।

दूसरी सूची ऐसिस्टेंट डिप्टी सुपरिटेंडेंट कैप्टन पी.सी. कनेड़ी की हैं

1. जुब्बल 2. कोटगढ़ 3. बलसन 4. रावीं
5. खनेटू 6. करांगलू 7. देलठ 8. सारी
9. नावर 10. डोडरा क्वार 11. ठियोग 12. घूण्ड
13. पुन्दर 14. भड़ोली 15. बेजा 16. सांगरी
17. दरकोटी 18. थरोच

बारह ठकुराइयां

1. क्योंथल 2. बघाट 3. बाघल 4. कुठाड़
5. कुम्हारसेन 6. भज्जी 7. मेहलोग 8. धामी
9. कोटी 10. क्यारी या मधान 11. कुनिहार 12. मांगल

इन ठकुरायों में सबसे महत्वपूर्ण ठकुराई जुब्बल थी जो बुशहर और सिरमौर के मध्य शालवी और विषकलटी नदी घाटियों में फैल हुई थी। जुब्बल राज्य के इतिहास और परम्परा के अनुसार जुब्बल राज्य के संस्थापक के पूर्वज बारहवीं शताब्दी से पूर्व सिरमौर पर राज्य करते थे। इनका वर्णन शम्र्मणः सन्तराम, ललित काव्यम वाराणसी पुस्तक में मिलता है।

।। हमारा इतिहास वीर पुरूषों का इतिहास है।।

बघाटी वरिष्ठ कवि-आलोचक श्रीनिवास श्रीकांत को 'आजीवन उपलब्धि सम्मान'

हिमालय साहित्य, संस्कृति एवं पर्यावरण मंच द्वारा वरिष्ठ कवि-आलोचक श्रीनिवास श्रीकांत को साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए 'आजीवन उपलब्धि सम्मान' प्रदान किया गया है। मंच द्वारा यह सम्मान शिमला में आयोजित एक अभिनन्दन समारोह में प्रदान किया गया। इस अवसर पर उनकी दो पुस्तकें एक कविता संग्रह 'आदमी की दुनिया का दिन' और एक आलोचना पुस्तक 'कथा त्रिकोण' भी लोकार्पित की गई। मंच के अध्यक्ष एवं जानेमाने लेखक एस.आर. हरनोट ने कहा कि श्रीनिवास श्रीकांत समकालीन हिन्दी कविता और आलोचना के एक जाने पहचाने हस्ताक्षर हैं, जिन्होंने गुजरी हुई सदी के छठे दशक के मध्य से अपना रचनात्मक करिअर शुरू किया था।

1970 में उन्होंने 'काल' नाम से एक साहित्यिक पत्रिका भी निकाली थी, जिसका हिन्दी साहित्य क्षेत्र में व्यापक स्वागत हुआ। उनका पहला कविता संग्रह 'नियति, इतिहास और जरायु' वर्ष 1986 में प्रकाशित हुआ लेकिन उसके बाद वे भारतीय और विदेशी साहित्य के अतिरिक्त भारतीय संगीत और रंगमंच के अध्ययन में ऐसे रमे कि 22 सालों तक वे लेखन से बाहर रहे। वर्ष 2008 में अपने दूसरे कविता संग्रह 'बात करती है हवा' से उनके रचनात्मक लेखन की जो शुरूआत हुई वह अब तक जारी है। श्रीनिवास जी की अब तक 'घर एक यात्रा है', 'हर तरफ समंदर है', 'चट्टान पर लड़की', 'आदमी की दुनिया का दिन' 6 कविता संग्रह, 'कथा में पहाड़' संपादित संकलन, 'गल्प के रंग' और 'कथा त्रिकोण' आलोचना पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है और एक काव्य संग्रह प्रकाशनाधीन है। आधार प्रकाशन ने उन्हें हाल ही में प्रख्यात कवि गजानन माधव मुक्ति बोध पर पुस्तक लिखने का उतरदायित्व सौंपा है। इसके साथ उन्होंने कई प्रख्यात विदेशी लेखकों पर भी गंभीर लेख लिखे हैं और उनकी रचनाओं के अनुवाद किए हैं। प्रदेश व देश के पत्र-पत्रिकाओं में वे विविध विषयों पर निरंतर लिखते रहते हैं। श्रीनिवास श्रीकांत नवंबर, 2014 में अपने जीवन के 78वें साल में प्रवेश कर रहे हैं और वे हिन्दी पीढ़ी के ऐसे वरिष्ठ कवि और आलोचक है, जिन्होंने उम्र की दुश्वारियों को पीछे छोड़ते हुए गत पांच दशकों में निरंतर सृजन किया है। एसआर हरनोट ने बताया कि हिमालय मंच उन्हें साहित्य और आलोचना के क्षेत्र में आजीवन उपलिब्ध सम्मान की घोषणा करते हुए अपने को गौरवान्वित महसूस कर रहा है।

विशेष: यह आदरणीय साहित्यकार मूलतः ग्राम पंचायत चामत भड़ेच के गाँव शांगड़ी को गौरवान्वित करते हैं।

।। लेखन ही जिनका जीवन है।।

स्व. काकू राम कण्डाघाट: एक परिचय

हिमाचल प्रदेश पहाड़ी राज्य है। यद्यपि यह एक दूरस्थ और कटा हुआ प्रदेश रहा तथापि यहां कला-संस्कृति के क्षेत्र में प्रतिभाओं की कमी नहीं रही। पर्वतीय क्षेत्र होने के फलस्वरूप यहां आवागमन के साधन सीमित रहे लेकिन इन्हीं पर्वतों के विभिन्न क्षेत्रों में ऐसे बहुत से लोक गायक, लोक नाट्य कलाकार हुए जिन्होंने न केवल अपने जीवनकाल में समाज का भरपूर मनोरंजन किया, अपितु भौगोलिक सीमाएं लांघकर प्रदेश के बाहर भी अपनी प्रतिभा का सिक्का जमाया। लेकिन हम उन्हें नहीं जानते या ऐसी प्रतिभाओं को प्रकाश में लाने की कोशिश नहीं की जो आज मील का पत्थर बने हुए हैं। ऐसी ही एक शख्सियत थे लोक गायक काकू राम।

स्वर्गीय काकूराम का जन्म सन् 1896 में बघाट स्टेट वर्तमान में सोलन जिला की तहसील कण्डाघाट के मही गांव में हुआ था। बचपन से ही गायन के प्रति उनका रूझान था। अपने मधुर कण्ठ और सुरीली आवाज से वे सबका मन मोह लेते थे। रियासती काल के दौरान पटियाला, क्योन्थल, बघाट, बाघल, कुनिहार आदि सोलन जिला की तत्कालीन रियासतों में संगीतज्ञ के रूप में उन्हें ख्याति मिली। उन्हें पर्वतीय संगीत विद्या में अद्भुत कुशलता व निपुणता प्राप्त थी। जिसके कारण कोहिस्तान (कण्डाघाट) पटियाला के प्रमुख गायको में उनका नाम गिना जाता है। उनकी आवाज में जादू जैसा आकर्षण था। उनकी प्रतिभा को देखते हुए मात्र 18 वर्ष की आयु में उनकी एच.एम.वी. द्वारा रिकार्डिग की गई थी। वह पहाड़ी समाज के ऐसे पहले गायक हुए जिनके रिकार्ड बने और अधिक लोकप्रिय हुए। लोग उनके गाये गीतों को बड़े चाव से सुनते थे। एक समय ऐसा भी था जब इनके गानों ने तहलका मचा रखा था। कई बुजुर्ग लोग बताते हैं कि बचपन में जब काकूराम गाना गाते थे तो उनके गीत को सुनने के लिए राह चलते पथिक के पांव स्वयं ही ठहर जाते थे।

सोलन और आस-पास के इलाके में जब कोई विवाह होता था तो लोग उन्हें गाने के लिए बुलाते थे। वह लोगों के दिल पर राज करते थे। वह महफिल सूनी समझी जाती थी जहां काकू राम का गाना न बजता हो। उनकी विलक्षण प्रतिभा की इस कद्र धाक थी कि जब भी कोई व्यक्ति गीत गाने का प्रयास करता तो लोगों के मुँह से अनायास ही निकलता ''अच्छा गा लेते हो मगर काकू राम कण्डाघाट नहीं बन सकते'' या फिर कटाक्ष या व्यंग्य में कहते ''बड़ा आया काकू राम कण्डाघाट''। वे सोलन इलाके के ही नहीं अपितु हिमाचल के एक प्रसिद्ध गायक थे। उन्हें हिमाचली (सहगल) कहा जाता था।

पहाड़ी जनजीवन की झांकी को स्वरों के माध्यम से जीवन्त करना उनकी बड़ी विशेषता थी। बीसवीं सदी का वह एक ऐसा दौर था जब मनोरंजन के साधन नगण्य थे। मेलों, उत्सवों, महफिलों आदि में गाकर अपनी गायकी की धाक जमाना कलाकारों की विशिष्टता मानी जाती थी। गीत-संगीत का ज्ञान भले ही न हो लेकिन बुलन्द आवाज का होना एक अच्छे कलाकार की पहचान बन जाती थी। ध्वनि संप्रेषण के साधन भी नहीं थे। दिन के काम-काज के बाद रात्रि को गांवों में महफिल के दौर चलते थे। रेडियो का प्रचलन भी उस समय बहुत कम था। कुछ बड़े घरानों अथवा प्रतिष्ठित व्यक्तियों के पास ग्रामोफोन होते थे जिस पर लोक कलाकारों और हिन्दी गानों के रिकार्ड बजाते तो उन्हें सुनने के लिए लोगों का जमावड़ा जुट जाता था। काकू राम के रिकार्डों में पड्डुवा गीत, हार, गंगी, गीह, नाटी आदि ही उपलब्ध नहीं थे अपितु वे भजन, गजल, ठुमरी के अलावा उप-शास्त्रीय गायन के भी अच्छे कलाकार थे। हकमी चांद चरण (पटियाला) से उन्होंने सुगम व शास्त्रीय गायकी उन्हें गुरू बनाकर सीखी थी।

काकू राम ने चम्बा से लेकर सिरमौर तक हर जनपद के लोकगीत गाए हैं परन्तु उनका बेलुआ-बेलुआ-बेलुआ हो, बेलू मेरा रूसी-रूसी जांदा भलेया'' लोकगीत बहुत प्रसिद्ध हुआ। इसके अतिरिक्त बघाट का सुप्रसिद्ध पड्डूआ (गिद्धा) और दूल्हा और दुल्हन को तेल-बटणा (उबटन) लगाते समय गाया जाने वाला संस्कार गीत तेलिया-मेलिया बहुत प्रचिलत हुए। लोअर महासू क्षेत्र मे गाई जाने वाली नाटी ''चूड़ी पैहणनी के बगा, बैठिलो भूयदी मेरी अमकूआ'' जो आज भी बड़े चाव से गाई जाती है। इनकी एक अमूल्य कृति थी। इनकी गाई गंगी, बामणा-रा-छोरू और सिठनिया काफी प्रसिद्ध हुई। गाने के साथ-साथ वह अपने गीत स्वयं लिखते थे। ''रोणिदे-रोणिदे मेरा गूदा, कानिरी खातिरो लागा रूदा'' व ईशरा मेरे ईशरा, मालिका मेरे मालिका, शुद्धि बुद्ध दे हामो लाई, बुरी गलो दे हाम्मो छुड़ाई'' इनके काफी चर्चित गीत रहे। हाय मामा, मेरा थागूदा न' सोलह मात्रा में गाई नाटी को संगीत के अच्छे जानकार आज भी नहीं गा पाते लेकिन काकू राम जब सहजता से इसकी तान छेड़ते थे तो लोग बहुत दिलचस्पी लेकर उन्हें गाते हुए सुनते थे। उन्होंने न केवल क्लासिकल गायकी में अपना लोहा मनवाया था बल्कि पहाड़ी लोकगीतों को राजदरबारी गायकी में भी स्थान दिलवाया था।

काकू राम आर्य समाज के कट्टर समर्थक थे। उनकी शिक्षा और जन्म तिथि के बारे में सही जानकारी उपलब्ध नहीं है परन्तु उनकी संस्कृत, हिन्दी, पहाड़ी (बघाटी), पंजाबी भाषा में अनेक रचनाएँ उनकी डायरी में लिखी मिलती है। आर्य समाज के प्रचार के लिए उन्होंने ''जुणीए बाजा बेदा रा ढाका, से ऋषि दयानन्द बड़ा बांका'' गीत लिखा और गाया था, जिसकी तर्ज पर राजगढ़ के लोकगायक कृष्ण लाल सहगल द्वारा गाया हिमाचल का लोकगीत लागा ढोलो दा ढमाका, मेरा हिमाचली बड़ा बांका, जिसमें हिमाचल के सौंदर्य, रहन-सहन, रीति-रिवाज का अनूठा वर्णन हुआ है, बहुत प्रसिद्ध हुआ है। आर्य समाज संस्था द्वारा उनका नाम धर्मवीर रखा गया था। उन्हें महाशय काकू राम भी कहते थे।

काकू राम के जीवन में पहाड़ी संस्कृति रची-बसी थी। लोक नाट्य करयाला से भी उन्हें बेहद लगाव था। बावजूद इसके बड़े-बड़े लोगों में उठने-बैठने तथा आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में विभिन्न स्थानों का भ्रमण करने से उनके व्यक्तित्व में भी बदलाव आना स्वाभाविक था। हल्की मुच्छे रखना, सिर पर पगड़ी, लम्बा कोट और चूड़ीदार पायजामा पहनना, लोगों से बेवाकी से बातचीत करना उनका शौक था। हांलाकि गीत-संगीत उन्हें विरासत में नहीं मिला था परन्तु उनके चचेरे भाई सूरत राम एक अच्छे शहनाई वादक थे।

काकू राम का विवाह स्व. शान्ति देवी जो सुप्रसिद्ध समाज सेविका और पहाड़ी नारी समाज की प्रेरणा स्त्रोत मानी जाती है, से हुआ था। उन्होंने (शान्ति देवी) ने 1954 में कण्डाघाट में पहाड़ी महिला मण्डल की स्थापना की थी जिसका सम्बन्ध कुछ समय तक अखिल भारतीय महिला मण्डल से भी रहा। वह आकाशवाणी शिमला की विख्यात गायिका रही। 1960 से 1970 के दशक में उन्होंने रेडियो स्टेशन शिमला से अनेक लोकगीत गाए। उन्होंने नवीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की थी तथा लम्बे समय तक शिमला आर्य समाज व दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल में पढ़ाती रही। समाज सेविका का जज्बा उनमें कूट-कूट कर भरा था इसलिए लम्बे समय तक वहां की सदस्य व 'राज्य स्तरीय महिला शिकायत निवारण समिति' की सदस्या रही और बिलासपुर, मण्डी और उना जिला का संचालन इनके जिम्मे सौंपा गया था। वह कांग्रेस पार्टी की सक्रिय कार्यकर्ता रही। महिलाओं के उत्थान के लिए उन्होंने अथक परिश्रम किया था। उन्होंने महिला उत्थान बच्चों की शिक्षा, प्रदेश के प्रगति, सरकार की विभिन्न योजनाओं के प्रचार-प्रसार हेतु कई गीत लिखे और गाए एक उदाहरण प्रस्तुत है:-

चलो रे चलो भाई बड़दे चलो रे
देशो री खातरी बड़दे चलो रे
कुहला दे बगदा ठण्डा ए पाणी
फसला उगाणी भाई फसला उगाणी
रली मिली सारे भाई फसला उगाणी
लम्बी लम्बी शड़का बणाओ मेरे भाईयो
घर-घर बच्चे खे पढ़ाओ मेरे भाईयो
देशा दे प्रगति लयावणी मेरे भाईयो
मेहनत करो और आगे बड़ो
हिमाचल रे सपूत बणो रे

स्व. शान्ति देवी ने हिमाचल के लगभग सभी जनपदों की बोलियों में गीत गाए हैं। वर्ष 1964 में बुशैहरी लोक गीत ''किणी लागा सजदी मुंहे बिन्दली, हीरा कमले मुए बिन्दली'' तथा ''बोले रे कोयलिया वन में'' गिद्धा। वर्ष 1965 में ''बांका पहाड़ा दा जीणा ओ जिन्दे मेरिए''। वर्ष 1968 में क्योंथली बोली में लोकगीत ''कांदो पांदे बन्दूकटी, असौ कमरे छुरा बेरे तुसे डेवे बोलो घौराखे, हामो लागणा बुरा बेरे।'' ''पारलिया धारा दे काले-काले बादल, तू नहीं आया मेरे साजणा'' गिद्धा'' कोठी गिरदा सायबो, ताम्बू गिरदा गोरा, ऐबे रेके री बे जानीखे नई चालदा जोरा'' बघाटी लोक गीत जैसे इनके दर्जनों प्रचलित लोक गीतों का प्रसारण बराबर आकाशवाणी शिमला से होता रहता था।

उनके सुपुत्र श्री राजेन्द्र कश्यप द्वारा धरोहर के रूप में संभाल कर रखी गई अपनी माता की हस्तलिखित डायरी से यह पता चलता है कि कांगड़ा का प्रसिद्ध लोकगीत ''लाणा गोरिए, नूरपुरे दिए खतरेटिए, तेरे माथे दे बिन्दलू तथा कूकू किया बोलदा ओ मेरी जान पाबो, कूकू किया बोलदा लोकगीत भी उन्होंने गाए हैं।

24 जुलाई 1958 को प्रतिभाशाली गायक काकू राम ने नश्वर शरीर को त्याग दिया। आज भी उनकी गायकी की धरोहर कई लोगों के पास रिकार्ड के रूप में सुरक्षित है। उनके कनिष्ठ पुत्र राजेन्द्र कश्यप जो शिक्षा विभाग से प्रधानाचार्य के पद से सेवानिवृत हुए हैं उनकी यादगार को अपने पास संरक्षित रखे हुए गर्वित होते हैं।

इस प्रतिभाशाली गायक को हमारा संगीत समाज वह आदर नहीं दे पाया जिसके वे पात्र थे। भाषा एवं संस्कृति विभाग सोलन का यह लघु प्रयास इस शख्सियत के कृत्यों को प्रकाश में लाने के लिए मील का पत्थर साबित होगा इसकी मुझे आशा है।

स्व. काकू राम ने और उसके बाद स्व. शान्ति देवी ने लोक संस्कृति एवं कला को समृद्ध करने के लिए जो प्रयास किए हैं उन्हें हम नहीं भूला सकते। नवोदित कलाकार अवश्य उनके गाये गीतों से प्रेरणा लेंगे इसका मुझे विश्वास है। उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि कलाकार उनके गाये हुए गीतों को उसी रूप में गाते रहेंगे।

।। संगीत भरता है जीवन में मिठास।।

कालका शिमला रेल मार्ग के ज्यादा अजूबे सोलन में

कालका शिमला रेल मार्ग पर की गई यात्रा के वर्णन में सोलन का जिक्र न हो, ऐसा हो ही नहीं सकता। इस मार्ग पड़ने वाले अधिकांश महत्वपूर्ण ओर यादगार स्थान इस जिले के अंतर्गत ही पड़ते हैं।

96.54 किलोमीटर लम्बे इस ट्रैक को बनाने में अंग्रेजों को जो चुनौतियाँ मिली थी, उनकी याद ताजा करने के चिन्ह आज भी सोलन में विद्यमान है। इस ट्रैक का करीब 70 किलोमीटर से अधिक भाग इसी जिले के अंतर्गत पड़ता है। यहाँ पर है उस समय की सबसे बड़ी बड़ोग की सुरंग, जो 1 किलोमीटर 143 मीटर लम्बी हैं। इसके बाद स्थान आता है कोटी की सुरंग का जो करीब 900 मीटर लम्बी बताई जाती है।

सोलन में बड़ोग और सलोगड़ा दो ऐसे स्टेशन है जहाँ रेल विभाग के शानदार रेस्ट हाऊस भी हैं और पर्यटकों को यहाँ रात गुजारने में जो आनन्द आता है इसका बखान कई बड़े लेखकों ने अपनी रचनाओं में किया है। कहते हैं कि अंग्रेजों ने इन स्टेशनों को इसलिए विकसित किया था क्योंकि यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य अत्यन्त आकर्षक हैं। बड़ोग स्टेशन पर खड़ा व्यक्ति ऐसा महसूस करता है जैसे वह पहाड़ी की गिरफत में आ गया हो। सलोगड़ा रेलवे स्टेशन ऐसा स्थान है, जहाँ से शिमला, चायल और चूड़चाँदनी पर्वत दिखते हैं। चायल में जहाँ घने देवदार के वृक्ष और असीम शान्ति है, वहीं चूड़चाँदनी की पर्वत श्रृंखला गरमियों में भी बर्फ से ढकी हुई देखी जा सकती है। यह पर्वत साल में करीब छह माह तक बर्फ से ढका रहता है।

कालका से कुछ दूर चलते ही सोलन जिले की सीमा पर यह रेल ट्रैक प्रवेश कर जाता है। इसके बाद टकसाल स्टेशन आता है। इसके बाद आता है कोटी, जाबली, धर्मपुर, कुम्मारहट्टी और बड़ोग स्टेशन। बड़ोग से गाड़ी छूटते ही करीब पाँच मिनट बाद सोलन के नगरीय क्षेत्र में प्रवेश कर जाती है। इस स्टेशन के भीतर रेल मार्ग बनाने के दौरान संचार व्यवस्था में काम आए सौ साल पुराने उपकरणों को देखकर हैरानी होती है। संचार व्यवस्था के लिए अभी तक इन उपकरणों का इस्तेमाल किया जाता हैं। इन मशीनों पर सोलन को सोलोन लिखा हुआ है। इसी प्रकार की संचार व्यवस्था इस रेल मार्ग के अन्य स्टेशनों पर आज भी कायम है। सोलन से चल कर पहुँचते हैं ब्रूरी स्टेशन पर। वहाँ अंग्रेजों का 1885 में स्थापित किया गया शराब का कारखाना 'डायर मेकन' है। इस कारखाने का नाम आजादी के बाद बदलकर मोहन मीकिन रख दिया गया। डायर और मेकन दो अंग्रेज साझेदारों ने इस कारखाने को स्थापित किया था। इसकी शराब पूरी दुनिया में मशहूर थी। कहते हैं कि जलियांवाला बाग कांड को ध्यान में रखते हुए जरनल डायर के नाम को इस कारखाने के नाम से हटाने का वास्ता देकर कारखाने को मोहन मीकिन करने की इजाजत भारत सरकार से मिल पाई थी। परन्तु अब यहाँ शराब का उत्पादन नाम मात्र रह गया है और ब्रूरी रेलवे स्टेशन को बन्द कर दिया गया। इससे आगे सलोगड़ा रेलवे स्टेशन का अपना अलग महत्व है। यह क्षेत्र कभी आलू और गैर मौसमी सब्जियों की बड़ी मंडी हुआ करता था। सिरमौर और शिमला जिले की फसलें यहां लाकर रेल मार्ग द्वारा देश के विभिन्न कोनों में पहुँचाई जाती थी। इस मंडी के खण्डहर आज भी सलोगड़ा रेलवे स्टेशन के साथ देखे जा सकते है। इसके बाद कण्डाघाट एक ऐसा स्टेशन है जहां से इस रेल मार्ग की चढ़ाई शुरू होती है। कहते हैं कि जब कोयले के इंजन से यहाँ रेलगाड़ी चलती थी तो उसे कई बार वापस लौटकर आना पड़ता था और तेज गति से जब गाड़ी चलकर आती थी तभी वह खनोग की ओर बढ़ पाती थी। परन्तु जब से डीजल इंजन चलने शुरू तब से यह समस्या नहीं आती और अब कण्डाघाट रेलवे स्टेशन भी बन्द कर दिया गया है। सौ साल के कालका-शिमला रेल मार्ग के सफर में प्रमुख परिवर्तन यह आया है कि इस मार्ग पर जाबली, ब्रूरी और कण्डाघाट स्टेशनों को समाप्त कर दिया गया है। अब इन स्टेशनों पर रेलगाड़ी नहीं रूकती है और न ही यहाँ रेलवे का कोई स्टाफ है। स्थानीय लोगों ने इसका विरोध भी किया, लेकिन रेलवे ने इस पर ध्यान नहीं दिया। किसान मोर्चा के अध्यक्ष शिव सिंह ने आरोप लगाते हुए कहा कि भारत सरकार इन स्टेशनों को बन्द कर इस मार्ग का शताब्दी समारोह मना सकती है। खनोग रेलवे स्टेशन के बाद केथलीघाट, शोघी, जतोग, समरहिल रेलवे स्टेशन पड़ते हैं। समरहिल में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय है। मार्ग में 103 सुरंगें थी जो अब 102 रह गई है। ब्रूरी और सलोगड़ा के बीच 45 नम्बर सुरंग अब अपने अस्तित्व में नहीं है। ब्रूरी में 44 नम्बर सुरंग के बाद सलोगड़ा के समीप 46 नम्बर सुरंग आती है। हलांकि अभी तक 103 संख्या सुरंग के नाम से पूरा क्षेत्र जाना जाता है। इसलिए इसे नहीं बदला गया। इस मार्ग का अंतिम स्टेशन शिमला है, जहाँ इस 96 किलोमीटर लम्बे रेल मार्ग की यात्रा खत्म हो जाती है।

।। पहाड़ी इंजीनियर भल्खु को न जाना तो कुछ न जाना।।

ताजीराते बघाट (हिन्दुस्तान)

कानून अनसदाद रसम रीत (उर्दू से हिन्दी अनुवाद) (जिला सोलन की पुरानी रियासत बघाट का पुनर्विवाह या रीत का दुर्लभ कानूनी दस्तावेज)

यह दस्तावेज मूल रूप से उर्दू में किन्हीं सज्जन से संस्था के वरिष्ठतम परामर्शदाता सदस्य श्री शिवसिंह चैहान जी को प्राप्त हुआ। उन्होंने इसे किसी कानून के विद्वान् से हिन्दी में बदलवाया। इसमें उर्दू भाषा के शब्दों द्वारा प्राचीन शास्त्रोक्त पुनर्विवाह या रीत का कानून विस्तार से दर्शाया गया है। इससे बघाट की प्राचीन सामाजिक परम्पराओं का ज्ञान भी साथ साथ मिलता है। अगली पीढ़ी के शोधकारों के लिए इससे पर्याप्त सामग्री मिलने की संभावना है।

शुभकामनाओं के साथ
कार्यकारी अध्यक्ष
ओम
कानून अनसदाद रसम रीत
रियासत बघाट
मरतबा हाए
राए साहब कंवर अमर सिंह मनेजर रियासत बघाट
जिला शिमला
सन् 1918 ई. में
गुलजार महमदी सलटीम प्रेस लाहोर में
बाहतमाम शेख गुलजार महमद प्रीन्टर छपा
ताज़ीराते-बघाट (हिन्दुस्तान)
(उर्दू से हिन्दी अनुवाद)
बघाटपति राजा दुर्गा सिंह
सोलन

कानून असदाद रसम रीत

बाद गदी नशीनी धन बाद श्री राजा दुर्गा सिंह साहब वालिए रियासत बघाट बमन्जूरी जनाब साहक डिप्टी कमीशनर बहादुर जिला शिमला बाह तमाम राए साहब कंवर सिंह मनेजर रियासत बघाट के जारी हुआ

तमहीद

देखा जाता है कि रियासत हजा में बतय रिवाज मरूजा इलाका को हिस्तानी मलहका जिला शिमला के ऐसे दस्तूर मासुमा ब रसम व रवाज के जिनका जिकर बालतशरीह कानून हजा में मंदरज है-जारी है-जोकि बाइस तबाही व बरबादी रया हैं-अंजा जुमला रिवाज ओरान का जर देकर लाना खवाह और ब्याहता हो या कंवारी खवाह बेवा हो जावे-चुंके ऐसा रवाज खलाफ एहकाम धर्मशास्त्र और खलाफ अदल व इन्साफ व नेक निती व खलाफ कानून गर्वमेंट अन्गेशा के है-माह अक्तूबर सन् 1907 में बर्गज बन्द होने रिवाज मजकूर रूपया देकर औरत लाना का पेशगाह जनाब साहब डिप्टी कमीशनर बहादुर जिला शिमला से एहकाम बनाम रियासत जारी हुए व तामील आं के बाद जनाब राजा दलीप सिंह साहब बहादुर सी.आई.ई. सुर्गवासी एहकाम बनाम जिमीदारान परगनात व नम्बरदारान दिहात के जारी हुए और मतवानर वकतन फवकतन बर्गज हसूल रया सदर, बशमूलियत चन्द लेक चरज व सनयासी व साधुओं के व रया व एहलकारान के होते रहे हैं जिसमें नुकसान खराब रवाज बगैरा का मतलकाम जामीन बरूय धर्मशास्त्र बयान किए जाते रहे हैं और बालाखरी रया से ये स्वाल किया गया के अगर वह रीत की औरत को अपनी जोजान जायज इकरार देते हैं-तो ऐसी रीत वाली औरत को बहालन बेवा हो जाने के किंयू इस्तकाक वरास्त मनाबक ब्याहता औरत नहीं देते हैं-और ओरान को भी ऐसे इस्तकाक वरास्त से बसूरन रीत पर जाने से महरूम अलोरसा हो जानेका खुद ख्याल करना चाहिए-और तमाम मस्रुरात बेवा को जो रीत की जोजान थी-और बहालत बेवा के वह बसूरत अदम मौजुदगी औलाद जकोद के महरूम अलोरसा वारसान बाजगरान लेकर दी हुई थी-इस बहेस पर गुन्जायश मिल जाने पर नतीजा यह हुआके तारीख 9-10 माह बसारव समत 1974 को बमकाम सोलन जिमीदारान व नम्बरदारान रियासत का जलसा जेर सदारत जनाब कंवर अमरसिंह साहब के मनकद हुआ-

बाबू बालकराम साहब अकाउंटेंट व लाला आत्माराम साहब हैडमास्टर व सरदार गुलाब सिंह साहब कानूनगो व लाला माधो नारायन साहब सब जज तहसीलदार साहब व मेहता सेहजराम साहब नाजर अदालत व नम्बरदारान व पटवारीयान रियासत बघाट व पंडत काशीराम जेलदार व पंडत किरपाराम सफेदपोश इलाका पटियाला वगैरा वगैरा शरीक जलसा थे-जिसमें रिवाज हाए ना जायज मरूजा के नकामस और उनके इनस्दादा के कवायद पर जुमला हाजरीन जलसा न ेमनलक अलराए होकर ये राए जाहर की-के हमको रवाज रीत बगैरा रसमों का जो खलाफ मजहब एहल हनूद के हैं-और बाइस बरबादी व तवाही हमारे के हैं-बन्द होना वसन्द है-और हम अपनी राए जाहर करदा पर अपने दस्तखत कर देते हैं-चुनांचे हाजरीन जलसा ने अपने अपने दस्तखत और नशानीया की दी-और बावत बनाए जाने एक कानून अनस्दाद रवाज हाए ना जायज के बहुत जोर दिया इसलिए ये अमरकरीन मसलहन हैं के बर्गज अनस्दाद रसम रीत के एक कानून महैया किया जावे-लिहाजा हस्ब जैल कानून मरतब हो कर हुक्म दिया जाता है-

दफा नं. 1–इस कानून का नाम अन्सदाद इसम रीत होगा-और बतारीख 23/7/17 तारीख और मज़कूरा से बाद तलाम आवादी रियासत हजा में नाफज होगा

दफा नं. 2– हर एक शख्स जो रियस्त हजा में 23/7/17 माह मजबूर को या इसके बाद फसल या तरक फहल का जो मुजरम होगा जो इस कानून के खिलाफ हो-वह इस कानून की रू से मस्तोजद सजा का हक होगा।

दफा नं. 3– औरत का बजरिया रीत के लाना बन्द किया जाता है-कोई शख्स किसी किस्म की रीत ना कर सकेगा-और ना किसी शख्स की शादी शुदा औरत किसी किस्म की रीत कर सकेगी और ना जीन्दा खावन्द की औरत किसी जगह रीत पर जाएगी और ना कोई मरद किसी औरत को जिसका खावन्द जीन्दा हो-अपनी जोजियत में ला सकेगा जो शख्स खलाफ करजी एहकाम मन्दरजा दफा हजा का मुर्जम होगा-इसको जेर दफान 497/498 व 366/363 व 494/476 ताजीरात हिन्द जेसके सूरत होगी सजा दी जाएगी-और वह शख्स सिने रीत पर औरत दलाने की कोशिश की होगी-बजरम अगनन मसुजब सजा भाबी होगा- जो कवायद एक्ट नं. 15 सन् 1886

दफा नं. 4–जिस लड़की की शादी अयाम नाबालगी में हो गई हो-और वह बेवा हो जावे-या के खावन्द उसका जजामी हो जावे या के प्रदेस से वापस ना आवे या के खार्ज अलमजहब हो जावे बगैरा बगैरा और उमर बेवा की हनूज बीस बरस से कम हो-ऐसी बेवा मजकूर को लाजम है-के अपनी जिन्दगी अपने हकदारान की शुभमियत में बसर करे-इसी तरह से गुजारा करे-के जहां तक हो सके-अगर कोई अमर मजबुरी का हायल हो जावे-तो इस सूरत में बेवा को लाज़म है के बजरीया पुनर विवाह के अपनी कौम में उस मर्द के साथ के जिस की उमर चालीस बरस से ऊपर ना हो गई हो-और वह मर्द बिना औरत के हो-तो बेवा वैसे मर्द के साथ पुनर विवाह कर सकेगी-और वारस का मआवजा संकल्प का एक महदूद हालत में और मिकदार में वाजब अलादा होगा-जिसकी तादाद एक सद रूपया से लेकर डेढ़ सद रूपया तक होगी-और बेवा मजकूर को सवाए काएदा मन्हुजा-अनुवान बाला के किसी दिगर जगह या के दिगर कौम में जाने का अख्त्यार ना होगा-देखो पराशर मन्त्र श्लोक (7)।

दफा नं. 5–जो यदि उमर दराज हो जाए चालीस साल से ऊपर मरद की तजावज कर जाने-और वह शादी का कुछ इन्तजाम न कर सका हो या के पहली औरत इसकी मोत हो गई हो - तो वह मर्द चालीस वरस से साठ बरस की उमर तक पुनह विवाह उन बेवा गाम से जो बलहाज उमर के भी मनासब हों-एक बेवा के साथ के निका जिकर दफा नम्बर 4 कानून हजा में किया गया हो-कर सकेगा-मास्वाए ए बी बेवा के दूसरी औरत को ना ला सकेगा।

दफा नं. 6–जो बेवा बखुशी खुद अपने हकदारान से इलाहदा गुजारा करना चाहे-उसको महज आठ पाथा की अराजी या हस्ब हैसीयत बराए गुजारा दी जाएगी-बशरते के बेवा नेक चलन हो-राजी की काश्त वगैरा मतलका हकदारान अन्जाम देंगे-मामला व कारबगार सरकारी हकदारान देवेन्गे-जैसा कि मन्शा कानून धर्मशास्त्र का है।

दफा नं. 7–अगर बेवा बखुशी खुद हकदारान की शमूल्यित में रहना पसन्द करे-और हकदारान का बेवा को नाजायज तकलीफ देना साबित हो जावे-तो अदालत को अखत्यार होगा-के बजरम नाजायज तकलीफ देने के सजा कानूनी देवे बरास्ते के बेवा नेक चलन हो।

दफा नं. 8–अब तक जिस कदर मस्तुरात रीत या के शादी की मौजूदा हैं-उनके इस्तहकाक खावन्द पर मसावी होंगे आयन्दा भी उनके हकूक में कोई कमी बेशी ना होगी-और ना कोई मरद बमोजदगी एक औरत के दूसरी शादी कर सकेगा-अगर उसी औरत से तीस बरस की उमर तक कोई औलाद पैदा ना हो-तरवी व अफजदनी औलाद दूसरी तीसरी औरत लाने से नहीं हो सकती-अगर औलाद पैदा ना होवे-तो ये करना चाहिए के जग बगैरा धर्म उपकार जैसा के पर्ताय-भागवत- हरीबंस-शिवपरान-संतान गोपाल-रूदर-बावड़ी बनाना-तुलसी की शादी-लड़कियों की शादी बगैरा करें-वाजद रहे-के औलाद की रूकावट अमूमन किसी पाप करम से होती है जिसका इलाज ज्यादह औरतों के

लाने से नहीं हो सकता है-बलके हमारे महापुरूषों और रखशीवरों ने इसका ईलाज मचजा सदर तजवीज किया है-जो के करना लाजम है-यह वेद का मत है-देखो पराशरी जोनश व पत्रशयी वगैरा

दफा नं. 9–अगर कोई ऐसी बेवा होवे-के जिसके लड़का मौजूद है-और आयन्दा औलाद होने की उमीद हों-और वह बेवा किसी जगह ना जा सकती हो और ना पुनर बयाह कर सकती हो-उसके लिए धर्मशास्त्र के मुताबक अपने देवर या कि जो बरादरी में उसके मतवफी खवन्द से जात में बराबर उमर में कम और रिश्ता में कम होवे-और उसकी औरत ना होवे-पुनर बयाह कर सकती है-देखो मनुस्मृति अध्य 9 श्लोक 59–60

दफा 10–ब्राह्मण या कनैत का आपस में शादी या के पुनर बयाह करना बन्द किया जाता है-ब्राह्मण व कनैत आपस में कोई अमल शादी व रीत का ना कर सकेगा-अमल मजकूरा खलाफ अहकाम धर्म शास्त्र के है-ब्राह्मण व कनैत की लड़की बालगा खवाह ना बालगा शादी शुदा हो खवाह बेवा हो-हर दो कौम को अपनी कौम से बाहर दूसरी कौम में किसी तरह देने का अखतयार हरगिज ना होगा-और ना मास्वास अपने देस पहाड़ के किसी दिगर जगह देने का अखतयार होगा-

दफा नं. 11–कोई मर्द ब्राह्मण या कनैत कौम का अपनी पोजा को बिला वजा मऊकूल के एक माह से ज्यादा अरसे तक मैके यानी बरवाना वालदेन ना रहने दे-एक माह बाद या बाल अपनी जोजा को खावन्द अपने घर ले आवे-अगर खावन्द अपनी जोजा को घर ना ले जावे या के मेके भेजने में लीत व लाल करें-तो अदालत को किसी दरखास्त पर अखत्यार होगा-के खावन्द को तलब करके मजबूर इस अमर पर करे के वह अपनी जोजा को घर ले जाए-यानी मस्तोरात के आबाद ना होने देने की हालत में कानून दीवानी बाजो दावा और खावन्द को घर ना लाने की हालत में दफा 488 जाबता फौजदारी की तामील में मजबूर होना पड़ेगा-

दफा नं. 12–अगर तीन माह के अन्दर खावन्द अपनी जोजा को अपने पर ना ले जाए-या के मेके लड़की के भेजने में इन्कार करें-तो तीसरे माह के पूरा होने पर नम्बरदार भोज फौरन इस मामला की रिपोर्ट अदालत को करे-अदालत को अखत्यार होगा-के खावन्द को तलब करके बाद तदारक जाब्ता के इन्तजाम आवादी करा देनें-जैसा कि दफा 11 में दर्ज हो चुका है-अगर नम्बरदार भोज रिपोर्ट का करेगा-तो नाजायज फअल लड़की से अमल में आएगा-इसका नम्बरदार भोज जिमेवार होगा-

दफा नं. 13–शादी लड़की की दस साल से कम उमर में ना की जाएगी-ऐसा ही लड़का जब तक पन्दरह बरस का ना होगा-इस मयाद मकररा से नीचे शादी लड़की या लड़के कोई शख्स ना कर सकेगा-अगर कबल अज वकत मकररा बाला के कोई शख्स खलाफ वर्जी करेगा तो अवल पुरोहित या के वह ब्राह्मण जो के कुन्डली हर दो की मलावे या के फर्जी कुन्डली बनाए और साबत हो जाए-या के उमर में कमी वेशी करे-तो उस सूरत में वह पुरोहित या के ब्राह्मण सजायादी सखत का मस्तोजब होगा-और शादी फौरन रोक दी जाएगी-ता बकते कोई इन्तजाम जिमेवारी मिन जानव वालदेन लड़का या लड़की से ना बालगी की शादी बगरज इनस्दाद नुकसान रसी काबल इतमीनान ना होवे-

दफा नं. 14–कोई औरत विला खावन्द के किसी मेला तमाशा मंे ना जावेगी-अगर जाए तो खावन्द या बसूरत रिश्तादार नजदीकी के हमरा जाय-और अहकाम को अखत्यार होगा के मेला वगैरा में मस्तुरात को मरद से इलाहदाह जगह में बढाएं कोई मरद देसी या परदेसी मस्तुरात की शमुलियत में ना बेठ सकेगा-खावन्द वाली मस्तुरात को आम मेला में जाना सजाहम होने को अन्देशा पेदा करेगा-इस वास्ते मेला की शमुलियत में मस्तुरात की कुछ मेहदूद होनी लाजम है-यानी महेज ऐसे मेले जो के मतबरक राम लीला रसम जनम अष्टमी-पदीमातरा के मेला कौरा तक महदूद किए जाएं-और ऐसे मेला में ये उमर मुन्तजम मेला को लाजम होगा-और एहकाम मन्जूरी प्रवेश रया के हुक्म जारी फरमाएंगे-के मस्तुरात व मर्द लोगों की नशत माह हर सूरत में अगर हो सके तो रास्ता आम्दो रफत मुखतलक कायम कर दिए जावें-और खावन्द या के वालदेन मस्तुरात को हर मस्तुरात की जिमेवारी खुद ले जावें और खुद वापस लावें-

दफा नं. 15–अगर कोई आला खानदान या हुकमरान से एहकाम मतलका सजाए जरायम की माफी चाहे-तो ऐसी माफी की दरखावस्त पर दफा 401 जाब्ता फौजदारी के मताबक अमल हो सकता है-

दफा नं. 16–एक कापी कानून हजा की जो तामील परासला साहब सुपरडेन्ट रियासत हाए कोहिस्तानी मोरावा 7/10/17 पास 1756 व 23/10/17 समन 1860 व रोबकार महकमा मौसूफ 24/6/9 सन 1334 व मोरबा 4/3/11 स 438 के बखिदेमत जनाब डिप्टी कमीशनर व सुपरडेन्ट रियासत हाए कोहिस्तान जिला शिमला बराय मलाहजा व मन्जूरी आसाल की जाए और गुजारिश की जावे के रियासत पटियाला की जो मलहक रियासत हजा है-बमुजब अपने सरकलर नं. 12 मोरवा 23 नवम्बर मस्तोदी रिवाज मजकूद कर चुकी है।

।। रीत का विवाह भी बघाट की एक कानूनी विरासत है।।

अस्तित्व के किनारे छोड़ रही पहाड़ी बोली

जब हिन्दुस्तान अंग्रेजी दासता के चंगुल में जकड़ा घुटी-घुटी सांसें ले रहा था, उस वक्त अंग्रजी शासन का मकसद न केवल हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तानियों को गुलाम बनाना था, बल्कि वे चाहते थे कि हिन्दुस्तान की भाषा व संस्कृति को समाप्त करके अपनी संस्कृति के रंग में रंग लें। वे अपने मकसद में कामयाब भी हुए। आजादी के बाद वे अपनी भाषा और संस्कृति के ऐसे कतरे हिन्द की धरती पर छोड़ गए कि आज तक हम रंग रहे हैं। आज हमारी भाषा रंगीन है। संस्कृति बोलती नहीं क्योंकि उसने पश्चिमी पोषाकें पहन ली है। हम जिसे विकास कह रहे हैं, यह पश्चिमी सभ्यता की कोरी नकल है। असल में हम भी सच्चे हैं क्योंकि हमारे लिए विकास के यही पैमाने रह गए है। कुछ लोग तो यहाँ तक मानते हैं कि जो लोग अंग्रेजी पढ़े-लिखे हैं, वे अन्य लोगों के मुकाबले 35 प्रतिशत अधिक आय कमाते है। यह तथ्य गहन शोध का विषय होना चाहिए। विश्व में दूसरे नम्बर की आबादी को समेटने वाला राष्ट्र यदि यह स्वीकार कर ले कि हम किसी दूसरे देश, जिसकी आबादी हमारी आबादी के मुकाबले आधी आबादी से भी कम है का अनुसरण करने लगे तो यह राष्ट्रभाषा व संस्कृति के लिए सबसे बड़ा खतरा है।

आज जिस कदर हमारी सोच पश्चिमी सभ्यता तथा संस्कृति की ओर झुकी हुई है, हमारे व्यवहार और रहन-सहन के हर तौर-तरीके अंग्रेजी संस्कृति की एक छाप बनकर रह गए हैं। फलस्वरूप हमारी शिक्षा के स्तर बदले है। हिन्दी शिक्षा स्तरहीन हो गई है। आज हमारी हर चीज अंग्रेजों की तरह हो गई है। हम बोलते अंग्रेजी है, लिखते अंग्रेजी है, पहनते अंग्रेजी है, हम अंग्रेजी जैसा व्यवहार करते हैं। हमें अंग्रेजों की तरह रहना पसंद करते हैं। यहाँ हर चीज ऊपरसे नीचे तक अंग्रेजी है। शिक्षा अंग्रेजी में, न्याय अंग्रेजी में, सरकारों के मसौदे बनते हैं वे भी अंग्रेजी में। दीक्षाएँ भी अंग्रेजी में, परीक्षाएँ भी अंग्रेजी में। समझ में यह नहीं आता कि हिन्दी फिर हैं कहाँ? कागजों से चिपकी, पुस्तकालायों की अलमारियों में छुप कर बैठी है हिन्दी। देहातियों की भाष हो गई है हिन्दी। हिन्दी क्या, हिन्दी से बदतर हो चला है उन भाषाओं का संसार जो क्षेत्र दर क्षेत्र अपना शब्दकोश बदलती है। पहाड़ों की भाषा पहाड़ी भी इसी श्रेणी में आती है।

हिमाचल प्रदेश के अन्दर पहाड़ों के बीच कितनी बोलियाँ अलग-अलग अन्दाज में स्वर और मात्राएँ बदलती है। परन्तु अभी तक किसी भी बोली को हम पहाड़ी एक अलग भाषा बनाने में नाकामयाब रहे हैं। हम जानते हैं कि इस प्रदेश की अपनी एक क्षेत्रीय भाषा है जैसे पंजाब की पंजाबी, हरियाणा की हरियाणवी, राजस्थानी की राजस्थानी, किन्तु हिमाचल प्रदेश की कोई ऐसी भाषा नहीं है जिसे क्षेत्रीय भाषा का दर्जा मिले। इस विषय पर कई बार प्रदेश में विचारकों की गोष्ठियाँ और बैठकें आयोजित हुई।

कई बार मसला सियासत के गलियारों से होकर गुजरा कि पहाड़ी बोली को सम्पूर्ण पहाड़ी भाषा का दर्जा मिले। कितने पहाड़ी विचारकों ने पहाड़ी भाषा के विकास के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगाया, प्रतिफल शून्य रहा। भाषा समाज को एक लड़ी में पिरोने के लिए सूत्रधार का काम करती है। बेशक हम हिन्दी को अपनी मातृ भाषा मानते हैं, परन्तु हमारी सामाजिक भाषा पहाड़ी भाषा यानि पहाड़ी क्षेत्रीय बोलियाँ हैं, जो हमारे सामाजिक ताने-बाने को अपनत्व का एहसास दिलाती है। हमारे पारिवारिक सम्बन्धों को गून्थने वाली भाषा अपनी क्षेत्रीय बोलियाँ हैं जो हमें पहाड़ी होने का एहसास दिलाती है। परन्तु आज ऐसा लगता है कि पहाड़ी भाषा तथा समग्र बोलियाँ जो पहाड़ी संस्कृति की पहचान है, आज अपने अस्तित्व के छोर छोड़ रही है। पहाड़ी भाषा को बोलने वालों को संख्या घटती जा रही है। पहाड़ी में लिखने वाले लेखकों की संख्या लगातार गिरती जा रही है। पहाड़ी आज बुजुर्गों की भाषा रह गई है। आज अधिकतर युवाओं की आबादी ऐसी है कि जो पहाड़ी भाषा न बोलना जानते हैं और न समझते हैं। परिवेश बदलने लगा है। स्कूलों की अलमारियों में बन्द, चीखता-चिल्लाता पहाड़ी साहित्य बदलती आबोहवा से परेशान होकर धूल चाटने को मजबूर है। इसकी ओर कोई देखने वाला नहीं है। न विद्यार्थी देखता है, न परीक्षार्थी देखता है। सरकार को तो यह समझ आता नहीं।

एक समय ऐसा था कि पहाड़ी भाषा के कवि तथा कथाकार गाँव-गाँव में मिल जाते थे। नेता लोग पहाड़ी भाषा का जादू दिखा कर लोगों को प्रभावित कर लेते थे। समाज में पहाड़ी बोली का अलग रूतबा था। गाँवों से शहरों तक पहाड़ी भाषा का काफी चलन था, परन्तु धीरे-धीरे समाज से पहाड़ी भाषा का चलन समाप्त होने लगा है। प्रदेश में अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों की संख्या दिन-रात बढ़ने से पहाड़ी बोलियाँ दबने लगी है।

यहाँ तक कि हिन्दी भाषा पर भी खतरा मण्डराने लगा है। यही कारण है कि सरकारी स्कूलों में साल-दर-साल छात्रों की संख्या लगातार घट रही है और आज उन स्कूलों की होड़ में सरकार को सभी सरकारी स्कूलों को अंग्रेजी माध्यम से करने पर मजबूर होना पड़ा। बेशक हमारे पश्चिमी संस्कृति की ओर बढ़ते कदम हमें

विकास का दिलासा दिलाते रहें, परन्तु हकीकत यह है कि हमें विकास की होड़ में अपनी संस्कृति और भाषा के पदचिन्ह धुंधले प्रतीत होते हैं।

।। हम बघाटी बोली नहीं बोलेंगे तो हमारे बच्चे कैसे सीखेंगे।।

वंशावली राजा बघाट दुर्गा सिंह

शजरानस्ब नामा मानी कुरसी नामा
राजा बघाट कौम राजपूत जात पंवर गोत्र कौन्डल

1. राणा हर्ष चन्दर
2. राणा बलबदर पाल
3. राणा बखश पाल
4. राणा अददी पाल
5. राणा कशन्दर पाल
6. राणा यकशत पाल
7. राणा बाशप पाल
8. राणा अंकार पाल
9. राणा भवानी पाल
10. राणा बहीचपोत्र पाल
11. राणा रनबीर पाल
12. राणा परीतम पाल
13. राणा सोहन पाल
14. राणा हरीकशी पाल
15. राणा महानन्द पाल
16. राणा इन्दर पाल
17. राणा धर्मदेव पाल
18. राणा सहदेव पाल
19. राणा गोबरधन पाल
20. राणा बलदेव पाल
21. राणा बृजवाहन पाल
22. राणा बसन्तदेव पाल
23. राणा देवधर्म पाल
24. राणा कृपाल पाल
25. राणा रामसरन पाल
26. राणा जगतजीत पाल
27. राणा गन्धहरप पाल
28. राणा अमृतबीन पाल
29. राणा विक्रमादत्त पाल
30. राणा सूरजसेन पाल
31. राणा चन्दरसेन पाल
32. राणा कंवल पाल
33. राणा केलाश रतन पाल
34. राणा सनेहरदेव पाल
35. राणा अदूईकरण पाल
36. राणा सुरलीकत पाल
37. राणा जयदेव पाल
38. राणा सरन्देव पाल
39. राणा अमृतदेव पाल
40. राणा सैहन पाल
41. राणा बसन्त पाल
42. राणा सोहन पाल
43. राणा अंगत पाल
44. राणा रवी पाल
45. राणा किवन्तर पाल
46. राणा सन्दा पाल
47. राणा दलीप पाल
48. राणा सची पाल
49. राणा नंग पाल
50. राणा रूप पाल
51. राणा हेम पाल
52. राणा अभी पाल
53. राणा धेरपी पाल
54. राणा बीर पाल
55. राणा बेन पाल
56. राणा जेन पाल
57. राणा हस्पत पाल
58. राणा सन्पत पाल
59. राणा रतन पाल
60. राणा ब्रहम पाल
61. राणा करत पाल
62. राणा जजी पाल
63. राणा चतरसेन पाल
64. राणा धर्म पाल
65. राणा सयामचन्द पाल
66. राणा नरायन पाल
67. राणा जमनीबाहन पाल
68. राणा करम पाल
69. राणा साजगेन्दर पाल
70. राणा फतेह पाल
71. राणा रूखनातेह पाल
72. राणा दलेल सिंह
73. राणा महिन्दर सिंह
74. राणा बही सिंह
75. राणा उमीद सिंह
76. राणा दलीप सिंह
77. राजा दुर्गा सिंह
   (10 सितम्बर 1885 ई.)

।। हमारी वंशावली हमको हमारे इतिहास से जोड़ती है।।

ब्रिटिश सर्वोच्च सत्ता की स्थापना में हिमाचल (1815–1948)

1815 में अंग्रेज-गोरखा युद्ध समाप्त हो गया। हिमाचल की पहाड़ी रियासतों को इस शर्त पर भविष्य में स्वतन्त्र रहने का अधिकार मिला कि वे भविष्य में गोरखों द्वारा होने वाले किसी भी हमले में अंग्रेजों को सहायता करेंगे। सभी राजाओं ने इस शर्त को मान लिया। डेविड़ अख्तरलोनी ने पलासी में एक सभा बुलाई जिसमें निर्णय किया गया कि गोरखों के आक्रमण से पूर्व किस पहाड़ी राजा के पास कौन-कौन से क्षेत्र थे ताकि उन्हें वे लौटाए जा सकें। इसके परिणामस्वरूप सिरमौर, बिलासपुर, हिण्डूर, जुब्बल, बघाट, क्योंथल, कोटखाई, बाघल और बुशैहर के राज्य उनके वास्तविक स्वामियों को सौंप दिए गए। इन राजाओं को सनदें प्रदान दी गई जिनके अनुसार उन्हें और उनकी संतानों को राज्य करने का अधिकार दिया गया। यह भी उचित समझा गया कि गोरखों के आने से ताकतवर और कमजोर राजाओं में जो आश्रयदाता और आश्रित का सम्बंध था वह समाप्त कर दिया जाए। विशेषकर उन स्थितियों में जहाँ यह सम्बंध सम्प्रभुता मानने तक ही सीमित था। परन्तु ऐसे रजबाड़ों की स्थिति में जिन्हें कि परिस्थितियों के दबाव में अधिक शक्तिशाली राजाओं का आश्रय लेना पड़ा था। वहाँ ऐसे बड़े राजाओं को सम्प्रभु स्वीकार किया गया। इस प्रकार कुमारसेन, बलसन, कुटलहर, थरोच, मांगल और धामी की ठाकुराइयों को अलग माना गया और सनदें प्रदान की गई। खनैटी और देलाथा की ठाकुराइयां बुशैहर के अधीन की गई। इन राज्यों को जो सनदें दी गई उनका कालक्रम निम्न प्रकार से है:-

बघाट	राणा मोहिन्दर सिंह	04 सितम्बर, 1815
कुठार	राणा भूप सिंह	03 सितम्बर, 1815
बाघल	राजा जगत सिंह	03 सितम्बर, 1815
महलोग	ठाकुर संसार चंद	04 सितम्बर, 1815
बेजा	ठाकुर मान सिंह	04 सितम्बर, 1815
मांगल	राणा बहादुर शाह	20 सितम्बर, 1815
कुनिहार	ठाकुर मगन देओ	07 दिसम्बर, 1815
नालागढ़	राजा रामशरण सिंह	20 सितम्बर, 1815

बघाट राज्य में अंग्रेजों ने दो बार हस्तक्षेप किया। राजा किशन सिंह की मृत्यु पर उत्तराधिकारी स्पष्ट नहीं था। अंग्रेज सरकार ने मीयां जय सिंह के पुत्र ध्यान सिंह के पक्ष में निर्णय दिया। दूसरी बार दमनकारी लगान मांगने और चरागाहों की कमी के कारण जनता में फैले असंतोष को देखकर 1902 में पहाड़ी राज्यों के अधीक्षक को इसमें हस्तक्षेप करना पड़ा। 1905 में फिर झगड़ा बढ़ा जिससे अधीक्षक को हस्तक्षेप करना पड़ा।

।। बघाट के राजा दुर्गासिंह की देश के अन्य राजाओं में एक अलग पहचान है।।

20 मई 1857 में शिमला सुनसान मुर्दों का शहर

12 मई 1857 को सर हैनरी बर्नार्ड का पुत्र जो कि अपने पिता का ए.डी.सी. भी था घोड़ा दौड़ाता हुआ शिमला पहुँच गया और उसने सेनापति एनसन को उत्तरी भारत में विद्रोह की सूचना दी। 13 मई की रात तक मेरठ और दिल्ली के हत्याकाण्ड की खबरें शिमला पहुँच गई। उस समय पहली और दूसरी फुसीलियर और गोरखा सेनाएं जिन्हें नासिरी बटालियन भी कहा जाता था अपने सेनापतियों के साथ पहाड़ी छावनियों में थी। सभी सिपाहियों को अम्बाला के रास्ते दिल्ली कूच की आज्ञा दी गई।

कसौली में रक्षकों की एक टुकड़ी थी। उनका मुख्यालय जतोग में था। कसौली के 80 रक्षकों ने विद्रोह कर दिया और बहुत सा सरकारी पैसा लूटकर अपने साथियों के साथ जतोग में आ मिले। जतोग में भी विद्रोह के आसार थे। जतोग में गोरखा रेजिमेंट के सूबेदार भीमसिंह के नेतृत्व में जतोग छावनी ओर खजाने पर कब्जा कर लिया गया था। इसी तरह 12 मई 1857 को 'हिन्दुस्तान तिब्बत रोड' के सुपरिटेंडेंट कैप्टन डेविड ब्रिगज़ को डगशाई और सपाटू की बटालियनों को अम्बाला भेजने के आदेश मिले, किन्तु सैनिक दस्ते अम्बाला नहीं पहुँचे। कसौली में भी नासीरी सेना ने जाने से इन्कार कर दिया। इतने में अफवाह फैल गई कि गोरखा सिपाही जतोग से शिमला शहर को लूटने आ रहे हैं। शिमला के डिप्टी कमिशनर विलियम ने मण्डी के राजा के चाचा रत्न सिंह के माध्यम से जो कि उस समय उनके साथ थे विद्रोहियों को संदेश भेजा कि वह अपनी सामर्थ्य के अनुसार उनकी सारी शिकायतें सुनने और उनके समाधान के लिए तैयार हैं। उसे अपने लक्ष्य में सफलता नहीं मिली। शिमला में यूरोपीय नागरिक आतंकित हो गए और घर-बार छोड़कर आस-पास की रियासतों और गाँव में शरण लेने के लिए भटकने लगे। अनेक अंग्रेजों ने क्योंथल के राजा के जुन्गा-निवास में शरण ली, कुछ कोटी और बलसन के ठाकुरों की शरण में गए। कसौली से विद्रोही सैनिक जतोग की ओर बुद्ध सिंह के नेतृत्व में चले थे। जब सेना ने उनका पीछा किया, मुठभेड़ में सिपाही मारे गए और बुद्ध सिंह ने अपने को गोली मार ली।

19 मई 1857 तक शिमला, जतोग, सपाटू, कसौली, डगशाई से सेनाए अम्बाला नहीं पहुँची तो कैप्टन ब्रिगज को अंग्रेजों की सुरक्षा का काम सौंपा गया। वह अम्बाला से 20 मई को शिमला पहुँचा।

जतोग विद्रोह की खबर से शिमला शहर में आतंक छाया था। लगभग 800 युरोपीय चर्च और शिमला बैंक (वर्तमान ग्रैंड होटल) में एकत्र हुए। शिमला बाजार में एक गोरखे ने अंग्रेज की हत्या कर दी। अन्य लोगों पर हमले की आशंका बढ़ी और उन्हें कसौली डगशाई की छावनियों में भेजा गया। कुछ भूखे-प्यासे जंगलों में भटकते रहे। डिप्टी कमिश्नर, शिमला, विलियम हेय ने दुख से लिखा, ''शिमला के अंग्रेज वासी कयोंथल, कोटी, धामी, मशोबरा और बलसन की देसी रियासतों की शरण में जा पहुँचे। .... मैं इन यूरोपीय लोगों को शिमला से हड़बड़ी में भाग-दौड़ को रोक न सका।'' 20 मई 1857 को शिमला सुनसान मुर्दों का शहर-सा बन गया।

24 मई 1857 को जतोग टुकड़ी के सूबेदार भीम सिंह ने समझाने-बुझाने पर विद्रोह स्थगित कर दिया। उसकी सारी मांगे मान ली गई। साधु, फकीरों का एक दल साधु-फकीरों के वेश में राम प्रसाद वैरागी के नेतृत्व में सपाटू से काम कर रहा था। वैरागी पकड़ा गया और उसे अम्बाला में फांसी पर चढ़ा दिया गया।

शिमला शहर की सुरक्षा की विशेष व्यवस्था की गई। 7 अगस्त को डिप्टी कमिश्नर ने रियासत कहलूर से पचास जवान बालूगंज में, साठ सिरमौरी सैनिक कुंवर वीर सिंह के नेतृत्व में बड़ा बजार में तैनात किए। डिप्टी कमिश्नर के आवास पर क्योंथल, धामी, भज्जी और कोटी के साठ सैनिक तैनात किए। अन्य रियासतों से 250 सैनिक आपातकाल के लिए रखे गए। 90 यूरोपियन सिपाही और 120 प्रशिक्षित वालेटियर भी रखे गए। ठाकुरों और राणाओं की सहायता से इस क्षेत्र में विद्रोह दबा दिया गया।

।। जब पहाड़ी वीरों ने अंग्रेजों से लोहे के चने चबवाए थे।।

''राच गोआ नानका''

नोआ जमाना आया बे लोको,
नोआ जमाना आया बे।
बखत आ गोआ जोरे खाणका,
केई राच गोआ प्यारा नानका,
नोआ जमाना आया बे............

त्योआरा रा चाव मुक गोआ,
प्रेम-भाव बी घटने लग रोआ,
सारे मच रोई आपा-दापी,
सभी खे आपणी-आपणी पाथी,
मड़ी मरवा गोए संगी साथी।।
नोआ जमाना आया बे............

नानी जी रे हाथ रा जाएका, बड़ा ई याद आओ,
शाकर गीऊआ सई अस्कलु, अब कुण पकाओ,
नानके रा रौणक मेला, बुजुर्गा सई चला गोआ,
सात्तू, पंजीरी, गीनडा रा, तो अब सुपना ओआ।
केई राचा से नानका यारो........

दिवाली माँए नी बुलदे, नानके रे खील-पटाशे रो खलौने,
पछमी संस्कृति पीछे दौड़दे, मारे त्यौआर ओ गोए बौने ।
वैलनटाईन, क्रीसमस मनावणे री, नवी पीढ़ी समझो शान,
बिशु, मागी, दयोठण, बुजड़ु, डगेली दे, से असो अंजान।
नोआ जमाना आया बे............

मठाईया बी अब नकली मिलो,
खाने रा चाव बी ओगोवा कम।
त्यौआरा माँए मठाई मिलो न मिलो
लोका के चँई ठड़ड़ा, विस्की रौ रम।

से बोलो...
ऐस मंगाई रे जमाने माँए
ऐ लालपरी मटाओ सारे गम
ऐ किशा जमाना आया लोको 2

नानके जाऐ रो खेला-खेला माँए, जो मिलो था ज्ञान,
नाना-नानी री से नसीयता, आज बन रोई बरदान ।।
व्टसऐप, फेसबुक वाले आज के छोटु इना सबी दे अंजान,
तिनाखे केईदे पता ओणा, किशे खाऊओ नानी रे कान।।

''कहीं हमारे बच्चों का बचपन तो नहीं खो गया....?''

''बघाट-एक चिन्तन''

बघाट या सोलन हमारी एक आदर्श विरासत है। यहाँ के राजा और प्रजा की अनमोल सोच ने यहाँ की जीवनोपयोगी परम्पराओं को जीवित रखा हैं। गोरखों के आक्रमण, अंग्रेजों के शोषण एवं वर्तमान में शहरीकरण, पाश्चात्य प्रभाव, व्यवसायीकरण और हमारी लापरवाही जैसे दबावों को झेलते हुए बघाट आज भी हमारे व्यवहार में जीवित है। इसका मूल कारण है-हमारा सादा जीवन और उच्च विचार। इसको दर्शाने के लिए निम्न संस्कृत श्लोक पर्याप्त होगा:-

तृणानि भूमिरूदकं वाक्चतुर्थी च सूनृता ।
चत्वार्येतानि सतां गेहे नोच्छिद्यन्ते कदाचन।।

अर्थात् - बेठणि खे पाटड़ा, बेठणि खे जगा, पिणि खे पाणि अरो सौणी बाता इनी चै चीजा रि कमि कसि बि बले आदमी रे गरे नी आंवदि मतलब सदा सबी खे उपलब्ध रौ।

आपणे पौणे रा आदर करना ही
हामा बघाटी रि सबी दे बड़ि दौलत असो।

!! जय बघाट जय हिमाचल !!

।। हमारी सांस्कृतिक मर्यादाएं हमारी मूल सम्पदा है।।

।। जीवन चलने का नाम ।।

सम्पादक परिचय

नाम डॉ. लेखराम शर्मा
जन्मतिथि 19-02-1950
शिक्षा दर्शनाचार्य, एम.ए. (सं. व हिं.)
पूर्व व्यवसाय प्राचार्य, रा.सं.म.वि. सोलन
वर्तमान कार्य पैतृक भूमि का संरक्षण और मानवता विकासपरक अध्ययन एवं लेखन
प्रकाशित पुस्तकें
1) संस्कृत साहित्य परिचायिका
2) सनातन कर्म प्रवेशिका
3) सुन्दर जीवन-मनोरंजक प्रेरणाएं
4) अपनी पहचान कैसे बनाएं
5) जय बघाटेश्वरी माँ शूलिनी
6) क्षेत्रपति बीजेश्वर महादेव
7) सोलन की सर्वहित साधना
8) देवभूमि सोलन
9) मौलिक व्यक्तित्व के प्रेरक सूत्र
10) श्री कृष्णाज्ञाभिवन्दनम् (संस्कृतकाव्यम्)

जीवनादर्श सहजं कर्म कौन्तेय अर्थात् अपना स्वभाव जन्य काम करना।
सदस्यता उपाध्यक्ष सोलन ब्राह्मण सभा, सदस्य अखिल भारतीय आयुर्वेद सेवा संघ तथा अन्य संस्थाएं।
वर्तमान पता गाँव धाला, डाकघर देवठी (सपरून), तह. व जिला सोलन (हि.प्र.) 173211
फोन 01792-243950, 9805017550 (मोबाईल)

निवेदन:--------------------------------------

पुस्तक को यथासम्भव सही एवं उपलब्ध संकलन करने का प्रयास किया गया है यदि फिर भी कोई त्रुटि रह गई हो तो उसमें कारित क्षति अथवा संताप के लिए लेखक, सम्पादक, संकलनकर्ता का कोई दायित्व नहीं होगा। सुझाव के लिए तत्पर ....

कुछ लेखक अनुमोदित साहित्यिक पुस्तकें-

1) **Love story of a Yogi- what Patanjali says**
2) **Kundalini demystified- what Premyogi vajra says**
3) **कुण्डलिनी विज्ञान- एक आध्यात्मिक मनोविज्ञान**
4) **The art of self publishing and website creation**
5) **स्वयंप्रकाशन व वैबसाईट निर्माण की कला**
6) **कुण्डलिनी रहस्योद्घाटित- प्रेमयोगी वज्र क्या कहता है**
7) **बहुतकनीकी जैविक खेती एवं वर्षाजल संग्रहण के मूलभूत आधारस्तम्भ- एक खुशहाल एवं विकासशील गाँव की कहानी, एक पर्यावरणप्रेमी योगी की जुबानी**
8) **ई-रीडर पर मेरी कुण्डलिनी वैबसाईट**
9) **My kundalini website on e-reader**
10) **शरीरविज्ञान दर्शन- एक आधुनिक कुण्डलिनी तंत्र (एक योगी की प्रेमकथा)**
11) **श्रीकृष्णाज्ञाभिनन्दनम**
12) **सोलन की सर्वहित साधना**
13) **योगोपनिषदों में राजयोग**
14) **क्षेत्रपति बीजेश्वर महादेव**
15) **देवभूमि सोलन**
16) **मौलिक व्यक्तित्व के प्रेरक सूत्र**
17) **बघाटेश्वरी माँ शूलिनी**
18) **म्हारा बघाट**
19) **भाव सुमन: एक आधुनिक काव्यसुधा सरस**
20) **Kundalini science~a spiritual psychology**

इन उपरोक्त पुस्तकों का वर्णन एमाजोन, ऑथर सेन्ट्रल, ऑथर पेज, प्रेमयोगी वज्र पर उपलब्ध है। इन पुस्तकों का वर्णन उनकी निजी वैबसाईट https://demystifyingkundalini.com/shop/ के वैबपेज "शॉप (लाईब्रेरी)" पर भी उपलब्ध है। साप्ताहिक रूप से नई पोस्ट (विशेषतः कुण्डलिनी से सम्बंधित) प्राप्त करने और नियमित संपर्क में बने रहने के लिए कृपया इस वैबसाईट, "https://demystifyingkundalini.com/" को निःशुल्क रूप में फोलो करें/इसकी सदस्यता लें।

सर्वत्रं शुभमस्तु